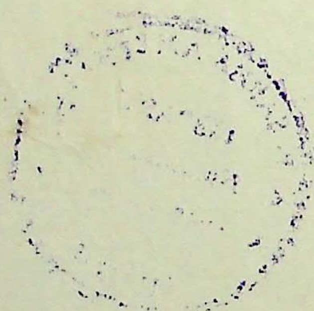
राष्ट्रीय-एकता में
कठपुतली नाटकों का योगदान

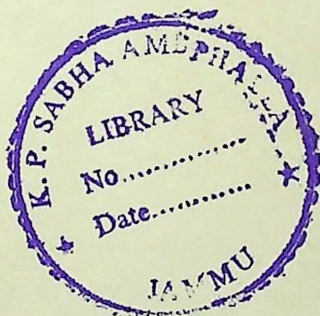






Sarla

Kitty





राष्ट्रीय एकता
में
कठपुतली नाटकों का योगदान

संयोजिका :
श्रीमती रक्षा सैनी

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

प्रथम संस्करण

नवम्बर 1970 कार्तिक शुक्ल 2026

द्वितीय संस्करण

मार्च 1976

प्रकाशन विभाग में श्री मती जे० अंजनी दयानंद सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्, राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान श्री अरविन्द मार्ग नई दिल्ली-110016 द्वारा प्रकाशित तथा भारत मुद्रणालय, शाहदरा दिल्ली-110032 में मुद्रित ।

प्राक्कथन

आज से लगभग ६ वर्ष पूर्व इस परिषद् की राष्ट्रीय एकता यूनिट द्वारा एक संगोष्ठी का आयोजन किथा गया था जिसमें दस लेखकों को आमंत्रित किया गया था। उसी संगोष्ठी में लगभग ग्यारह नाटकों का विकास किया गया था। अन्य नाटक संगृहीत हैं। बच्चों के भावात्मक स्तर के उन्नयन के लिए तथा देश की विविधतापूर्ण सांस्कृतिक धरोहर के प्रत्यक्षीकरण हेतु समय-समय पर उपयोगी पुस्तकों का प्रकाशन इस यूनिट का मुख्य कार्य है। प्रस्तुत पुस्तक इस यूनिट का सर्वप्रथम प्रकाशन था।

इस पुस्तक का यह द्वितीय संस्करण है। वास्तव में इस पुस्तक की नाट्य रचनाएं बच्चों को इतनी अच्छी लगीं कि उन्होंने इन्हें कठपुतली के माध्यम से मंच पर अनेकों बार अभिनीत किया। कुछ नाटकों का दूरदर्शन से भी प्रसारण किया गया। हमारे पास आए ढेरों पत्र इस बात के साक्षी हैं कि इन नाटकों को बच्चों ने बहुत सराहा है। इस पुस्तक की बेहद मांग पर ही हमें धनाभाव के बावजूद इसका द्वितीय संस्करण निकालने पर बाध्य होना पड़ा है। इस संस्करण को अधिक उपयोगी बनाने के लिए हमने इसमेंपुरानी रचनाओं के बदले दो नई नाट्य रचनाओं को शामिल किया है।

इस द्वितीय संस्करण को आपके हाथों में पहुंचाते हुए हमें बहुत प्रसन्नता हो रही है। मैं विशेष रूप से बच्चों से यह अपेक्षा करूंगा कि वे इन नाटकों को अपने अपने स्कूलों में मंच पर प्रस्तुत करें और इनके अन्दर निहित उदात्त भावों की खोज करें। इस सम्बन्ध में वे हमें अपने विचार लिख भेजें। उनके विचार जानकर हमें प्रसन्नता होगी।

मैं उन सभी लेखकों के प्रति आभार प्रकट करता हूं जिन्होंने इन नाटकों का सृजन कर हमारे प्रयास को सफल बनाया है। श्रीमती रक्षा सैनी इस पुस्तक को अंतिम रूप तक पहुंचाने में व्यक्तिगत रूप से सम्बद्ध रही हैं। मैं उनके परिश्रम, निष्ठा एवं लगन के लिए उनके प्रति विशेष रूप से आभार प्रकट करता हूं।

नई दिल्ली

१ मार्च, १९७६

दिलीपसिंह रावत

विभागाध्यक्ष

आत्म-निवेदन

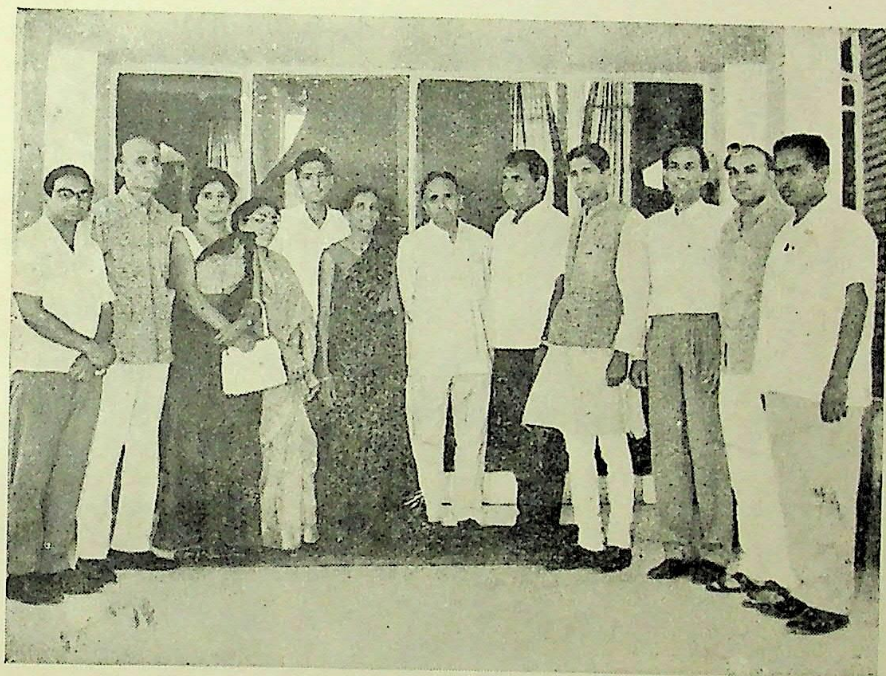
प्रस्तुत पुस्तक में १७ नाट्य-रचनाएं संगृहीत की गई हैं जिन्हें विज्ञ एवं अनुभवी लेखकों ने हमारे निमंत्रण पर पांच दिन की विभागीय संगोष्ठी में लिखा है। ये नाटक जो कठपुतली के माध्यम से अब तक आयोजित अंतर्राज्यीय शिविरों में बच्चों द्वारा मंच पर प्रदर्शित किए गए, और आगामी शिविरों में भी प्रदर्शित किए जाएंगे, सभी ११ से १६ वर्ष के बच्चों के लिए राष्ट्रीय भावात्मक एकता की विधा को लेकर लिखे गए हैं। किशोर आयु के विद्यार्थियों के अंतः करण में उदात्त भावों को प्रस्फुटित एवं उजागर करने के साथ ये नाटक उन्हें स्वदेश-प्रेम स्वाभिमान, कर्त्तव्य निष्ठा, आत्म-त्याग, परस्पर प्रेम, धर्म-भावना एवं सौहार्द्रता का अमृत-संदेश देंगे, ऐसा मैं विश्वास करती हूं।

पुस्तक के इस द्वितीय संस्करण के शीघ्र प्रकाशन में श्री दिलीपसिंह रावत विभागाध्यक्ष के योगदान के लिए मैं उनका विशेष रूप से आभार प्रकट करती हूं। श्री दिनेश थपलियाल को भी मैं धन्यवाद देना नहीं भूलूंगी जिनके सक्रिय सहयोग से ही यह द्वितीय संस्करण इतनी शीघ्रता से आपके हाथों में पहुंच पाया है।

मैं उन सभी लेखकों का आभार स्वीकार करती हूं जिन्होंने हमारी संगोष्ठी में भाग लिया और कठपुतली नाटकों का सृजन कर हमारे प्रयास को सफल बनाया है।

मैं उन लेखकों के प्रति भी कृतज्ञ हूँ जिन्होंने अपनी मूल रचनाओं को रूपांतरित कर लेने की स्वीकृति प्रदान की है।

१ मार्च, १९७६ रक्षा सैनी



संगोष्ठी में भाग लेने वाले सम्मानित लेखक

विषय सूचो

कठपुतली परम्परा : उद्भव और विकास

ये पुतली के खेल, गांव-नगर, ग़रीब-अमीर, राजदरबार या धार्मिक स्थलों पर समान रूप से प्रदर्शित होते थे और आज भी होते हैं। अन्तर केवल इतना ही है कि कठपुतली– नाट्य विशेषतया हाथ की कला होने के कारण अपने सामाजिक और सामुदायिक स्वरूप में कभी सामने नहीं आए। लेकिन पुतलियों के सैंकड़ों दल सारे देश में घूमते रहते थे। आज भी कठपुतलियों को मनुष्य की तरह स्टेज पर लाने की प्रथा प्रायः सभी देशों में पाई जाती है। गुड्डे की शादी भारतवर्ष में बच्चों का अपना विशेष खेल रहा है। इन्हीं खिलौनों द्वारा बच्चे नाना प्रकार की परिस्थितियों को नाटकीय रूप देकर अपना मन बहलाते हैं। इन सब आकृतियों में कठपुतली का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है तथा इनसे कठपुतली नाट्य का संकेत मिलता है।

पुतलियां पात्र हैं या नहीं :

यहाँ यह जानकर चलना पड़ेगा कि ये मूर्तियां नकल हैं या असल अथवा ज्यादा से ज्यादा वे असल की ओर संकेत करने वाली नकल हैं। अगर उन्हें असल की छाया उत्पन्न करने की जगह असल बना डालेंगे तो नक़ल के द्वारा असल की छाया उत्पन्न करने की जो सुविधा है उसको सदमा पहुँचेगा। यदि इन आकृतियों को असल का ही स्वरूप दे दें और भाव-भंगिमाओं को भी असल बना दें, कथोपकथन, अंग भंगिमाएं आदि भी वास्तविक बन जाएं तो फिर अलंकृति आदि द्वारा असल को प्रकट करने का निरर्थक प्रयास क्यों किया जाए। असल ही को मानव-नाट्य के रूप में प्रस्तुत क्यों न कर लें। कठपुतली कला का प्रादुर्भाव भी इसी नकल के रूप में मनोरंजन का उद्देश्य सामने रखकर हुआ है। इससे यही सिद्ध होता है कि नकल जब तक नकल बनी रहेगी तब तक वह मनोरंजक होगी। कठपुतली कला के मूल में यही रहस्य छिपा हुआ है।

कठपुतली नाटक की विशेषता :

सजीव मानवीय पात्र किसी पात्र के रूप में स्टेज पर आते हैं। वे कभी भी स्टेज पर अपने असली रूप में नहीं होते। वे अपनी भाव कुशलता से दर्शकों पर असली होने का भ्रम पैदा करते हैं। यहाँ तक कि कभी-कभी

दर्शकगण या तो आनन्द विभोर हो जाते हैं या रो उठते हैं। लेकिन ये सब अभिव्यक्ति का भ्रम है क्योंकि वे असली होते हुए भी असली नहीं हैं। कठपुतलियां ठीक इसका उल्टा व्यवहार करती हैं। वे ऊपर-नीचे, दाएँ-बाएँ हर परिस्थिति में असल हैं। अगर कोई कठपुतली एक बूढ़ी औरत का पार्ट अदा करती है तो वह पार्ट अदा करने के बाद दूसरा व्यक्ति नहीं बन जाती। वह तो सदा बूढ़ी औरत ही रहती है। इसलिए कठपुतली नाट्य का अभिनय करने वाली कठपुतलियां वास्तविक हैं जबकि मानवी रंगमंच पर काम करने वाले सभी पात्र झूठे और नकल हैं। पुतलियों की काल्पनिक अवस्था ही सब से बड़ा रहस्य है।

कठपुतलियों के प्रदर्शन से अनेक कार्य किये जा सकते हैं :

1. मनोरंजन
2. शिक्षा
3. आत्म-प्रदर्शन
4. सामाजिक कार्य

कठपुतली के तमाशे से शिक्षा :

दर्शक कठपुतली के तमाशे की बातों को सुनाते हैं। अभिनीत कहानियों के शब्द बच्चों के कानों में गूंजते हैं। बच्चे उन्हें स्मरण कर लेते हैं और उनसे ज्ञान और शिक्षा प्राप्त कर लेते हैं। कठपुतली का तमाशा करने के काम में एक प चचा श्रव्य— दृश्य-साधन [ओडियो विजुअल एड] बन जाता है। इस वैज्ञानिक युग में शिक्षक अनेक वैज्ञानिक विषयों को साधारण जनता तक पहुंचाने के लिए भी कठपुतलियों के तमाशे को काम में ला सकते हैं।

राष्ट्रीय एकता, स्वास्थ्य, कृषि, साक्षरता, प्रौढ़-शिक्षा, सफाई आदि से सम्बन्ध रखने वाले विषय को बड़े प्रभावशाली ढंग से कठपुतली के तमाशे के रूप में नाटकों द्वारा समझाते हैं। ऐसी कोई भी बात नहीं है जिसकी शिक्षा कठपुतली नाम के आश्चर्यजनक जीव द्वारा न दी जा सकती हो। कठपुतलियां तो नाचती गाती हैं और तरह तरह के तमाशे दिखाती हैं किन्तु हमेशा उनका उद्देश्य सामाजिक परिवर्तन उपस्थित करना होता है।

कठपुतलियां रंगमच पर जब नाचती हैं तो रंगमंच पर घूमते समय पीछे की ओर देखती हुई भूतकाल पर नज़र रखती हैं और सामने देखती हुई आगे आने वाले भविष्य की ओर नज़र रखती हैं। परिणाम क्या होता है कि दर्शक आते तो मनोरंजन के लिए है परन्तु कठपुतली के तमाशे को देखने के बाद वे एक नया विचार लेकर जाते हैं।

कठपुतलियों की किस्में:

कठपुतलियां कई प्रकार की होती हैं। विशेषतया चार प्रकार की पुतलियां होती हैं। पुतलियां चुनने के समय कई बातों का ध्यान रखना पड़ता है। पहली बात तो यह है कि वह स्थान जिस में काम करना है वहां कठपुतलियों को बनाने के लिए काम आने वाले सामान आसानी से उपलब्ध हों। दूसरी बात यह है कि वह उद्देश्य स्पष्ट हो जिस को लेकर कठपुतलियों का तमाशा दिखाना है। तीसरी बात वह परिस्थिति है जिसमें काम करना पड़ता है।

हथ कठपुतली या दस्ताना कठपुतली :

यह बनाने में सबसे सरल होती है। इस तरह की कठपुतली हाथ में पहनी जाती हैं। कठपुतली का सिर खोखला होता है और तमाशा दिखाने वाले या वाली की पहली उंगली पर जम कर ठीक बैठ जाता है। कठपुतली के हाथ भी खोखले होते हैं और तमाशा दिखाने वाले के अंगूठे और बाकी बीच वाली उंगली पर ठीक बैठ जाते हैं। तमाशा दिखाने वाला पुतली के कन्धों पर जिस पोशाक को सजा देता है वह पोशाक ही कठपुतली के शरीर का काम देती है। पुतली की टांगे नहीं होती। एक ही आदमी दो पुतलियों को एक बार नचा सकता है—एक उसके दायें हाथ पर और दूसरी बाएं हाथ पर। जिस पुतली के बारे में बात की जाती है उसी को चलाते रहना पड़ता है। इस तरह जब एक पुतली चलती रहती है तब दूसरी पुतली एक जगह खड़ी रखी जाती है। तमाशा दिखाने वाला जब एक पुतली की बात कहे तब गले की आवाज एक तरीके से निकाले और जब दूसरी कठपुतली की बात करने लगे तब आवाज ज़रा बदल कर।

धागे वाली कठपुतली या मेरियोनेट :

धागे वाली कठपुतली का बदन और हाथ पैर व सिर आदि जोड़कर बनाए जाते हैं। काठ, तार, डोरी और कपड़े से यह कठपुतलियां बनाई जाती हैं। कपड़े में कागज, लकड़ी का बुरादा या कपड़े के टुकड़े ठूंस कर भर दिये जाते हैं। कठपुतलियों को डोरी से साधते हैं। यह डोरियां पुतली के हाथ पैर आदि अंगों से बांधी जाती हैं। तमाशा दिखाने वाले के हाथों में इनका नियन्त्रण रहता है। जो लकड़ी का बना होता है। उस नियन्त्रण को हिलाने और डोरियों को खींचने या ढीली करने से कठपुतली में गति आती है। इन सब के लिए अभ्यास की अति आवश्यकता पड़ती है।

छायादार पुतली :

यह पुतलियां एक चौड़े आकार में काट कर बनाई जातीं हैं। प्लास्टिक या टीन की भिन्न-भिन्न प्रकार की शक्लें काट कर लोहे की छड़ों के सहारे सिधाया जाता है। स्टेज पर एक सफेद कपड़े को तान कर बांध दिया जाता है और पीछे से जोरदार रोशनी डाल कर छाया पैदा की जाती है। उसी के साथ-साथ सटा कर पुतलियों को नचाया चाता हैं।

रॉड या छड़ीदार कठपुतलियाँ :

ये पुतलियां कपड़े या कागजों से बनाईं जाती हैं। कागज की शक्लें बनाकर छड़ी के ऊपर गोंद अथवा कील से चिपका देते हैं। ये पुतलियां बनाने में सीधी और चलाने में सरल होती है। बच्चे हाथों में इस तरह की पुतली का संचालन शीघ्रता से करते हैं और आसानी से सीख लेते हैं। यह पुतलियाँ भी छायादार पुतलियों की तरह संचालित होती हैं। स्टेज के संचालक को खुद पीछे रहना पड़ता है। वह संचालन भी करता है और वार्तालाप करता जाता है। बहुत से बच्चे एक साथ एक कहानी या अभिनय करते हैं। इस प्रकार खेल ही खेल में एक शिक्षा-प्रद कहानी जो सीधा एक विषय से सम्बन्ध रखती हो, कहते जाते हैं और मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा प्रधान भी होता जाता है। इस प्रकार की पुतलियाँ बनाने में कुछ खास विशेषताएं हैं—

1. बच्चा खुद कठपुतली को बनाता है और वह खुद ही संचालन करता है।

2. अध्यापक या लीडर मार्गदर्शन करता है निर्देशन नहीं ताकि बच्चा कहानी कहते समय खुद ही वार्तालाप कर सके और अपने स्वाभाविक व प्राकृतिक गुणों का प्रदर्शन कर सके।

अत: कठपुतलियों के दो प्रमुख पक्ष हमारे सामने हैं। एक तो उन का प्रदर्शन पक्ष—जिससे बच्चों को उनकी आयु के अनुसार मनोरंजन तथा शिक्षा प्राप्त होती है दूसरा वह पक्ष जिससे बच्चों को स्वयं कठपुतली संचालन का ज्ञान होता है तथा शिक्षा मनोविज्ञान के अनुसार उन्हीं के द्वारा कठपुतली-नाटक खेले जाते हैं। इस प्रकार शिक्षा का माध्यम बनाकर कठपुतली कला को शैक्षणिक रूप दे सकते हैं। यदि यह हो जाता है तो कठपुतली कला दिन-रात उन्नति कर सकती है।

रचनात्मक ड्रामा के लाभ :

1. रचनात्मक ड्रामा से आत्म-विश्वास की अभिव्यक्ति होती है।
2. सामाजिक ज्ञान व राष्ट्रीय सम्बन्ध स्थापित होता है। भावना का स्थायित्व होता है।
3. रचनात्मक खेल जीवन के साथ सम्बन्ध स्थापित करके जीवन के आन्तरिक मूल्यों का दर्शन कराता है।

रचनात्मक और साधारण ड्रामा में अन्तर :

साधारण ड्रामा :

1. साधारण ड्रामा में जैसे ही ड्रामा खेलने का निर्णय होता है यह तय हो जाता है कि ड्रामा को जन समुदाय के सम्मुख पेश किया जाय।
2. एक कहानी चुन ली और पुतलियां बाद में बनाई जाती हैं।
3. कथात्मक निर्णय होने के बाद पात्रों का वितरण होता है और अच्छे-अच्छे बच्चे जिनकी सुरीली आवाज़ हो, जो अच्छा बोल सकते हैं, ड्रामा खेलने के लिये चुन लिए जाते हैं।
4. ये बच्चे स्वयं रचना नहीं करते, केवल किसी गीत या नाटक से लेखक की भावनाओं को प्रदर्शित करते हैं।

रचनात्मक ड्रामा :

1. कठपुतली नाटक खेलने का निर्णय कर लिया जाता है लेकिन इस बात का निश्चय नहीं होता कि खेल जनसमुदाय के सम्मुख होगा।
2. बच्चे खुद ही पुतलियां बनाते हैं और उनका संचालन करते हैं। भिन्न-भिन्न पात्रों द्वारा पुतली के मुख से रचनात्मक खेल खेलते हैं। जो पुतलियां पहले बनाई गई है उनमें से ही कहानी बना ली जाती है। वार्तालाप और कार्य बच्चों के अपने होते हैं और बारी-बारी से ग्रुप के सभी बच्चे उस खेल को खेलते हैं।

रचनात्मक ड्रामा किस तरह से खेला जाता है :

ये ड्रामा जिस में बच्चा ही मुख्य पात्र है और उसका अपना व्यक्तित्व ही उस ड्रामा का मुख्य अंग है। ऐसे ड्रामों को हम व्यक्तिगत रचनात्मक ड्रामा कहते हैं। जिस ड्रामा में बच्चे अपने हाथ में एक लक्ष्य रखते हैं, चाहे वह पुतली हो या खिलौना या कोई और वस्तु उसे हम क्रियात्मक ड्रामा कहते हैं।

रचनात्मक ड्रामा में बच्चे अपनी भाषा में ही अपनी कहानी को व्यक्त करते हैं।

ड्रामा खेलने के चार नियम :

1. कठपुतली बनाना।
2 ड्रामों को स्टेज पर खेलना।
3. कहानी या कथा का निर्णय करना।
4. कठपुतली नाटक को पेश करना।

ये सब बातें साधारण ड्रामें की तरह ही हैं और अध्यापक या निरीक्षक को इन बातों का पूर्णतया ध्यान रहता है।

रचनात्मक ड्रामा की सामग्री :

रचनात्मक ड्रामा, इसमें बच्चा केवल अपना हाव-भाव का प्रदर्शन करता है। भिन्न-भिन्न अंगों को हिलाने-डुलाने से भिन्न-भिन्न तरह के चरित्रों का निर्माण करते हुए अपनी ध्वनियां निकालता है जो जानवर पक्षी, मनुष्य, असुर या देवता आदि के प्रतीक हैं।

रचनात्मक ड्रामा का मुख्य अभिप्राय यह भी है कि बच्चे अपने-अपने भावों का प्रदर्शन कर सकें न कि भावना का दमन। जब तक हम बच्चे के आन्तरिक गुणों का ध्यान नहीं रखेंगे और जब तक बच्चों को स्कूल में, घर में, समाज में या विश्व में ऐसे मौके न देंगे कि वे एकत्र होकर रहें, खेलें काम करें और हँसे तब तक राष्ट्रीय एकता और अन्तर्राष्ट्रीयता समझने की सम्भावना स्वप्न ही बनी रहेगी। हाथ में कठपुतली लेकर बच्चा भावोद्गार व्यक्त करता है। इस उम्र के लिए हम केवल हाथ दस्ताने की कठपुतली को ही सर्वप्रथम स्थान प्रदान करते हैं क्योंकि इसका संचालन शीघ्रताशीघ्र ही सीखा या सिखाया जा सकता है।

अगले पृष्ठों में १७ शिक्षाप्रद कठपुतली नाटक दिये गये हैं जो बच्चों के लिए लाभकारी सिद्ध होंगे। इन नाटकों को बच्चे स्वयं खेल सकेंगे। इन नाटकों में बच्चे समूह में भाग लेकर अपने भाव प्रदर्शन कर सकते हैं क्योंकि खेल ही खेल में इस रचनात्मक कार्यक्रम में बच्चे भावानुभाव का संचार करते हैं कि चरित्र निर्माण द्वारा पुतलियों का संचालन करते हुए कहानी की कथात्मक पुतलियों के मुख द्वारा प्रकट कर सकेंगे। इन नाटकों में कथानक राष्ट्रीय एकता की भावनाओं पर आधारित है और बच्चों में इसी भावना की जाग्रति की ओर प्रयास है।

————

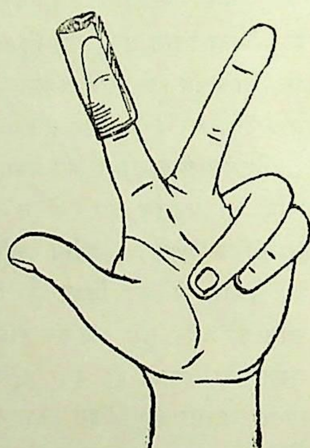
हथ-कठपुतली कैसे बनायी जाती है ?

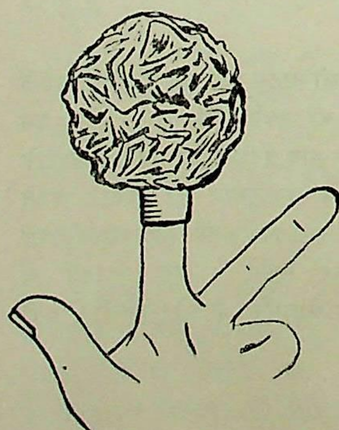
कठपुतली बनाने के लिये सामग्री :

गत्ता, गोंद, अखबार, पेंट, सुई-धागा, रंगीन कपड़ा, छड़ी, कैंची आदि।

विधि :

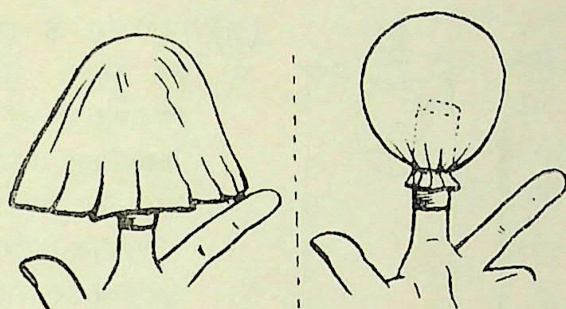
(१) अपनी पहली अंगुली के ऊपर गत्ते को ऐसा लपेटो कि उससे एक नली बन जाय। नली अंगुलियों पर ठीक चढ़ जानी चाहिए। इस नली को डोरी से बांध कर मज़बूती के साथ लेई से जोड़ दें। यह नली कठपुतली की गर्दन का काम देगी।





(२) अखबार को हाथ में लेकर, समेटकर कुचल डालो। इस से सिर तैयार होगा। अब इस कुचले हुए कागज़ को लेकर अपनी अंगुली के ऊपर लगी हुए ट्यूब के सिरे पर और सिरे के चारों तरफ दवाकर लगा दो। उसे ऐसा दबाओ कि सर की शक्ल बन जाए।

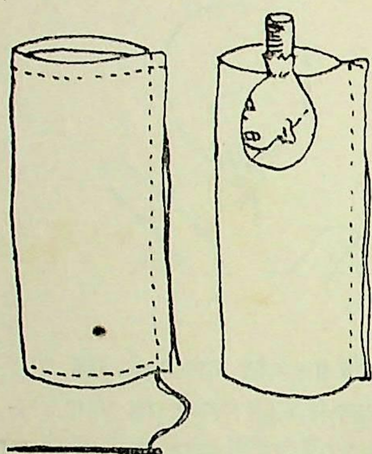
कठपुतली कला—प्रदर्शन



(३) अब अखबार के दबाए हुए गोले पर सादे कागज़ को मढ़ दो। कागज़ पर ज़रा-सी भी सिकुड़न न रहने पाए। यह भाग एकदम साफ और चिकना हो पर उसके दूसरी ओर जहाँ बालों को रखना हो वहां खूब सिकुड़न रहने दो। बोरी के एक टुकड़े को लेकर मढ़े हुए कागज को गर्दन के साथ कस कर बाँध दो। यह ध्यान रहे कि गर्दन वाले ट्यूब का सूराख ज़रा भी न सिकुड़े, और न बन्द होने पाए।

(४) बिना सिकुड़न वाले भाग पर रंग कर चेहरे को बनाओ। चेहरे के सभी भागों को पूरी तरह से बनाने की कोशिश मत करो। केवल ख़ास-ख़ास भागों के कुछ ही हिस्सों को अच्छी तरह बना देने से बहुत ज्यादा प्रभाव पड़ता है। जैसे बड़ी बड़ी काली आँखें जिनके बीच में एक सफेद बिन्दी हो, लम्बी, घनी भौंहें, कुछ बरोनियों के बाल और एक चौड़ा लाल रंग का मुंह।

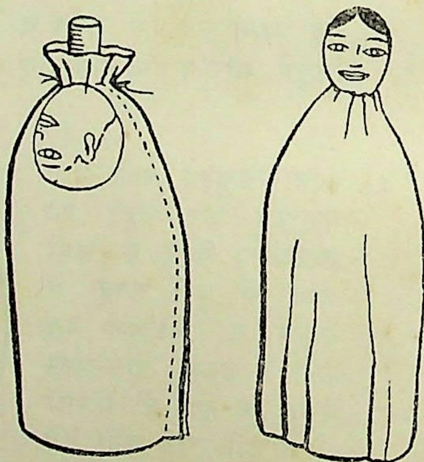




(५) गहरे रंग के कपड़े का एक टुकड़ा लो। उसे इस तरह से सी लो कि जिससे एक लम्बी नली बन जाए। वह इतनी बड़ी हो कि उससे कुहनी तक हाथ ढक जाय।

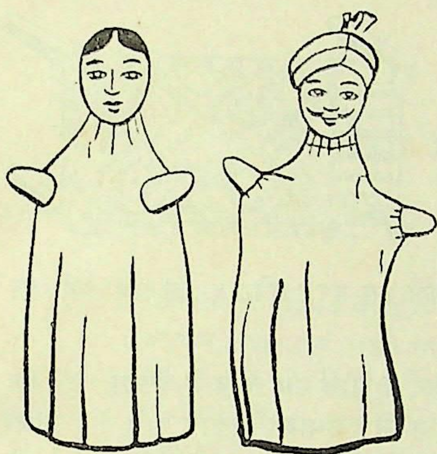
(६) सर को उल्टा करके इस कपड़े की नली के अन्दर इस तरह रखो कि पिछला हिस्सा सीवन की ओर पड़े।

(७) डोरी के दूसरे टुकड़े से नली की गर्दन कस कर बाँधो और तीन गाठें लगा दो। यह ध्यान रहे कि गले वाली नली का अन्दर वाला छेद बन्द न हो पाए।



(८) कपड़े को उलट कर इस तरह सीधा करो कि सर ऊपर निकल आए।

(९) कठपुतली को अपने हाथ पर चढ़ा लो। अपनी पहली अंगुली कठपुतली की गर्दन में डाल दो और उसकी पोशाक को अपने हाथ पर गिर कर फैल जाने दो। अब कठपुतली के कपड़े में दो छेद इस तरह कर दो कि तुम्हारा अंगूठा और बीच वाली अंगुली के सिरे थोड़े-थोड़े बाहर निकल आएँ।



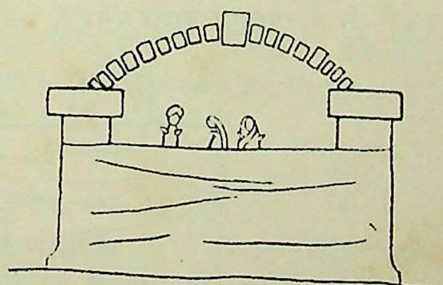
(१०) अब कठपुतली के मूंछें, दाढ़ी लगा दो । आदमी के सर पर पगड़ी या टोपी पहना दो । स्त्री को साड़ी पहना दो ।

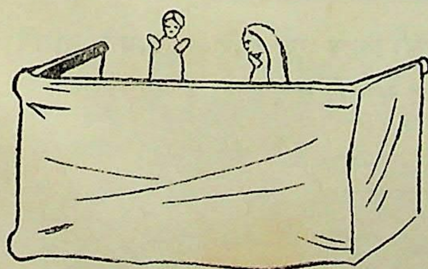
(११) कठपुतली का नाम रख दो ।

(१२) शीशे के सामने कठपुतली को चलाने फिराने का अभ्यास करो और तब तक चालू रखो कि जब तक कठपुतली इस तरह न चलने लगे जैसे वह सजीव है और अपने आप चल फिर रही है ।

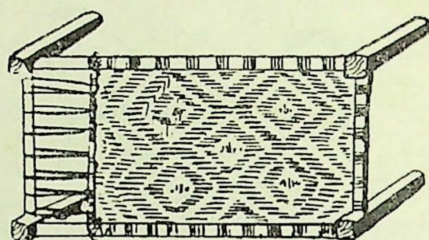
कठपुतली के लिये रंगमंच

(अ) दो खम्भे गाड़ लो । उनके बीच में एक साड़ी या कपड़े की चादर को तानकर लगा दो ।





(आ) दो कुर्सियों को एक दूसरे से कुछ हटा कर आमने सामने रखो । उनके बीच एक साड़ी या कपड़े के टुकड़े को तान कर लगा दो । कुर्सियों की सीटों पर खेल दिखलाते समय ज़रूरी चीज़ों को भी रखा जा सकता है ।



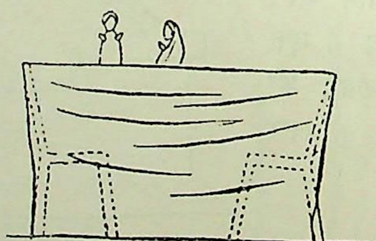
(इ) एक चारपाई का रंगमंच :—

(१) चारपाई को खड़ी करलो। उसके पाए अपनी तरफ रखो।

(२) चारपाई पर चादर, कम्बल, या कपड़े के टुकड़े इस तरह लपेट दो कि वह पर्दे का काम दे।

(३) तमाशा दिखाने वाला पर्दे के पीछे इस तरह से बैठता है कि सामने से उसे देख नहीं सकते। तमाशा दिखाने वाले के हाथों पर कठपुतलियां रहती हैं जिन्हें वह ऊपर उठा कर दर्शकों के सामने लाता है। तमाशा दिखाने वाले को इस तरह छिपे रहना चाहिए कि दर्शक उसे बिल्कुल न देख सकें। यदि चारपाई काफी ऊँची न हो तो उसके नीचे दो तीन ईंट रख कर उसे ऊँचा कर लेना चाहिए।

(ई) दो चारपाइयों वाला रंगमंच :—



दो चारपाइयों को ऐसा रखो कि वे एक दूसरे के आमने सामने पड़ें। उन्हें दो साड़ियों या चादरों से ढक दो।

———

भेद का भूत

[जिस समय रंग-मंच से पर्दा उठता है उस समय विद्यालय के जलपान अवकाश की घण्टी टनटना रही होती है। कुछ छात्र रंग मंच के एक छोर से दूसरे छोर की ओर निकल जाते हैं। रामू और बशीर दो छात्र आते हैं। दोनों ठहर कर परस्पर वार्तालाप करते हैं।]

बशीर : कल तू स्कूल नहीं आया रामू ?

रामू : हाँ, मैं कल स्कूल नहीं आ सका था। क्यों ? क्या बात हो गई ?

बशीर : बड़ा मज़ा आया।

रामू : क्या मिल गया था ?

बशीर : मिला तो कुछ नहीं, परन्तु मास्टर जी ने रमेश को बेंच पर खड़ा करके उसके दोनों हाथ ऊपर कर दिए।

रामू : फिर इसमें मज़े की क्या बात हुई ?

बशीर : तू नहीं जानता ?

रामू : भई पहेलियाँ मत बुझा, खोल कर बता ?

बशीर : उसने देवा को चमार कहकर गाली दी थी। मास्टर जी ने उसको गाली देते हुए स्वयं सुन लिया। बस फिर क्या था.........? सारी जमायत के सामने हाथ जोड़कर माफी मंगवाई उस से।

रामू : फिर इसमें तुझे क्या मज़ा आया ?

बशीर : उसने एक दिन गली में मुझे भी मुसल्ला कहा था।

रामू : फिर तो भई उसे ठीक ही दण्ड मिला है। किसी की जाति बखानना अच्छा नहीं।

बशीर : और मास्टर जी ने सारी जमायत को इकट्ठा करके

कहा—किसी की जाति का नाम लेकर गाली देना असभ्यता और मूर्खता का चिन्ह है।

रामू : (बशीर के हाथ के डब्बे को देखकर) आओ हम दोनों बैठ कर साथ ही खाना खाएंगे। (अपना डिब्बा दिखा-कर) यह देख, मैं भी पराँठे लाया हूँ। क्यों भई बशीर ! आज हम परस्पर बदल कर खाना खाएं तो बड़ा आनन्द आए।

बशीर : पर मेरी तो रोटियाँ हैं। साथ में सब्ज़ी नहीं है।

रामू : फिर क्या हुआ। मैं आज तुम्हारी ही रोटियाँ खाऊँगा।

[दोनों अपने-अपने डब्बों से निकाल कर रोटियाँ और पराँठे बदल लेते हैं और खाते हैं]।

रामू : (रोटियाँ खाते हुए) बड़ी स्वादिष्ट रोटियाँ हैं। मैं एक दिन तुम्हारे घर चल कर अवश्य गर्मागर्म रोटियाँ खाऊँगा।

बशीर : जरूर चल कर खाना।

रामू : अरे ! मैं तो भूल ही गया था। कल शाम तू मेरे घर अवश्य आना। कल मेरा जन्म दिन है। बाजे बजेंगे, मिठाइयाँ मिलेंगी, मेरे कई अन्य मित्र भी मिलेंगे।

बशीर : तब फिर मैं अवश्य आऊँगा।

रामू : (उठते उठते) भूल मत जाना कहीं।

बशीर : नहीं, नहीं, भूलूंगा कैसे ?

[घण्टी बजती है। सभी बालक मंच के दूसरे छोर से पहले छोर की ओर जाते दिखाई पड़ते हैं]।

(दूसरा दृश्य)

स्थान : रामू का घर

समय : शाम

(रामू और उसकी माता)

माता : लो बेटा। ये अपने नये कपड़े रख लो। कल पहनने हैं।

रामू : माँ कल मेरा एक नया मित्र भी आएगा। उसका घर

दूर है। उसके लिये गाड़ी भेजनी होगी।

माता : तो तू गाड़ी में उसे स्वयं ही ले आना।

रामू : माँ हम दोनों विद्यालय में एक ही श्रेणी में पढ़ते हैं; एक ही सीट पर बैठते हैं।

माता : अच्छा तो उसका घर कहाँ है ?

रामू : उसका घर जुम्मनपुरा में है माँ ! उसके पिता मौलवी हैं। मैं उसके घर कई बार गया हूँ। वे मुझे बड़ा प्यार करते हैं।

माता : (झटके के साथ) ऐं ! मौलवी ! तो वह मुसलमान है ! और तू उसके घर भी हो आया है।

रामू : हाँ माँ। बशीर मुसलमान है। हम दोनों एक साथ ही बैठ कर खाना खाते हैं और कभी-कभी खाना आपस में बदल-कर भी खा लेते हैं।

माता : (झुंझला कर] हाय राम ! हमारा तो जन्म ही भ्रष्ट हो गया।

रामू : (चकित होकर ठुड्डी पर हाथ रखकर) क्या मां ?

माता : तू नहीं जानता रामू ! हिन्दू मुसलमान के हाथ का नहीं खाते। हम ब्राह्मण हैं। वे हम से नीचे हैं।

रामू : नीचे क्या माँ !

माता : चुप रह, तब तू समझता ही नहीं (धमकाते हुए) आज से उसके साथ मत बैठना। हम ब्राह्मण हैं वह मौलवी का बेटा। (कान पकड़ कर) समझ लिया। (रामू रोने लगता है) ।

(तीसरा दृश्य)

स्थान : बशीर का घर

समय : शाम

(बशीर और उसकी माँ)

बशीर : माँ मेरी नई बुशशर्ट निकाल दो। आज मुझे रामू के घर जाना है। आज उसका जन्म दिन है।

माँ : नहीं, मैं नहीं जाने दूंगी तुझे उसके घर। हम मुसलमान हैं

और वे हिन्दू हैं। तूने अभी तो बताया था कि उसकी माँ हम को नीच समझती है।

बशीर : माँ! रामू कहता था'—'मेरी माँ ने कहा है वे नीच हैं उनके घर मत जाया कर।'

माँ : (क्रोध से) तू भी मत जाना उनके घर। ब्राह्मण हो गये तो क्या हमारे सिर पर पैर रखेंगे ?

बशीर : माँ! रामू बड़ा भला लड़का है।

माँ : [अनसुनी करके] चार पैसे क्या हुए? आसमान से बातें करते हैं [बशीर से] खबरदार! उनके घर की ओर पैर भी रक्खा तो।

बशीर : माँ! मुझे वह स्कूल में सबक सिखाता है।

माँ : तो क्या हुआ ? मैं तुझे आज से रामू के पास नहीं बैठने दूंगी उसके घर जाने की बात तो दूर।

बशीर : क्यों माँ।

माँ : [गर्म होकर] तुझ से एक बार कह दिया उसके पास नहीं बैठना है, बस। (बशीर उदास होकर मुंह लटका लेता है)।

चौथा दृश्य

स्थान : विद्यालय का एक कक्ष

[अध्यापक पढ़ा रहे हैं। श्रेणी के एक किनारे पर रामू और दूसरे पर बशीर उदास बैठे हैं। अध्यापक रामू से कुछ पूछते हैं। रामू चुप है। फिर बशीर को सदा की भाँति रामू के पास बैठा न देख कर रामू से।]

अध्यापक : बशीर कहाँ है रामू ?

रामू : (चुप)

अध्यापक : अध्यापक दूसरे किनारे पर बैठे बशीर को देखकर। क्यों बशीर! आज रामू से अलग सीट क्यों बदल ली है ? झगड़ा हो गया क्या उससे ?

बशीर : (चुप)

अध्यापक : (रामू से) बोलते क्यों नहीं रामू ?

रामू : (रोनी सूरत बनाकर) आज माँ ने मुझे मारा है और

कहा है बशीर के साथ मत बैठा कर।

अध्यापक : क्यों ?

रामू : कहती हैं "हम ब्राह्मण हैं और उसका बाप मौलवी मुसलमान।"

अध्यापक : (आश्चर्य से) अच्छा ! (कुछ सोचकर) देखो रामू। यह तुम्हारी माता जी की भूल है। मनुष्य सब एक हैं। उसने सब को एक-सा पैदा किया है (आकाश की ओर अंगुली करते हैं) हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई ये सारे भेद मनुष्य ने बनाएं हैं।

रामू : तो माँ क्यों कहती हैं बशीर नीच है ?

अध्यापक : बेटा ! ऊँच नीच का भेद बनावटी है। असल में हम सब एक हैं।

बशीर : (प्रसन्न होकर) सच मास्टर जी !

अध्यापक : हाँ, हाँ, हम सब समान हैं न कोई छोटा और न कोई बड़ा। आओ हम सब मिलकर गाएँ—

(सब गाते हैं)

भारतीय हम भारत माँ के भारतवासी एक हैं।
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई चाहे बने अनेक हैं॥
रामकृष्ण अवतार मुहम्मद नानक बुद्ध कहाए हैं।
जन-जन के मन के इन सब ने भारी भूत भगाए हैं॥
हम सब भारत माँ के सच्चे गौरव की सन्तान बनें।
भेद भाव का भूत भगा दें जिससे देश महान बने॥

—रामेश्वर दयाल शास्त्री

देवी का प्रसाद

(सियारामशरण गुप्त की 'एक फूल की चाह' शीर्षक कविता का हिन्दी रूपान्तर)

रंगमंच निर्देश

[मंच पर बाएं तरफ नर-नारी मृत पड़े हैं सामने थोड़ी ऊँचाई पर एक मंदिर बना है। दाएं तरफ अछूतों की बस्ती है। (एक झोपड़ी की आकृति से इसका संकेत दिया जा सकता है) अछूतों की बस्ती से मंदिर के सामने से होता हुआ एक रास्ता श्मशान की ओर जाता है।]

(नेपथ्य में कोलाहल, चीत्कार की ध्वनि, करुण तथा भयानक-सा संगीत का स्वर।)

पिता : (बेटी से कहने की मुद्रा में प्रवेश करता हुआ)—चलो ! अंदर चलो। देखती नहीं गाँव भर में महामारी फैल रही है। तुझे कुछ हो गया तो मैं कहीं का भी नहीं रहूँगा। (हाथ पकड़ने का अभिनय करता है) बेटी ! तुझे तो तेज़ बुखार है। आग की तरह तेरा बदन तप रहा है। कितनी बार तुझे मना किया, तू मानती नहीं (पिता चिंतित मुद्रा में) नेपथ्य से मंदिर के घंटे की ध्वनि आती है—टन-नननन। और धीरे-धीरे ध्वनि मंद हो जाती है।)

बेटी : बाबा ! मुझे देवी (मंदिर की ओर संकेत करते हुए) का प्रसाद लादो ना। प्रसाद खाते ही में बिलकुल ठीक हो जाऊँगी। देवी बड़ी अच्छी है।

पिता : (मंदिर की ओर देखता हुआ) —सामने का मंदिर (संकेत से) बेटी तुझे मालूम नहीं ? वह मंदिर बड़े लोगों का का है। ब्राह्मणों का है। हम नीची जाति के लोग वहाँ

जा नहीं सकते।

बेटी : पर मैं देवी के प्रसाद से ही अच्छी होऊँगी। तुम मेरी इतनी-सी भी बात नहीं मानोगे बाबा ?

(नेपथ्य में घंटे की ध्वनि तीव्र हो उठती है)

पिता : (चिंतन मुद्रा में मौन है)

बेटी : बाबा ! तुम क्या सोच रहे हो। इतनी-सी मेरी बात भी········।

पिता : अच्छा बिटिया मैं जाता हूँ। तेरे लिए यह भी सही। देवी ने चाहा तो तेरी इच्छा ज़रूर पूरी होगी। (स्वगत सोचने की मुद्रा में)—अब शाम का समय हो गया है। आरती भी हो चुकी। अब वहाँ मंदिर में कोई भी नहीं होगा) (प्रकाश)—(बेटी से)—अच्छा तू अंदर चल ! अब मैं चलता हूँ। कोई मुझे पहचानेगा भी नहीं (कहता हुआ बेटी को मंच से हटाकर अंदर की ओर ले जाता है। सहमा हुआ जप करता हुआ भक्ति भाव से मंदिर की ओर पहुँच जाता है।)

नेपथ्य : पिता प्रसाद चढ़ाता है। पुरोहित उसे प्रसाद देता है और कहता है (आशीर्वचन की मुद्रा में) तू सुखी रहेगा। प्रसाद लेकर जैसे ही वह चलना आरम्भ करता है, अचानक कोलाहल होता हैं। थाली गिरने की आवाज़ आती है। चमार आ गया। चमार ! चमार चमार ! इसे निकालो। इसने देवी के मंदिर को अपवित्र कर दिया। यह पापी है। इसे मंदिर से बाहर धकेल दो। (लोग घसीटते हुए उसे मंच पर ले आते हैं)

एक स्वर : मार डालो (संकेत)

दूसरा स्वर : नहीं मारने से क्या होगा। इसे कठोर दंड दो।

पिता : नहीं-नहीं ! मुझे मत मारो। मेरी बीमार बेटी मेरा इंतजार कर रही है। मुझे देवी का प्रसाद उसे दे आने दो। फिर तुम मेरी जान ले लेना। जो चाहे सो करना।

पहला स्वर : नहीं ! नहीं ! (संकेत से) यह ढोंग है। भागना चाहता है।

दूसरा स्वर : इसे दंड दो।

पुरोहित : इसने देवी के मंदिर को अपवित्र किया है। इसे ऐसा दंड मिलना चाहिए जिससे मंदिर में घुसने की तो बात ही क्या मंदिर के पास जाने की भी इसकी हिम्मत न हो। अच्छा इसे दो दिन के लिए एक कोठरी में बंद कर दो और··· और ध्यान रखो कि कोई भी इससे मिलने न पाए। जल्दी ही इसकी अकल ठिकाने आ जाएगी।

पहला और (सम्मिलित स्वर)—ठीक है! हाँ हाँ यही ठीक है। इसे

दूसरा : पकड़ ले चलो नहीं तो भाग जाएगा। (पकड़ने का अभिनय)

पिता : नहीं! नहीं! कुछ तो दया करो—(पैर छूना, गिड़गिड़ाना आदि का अभिनय) नेपथ्य में जाकर कोठरी में पहुँचने का अभिनय।

नेपथ्य में पिता का स्वर)—न जाने मेरी बेटी कैसी होगी? उसकी छोटी-सी इच्छा भी·········(करुण स्वर रूंध जाता है)

[दो दिन बाद कोठरी से निकाला जाता है और सीधा घर की ओर जाता है]

पिता : घर जाते हुए (चिंतित मुद्रा में) तीव्र गति से (घर में झांकता है) बिटिया! रे बिटिया (घर के दोनों तरफ जाकर बुलाने का अभिनय करता है और बेटी को न पाकर गाल पर उगली रखकर सोचने की मुद्रा में खड़ा हो जाता है फिर थोड़ी देर में घबराकर श्मशान के रास्ते पर बढ़ जाता है) मंदिर के घंटे की ध्वनि आती है। मंदिर के आगे पहुँचने पर परिचित लोगों को उदास मुद्रा में लौटते हुए देखता है और फिर पूछता है––मेरी बिटिया को देखा कहीं? वह कहां गई?

परचित वर्ग : (मौन रहकर) एक आदमी उंगली उठाकर आसमान की ओर संकेत करता है बाकी सब उदास और मौन हैं :

पिता : हा राम! मेरी बिटिया क्या इन ऊँची जाति वालों ने—ब्राह्मणों ने छीन ली। अपनी बेटी की छोटी-सी इच्छा भी पूरी न कर सका (मूर्छित हो गिर पड़ता है)

पिता : नेपथ्य ध्वनि :

लहू का रंग एक है अमीर क्या गरीब क्या?
बने हैं एक ख़ाक से तो दूर क्या क़रीब क्या?

[मंद स्वर में]

रूपान्तर – डा० विमलेश कांति

फिर लड़ेंगे

दृश्य : एक गली। एक तरफ मंदिर तथा दूसरी तरफ मसजिद। घंटियों की ध्वनि। अजान की आवाज। आवाज उभरती है। ध्वनि उठती है। शोर और आवेश। दो कठपुतलियों का प्रवेश। एक हिन्दू वस्त्रों में। दूसरी मुस्लिम वस्त्रों में।

हिन्दू कठपुतली : (ललकारने के स्वर में) तू मुस्लिम, तुझसे मुझे नफ़रत है। मैं तेरा मुँह भी देखना नही चाहता।

मुस्लिम कठपुतली : मुझे भी तुझसे नफ़रत है, तेरी जाति से नफ़रत है। मैं भी तेरा मुँह नहीं देखना चाहता।

(और अचानक दोनों कठपुतलियाँ एक-एक करके अपने कपड़े उतारती हैं और लड़ाई शुरू कर देती हैं। लड़ते-लड़ते दोनों अन्त में नंगी हो जाती हैं। अचानक एक बड़ी कठपुतली का प्रवेश वह हंसते हुए मंदिर में कूदती है फिर मस्जिद में और फिर उन दोनों के बीच खड़ी हो जाती है।)

बड़ी कठपुतली : (हिन्दू कठपुतली की ओर इशारा करती हुई) तुम कौन हो ?

हिन्दू कठपुतली : एक हिन्दू।

(बड़ी कठपुतली जो दो सिर वाली राक्षस जैसी लगती है, उसको एक ठोकर मारती है और वह एक ओर लुढ़क जाती है।)

मुस्लिम कठपुतली : (दूर खड़ी हंसती है) अ···ह···ह···ह···। ठीक किया तुमने जो उसे मारा। उसका पिटना मुझे अच्छा लगता है।

बड़ी कठपुतली : (मुस्लिम कठपुतली के पास ग्राकर) तुम कौन हो ?
मुस्लिम कठपुतली : एक मुस्लिम।

(बड़ी कठपुतली उसको भी एक ठोकर मारती है ग्रौर वह एक ग्रोर लुढ़क जाती है। बड़ी कठपुतली उपहास-स्वरूप जोर से हंसती है ग्रौर उन दोनों के कपड़े उठाकर भाग जाती है।)
[पीछे से उपहास में एक लम्बी हंसी]

दोनों कठपुतलियां उठने की कोशिश करती हैं ग्रौर दर्द से चीखती हैं। नंगी होने के कारण वे एक दूसरे को देखने में शरमाते हैं। फिर विवश हो किसी प्रकार ग्रपनी लज्जा को छुपाकर वे एक दूसरे के नज़दीक ग्राती हैं।

हिन्दू कठपुतली : वह कौन था ? क्या तुमने पूछा ?
मुस्लिम कठपुतली : नहीं, मुझे मालूम नहीं। क्या तुमने भी नही पूछा कि वह कौन था ?
हिन्दू कठपुतली : नहीं, लेकिन क्या तुम ठीक हो भाई ?
मुस्लिम कठपुतली : उसने मुझे मारा। उसने तुम्हें भी मारा। क्या तुम ठीक हो भाई ? (वे दोनों एक दूसरे को ग्रपने शरीर के वे स्थान बताती हैं जहाँ बड़ी कठपुतली ने उन्हें मारा था।
हिन्दू कठपुतली : उसने मुझे नंगा छोड़ दिया।
मुस्लिम कठपुतली : उसने मुझे भी नंगा छोड़ दिया।
उसने हमें नंगा छोड़ दिया।
(दोनों एक साथ)
हिन्दू कठपुतली : क्या वह बहुत ताकतवर था ?
मुस्लिम कठपुतली : ग्राग्रो, हम मालूम कर सकते हैं। वह उस स्थान के पीछे छिपा हुग्रा है।
हिन्दू कठपुतली : मैं उसे बुलाऊँगा।
मस्लिम कठपुतली : मैं भी उसे बुलाऊँगा।
हिन्दू कठपुतली : [मंदिर की चोटी से बड़ी कठपुतली को ग्रावाज देता है] वापस ग्राग्रो दोस्त।

मुस्लिम कठपुतली : (मस्जिद की चोटी से) वापस आओ दोस्त ।

बड़ी कठतुतली का प्रवेश। उन कपड़ों को दिखाते हुए जो उसने अपने अधिकार में कर लिए थे।

[हिन्दू और मुस्लिम कठपुतलियाँ आपस में हाथ मिलाती हैं और एक दूसरे का आलिंगन करती हैं। अचानक दोनों एक साथ बड़ी कठपुतली की ओर तेज़ी से बढ़ती हैं और अपने सिरों से उसके पेट पर चोट करती हैं। दोनों मिलकर उसे पीटती हैं और उससे अपने कपड़े छीनकर पहन लेती हैं। तब फिर वे विश्वास से निडर होकर बड़ी कठपुतली की ओर बढ़ती हैं।]

हिन्दू व मुस्लिम कठपुतली : (दोनों एक साथ) अब तुम हमें बताओ कि तुम कौन हो ? तुमने हमें क्यों मारा ?

बड़ी कठपुतली : (दोनों की ओर एक सहमी हुई दृष्टि से) तुम दोनों मुझे जानते हो लेकिन पहिचान नहीं सकते । क्या तुम मुझे पहिचानना चाहते हो ।

हिन्दू व मुस्लिम कठपुतली : (जिज्ञासा से दोनों एक साथ) हां, जल्दी बताओ, तुम कौन हो ?

बड़ी कठपुतली : तो सुनो, मैं हिन्दुस्तान की कमजोरी हूँ अर्थात् तुम दोनों के अन्दर की कमजोरी । जब हिन्दुस्तान कमज़ोर होता है, मैं ताकतवर होता हूँ । तुमने मुझे बहुत सारे नाम दिए हैं : ब्रिटिश, चीनी, पाकिस्तानी और न जाने क्या-क्या । यह अहमदाबाद बंटवारा क्या है ? तुम दोनों की कमजोरी अर्थात् मैं ही तो हूँ । जानते हो, मैं कहां रहता हूँ ? या तो उस मंदिर के पीछे, या उस मस्जिद के पीछे और जब भी तुम यह भूल जाते हो कि तुम हिन्दुस्तानी हो, मैं तुम्हें मारने आता हूँ । लेकिन जब मैं तुम्हें आपस में प्रेम से आलिंगन करते हुए देखता हूँ, मैं छिपा रहता हूँ क्योंकि तुम्हारी एकता रहने पर

मैं कभी भी तुम पर हावी नहीं हो सकता। इसलिए दुबारा लड़ने से पहले हमेशा मेरे ऊपर निगरानी रखो।

[बड़ी कठपुतली अचानक हिलती है जैसे फुरती से वह उन दोनों कठपुतलियों पर ठोकर मारेगी। मजाक में वह अपने पैंट पर जोर से हाथ मारती है लेकिन दोनों कठपुतलियाँ चौकन्नी हैं और एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए खड़ी रहती हैं।]

—जितेन्द्र कुमार

अनुवाद—दिनेश थपलियाल

खिलौने

स्थान : खिलौनों का स्टाल

सजीव पात्र : दूकानदार

कठपुतलियाँ : यू० पी० वाला, पंजाबी सिंधी, मद्रासी, काश्मीरी, हरियाणवी और दूकान के बहुत से खिलौने।

पहला दृश्य

खिलौने वाला : (कुछ बने हुए खिलौनों पर तूलिका से रंग भरता हुआ)।

ये खिलौने अलबेले
ले लो जी खिलौने
गोरे, काले, मोटे, पतले सलोने,
मिट्टी के खिलौने
दीवाली के खिलौने अलबेले
खिलौने ऐसे के जिससे बच्चा भी
खेले, बच्चे की माँ भी खेले,
बच्चे का बापू भी खेले।

(गुनगुनाता है। गुनगुनाते हुए ऊँघने लगता है और ऊघता ऊँघता सो जाता है)।

[सोया सोया सपना देखता है]

लखनवी खिलौना : (अंगड़ाई लेता हुआ) वाह साहब वाह। आज तो मालिक ने सबसे ज़्यादा लखनवी खिलौने ही बनाये हैं। आखिर लखनऊ के ठहरे हम—क्या नफ़ासत है, क्या नज़ाकत है और क्या अन्दाज़ है लखनऊ की हर बात में। 'लखनऊ पे फिदा हम, हम पे फिदा लखनऊ' अजी आखिर

लखनऊ है तो उत्तर प्रदेश में ही। जी हाँ उत्तर प्रदेश– राम और कृष्ण की धरती, गंगा और यमुना की सर जमीं.........।

पंजाबी : (तुनक कर आखें मलते हुए अपनी जगह से उठकर) ओय बस करो वाखयान। नींदर हराम कर दी। उत्तर परदेश उत्तर परदेश। ओय पानखोर कभी शीशे में बूथी भी देखी। न मुंह न मत्था, जिन पहाड़ों लत्था। (एक झापड़ कंधे पर मारकर)

लखनवी : वाह साहब वाह! गाली तो बक दो मगर हाथ तो मत चलाइये।

पंजाबी : ओय हत्थ तो मैंने बाद में चलाया, पहले तूने जबान चलाई। तुम यू० पी० वालों की जबान कैंची की तरह चलती है तो हम पंजाबियों के हाथ तोप के गोले की तरह। (हंसता हुआ एक और झापड़ लखनवी के कंधे पर लगाता है—(लखनवी गिरता गिरता संभलता है।)

लखनवी : अजी वाह साहब वाह! यह भी खूब रही अबकी हाथ चलाया तो.........

पंजाबी : मुझको मालूम है कि अबकी हत्थ चलाया तो तेरी हड्डी पसली टुट्ट जानी है। यही तो बात है हममें (तनकर) देख। गोरा रंग, चौड़ा सीना, गठा हुआ बदन और ऊँचा कद। ओय मैं गबरु जवान पंजाब दा रांझा। तभी तो हीरें गाती हैं—

(भांगड़े की धुन में नाचता हुआ) बल्ले बल्ले के चौकी-दारी लै ले मितरा, के तेरे लगदे बोल प्यारे
के चौकीदारी लै ले मितरा
बल्ले बल्ले ...।

हरियाणवी स्त्री : अरे बावणे। क्या सोर मचा रखा है तैणे : मेरा गैरु का बापू आ जाए वो मच्छर सा मरोड़ के धर दे तैणे। देसों में देस हरियाणा, जड़ें दूध दही का खाण। म्हारे हरियाणे की पली पलाई गऊँए और भैसें। और फिर जाटणी भी होवैं एक नम्बर—गंडासा। मूली गाजर-सा

काट के धर देवे। फिर म्हारे सूरबीर योद्धा–विरगेडियर होसयार सिंह……

लखनवी : अजी खामख्वाह क्यों मर्दों के मुंह लगती हैं आप। हमारे अब्दुल हमीद को क्यों भूलती हैं और फिर लाल बहादुर शास्त्री, जवाहर लाल……।

काश्मीरी : हा ! हा ! हा :—यह गल्ती मत करो। मैं अब तक चुप था। अपने मुंह मियाँ मिट्ठू अब भी नहीं बनूंगा। लेकिन जवाहरलाल की बात आई—तो वह तो हमारे हैं—काश्मीरी भाई हाँ।

लखनवी : अजी साहब आप क्या बकते हैं। जवाहर के पुरखे तो काश्मीर छोड़ कर उत्तर प्रदेश में आ बसे थे। जी हां। गंगा यमुना और सरस्वती के संगम प्रयाग में। वाह वाह ! क्या धरती है उत्तर प्रदेश की, हिन्दुस्तानी तहजीब संस्कृति और कलचर की पाक सरजमी, पवित्र धरती……

पंजाबी : ओय रहने दे। अगर हम पंजाबी न होते तो तुम्हारी पवित्तर धरती का क्या होता। हम सीना तान कर लड़ते रहे और तुम लोगों को बचाते रहे। तभी तो कहते हैं—देशां विचों देश पंजाब।

सिंधी : अड़ साईं। पो बड़ी हम भी पंजाब के पास का ई हैं नी तुम लोगन का परोसी। हमाड़ा मुलक सिन्ध तो बड़ी पिच्छे ई छुटा है नी, मगड़ हम अपनी कल्चड़ और लैंग्वेज़ तो लाया है नी बड़ी।

लखनवी : अजी क्या (Culture) कल्चर लाये हैं आप। यह तो आपको कबूलना ही पड़ेगा कि तहज़ीब है तो सिर्फ लखनऊ की। और फिर जुबान क्या है आपकी कि सुनकर सर की नस-नस फट जाए। 'थड़ी अच, वढ़ी अच, थणीं जी ए गत धणींय जाणें सुभाणें अला छा थीं दो।

सिंधी : (ताव में आकर) पो बड़ी साईं। आपकी जवान क्या हैं तुम पूर्विया लोग है न बड़ी गाता है—ललऊवे ललऊवे ड़ें लखनऊवे बजाड़ का सौदा।
लूटो लूटो ड़े लखनवे बजाड़ का सौदा।

पंजाबी : ओय तू चुप कर सिंधी माणूं पापड़ खाणूं ।

सिंधी : अड़े बड़ी पापर तो हम खुद ही बेलता है नी ।

पंजाबी : ओय एडबानी, गिडवानी पापड़ ही बेले है तुम लोगो ने । कोई लीडर तो बताओ अपना ।

मद्रासी : आई आई यो । (मद्रासी लहजे में)
You punjabi always fight. I tell you. (यू पंजाबी आलवेज फाइट)
"Sindhi leader......a (आई टैल यू सिंधी लीडर)
इल्ले You see (यू सी) our (यवर) Leader, (लीडर) निजलिंगप्पा, कामराज ।

काश्मीरी : अगर लीडर की ही बात आई तो हमारे मोती आर जवाहर आ ! हा ! हा—हमारा काश्मीर जन्नत है जन्नत ।

मद्रासी : (गुस्से से) What nonsense ! You ungrateful Kashmiri. Your kashmir was saved by our (यवर) leader Krishnamenon. In Security Council he fought for your kashmir.........our (यवर) krishanmenon

बंगाली : What a harsh language you South (शाऊथ) Indians have. (हैव) बांगला भाषा Sweet Like Roshogulla आमार Robindro Shongeet.

पंजाबी : क्या भाषा है तुम्हारी जल खावे लोची पीवे । पहले बताओ क्या खास बात है तुम्हारी ?

बंगाली : खॉश बात । आमार खाश बात के (बोंगाली) बंगाली जब चौलता चौलता रुक जाए तो 'आमि चालिवे न' ।
And there is (इज) no difficulty (डिफिकोल्टी) in getting things (थींगस) done. Over a little thing we burn (वोरन) the buses and Trains in Colcotta

लखनवी : अजी छोड़िये इन बातों को । खाते क्या हैं आप ? दो-दो अंगुल जितनी कांटेदार मछली ।

पंजाबी : भई खाते तो हैं हम पंजाबी ।

लखनवी : अजी क्या खाते हैं आप। मोटी मोटी मक्के की रोटियाँ और सरसों का साग—बस। बिल्कुल गंवारों-सा खाना।

पंजाबी : तो क्या तुम्हारा बाथू का साग खायें। और जानते हो मकई की रोटियाँ और सरसों का साग तो अशोका होटल में भी पकता है।

बंगाली : (स्वाद लेते लेते) आमार Roshobhog वाह ! वाह !

मद्रासी : यंड यवर मसाला, डोसा, इडली, सांभर···रा

हरियाणवी : और म्हारी राबड़ी ? ये तैंने सांबर सांबर क्या लगा रखी है।

मद्रासी : I tell you, what Sambher is. It is a watery substance and one or two carrot dimping in it
(सभी हंसते)

लखनवी : खाना तो जी उत्तर प्रदेश का। गर्म गर्म कचौड़ी, हींग का छोंक और उड़द की दाल।

बंगाली : आमार बांगला श्वीट्स।

पंजाबी : ओय जाने दो मोशाय बंगला स्वीट् को रोता है। ओय तुम्हारे देश में तो अकाल ही पड़ा रहता है। तभी तो हम पंजाबी तुम को बोलते हैं—भूखा बंगाली।

बंगाली : हाय। यह बात तुम आमार शोनार देश बंगाल को बोला हमको 'फैमीन स्ट्रीकन' बोला। आमि को भूखा बोला— भूखा तुम ! तुम !

लखनबी : जी हाँ। यह पंजाबी गाली गलौज बहुत करते हैं।

पंजाबी : ओय तेरी ऐसी की तैसी।

मद्रासी : ऐ जी···।

(हल्ला गुल्ला और हंगामा) अचानक एक खिलौना गिरता है। (मत लड़ो, मत लड़ो करते हुए खिलौने वाले का सपना टूटता है। आंख मल कर उठता है। इर्द गिर्द देखता है। खिलौने ज्यों के त्यों रखे हैं। उसके पास ही खिलौने की मिट्टी और रंग तूलिका आदि रखे हैं, गिर कर टूटने वाला खिलौना हाथ में उठाकर कहता है—)

खिलौने वाला : काश ! यह सपना थोड़ी देर ग्रौर चलता ग्रौर इन मिट्टी के खिलौने को समझा पाता कि (खिलौने की ग्रोर देखकर) ऐ खिलौनों ! (हाथ में मिट्टी उठाकर) यह मत भूलो कि सब एक ही मिट्टी के बने हो। जब मैं खिलौने बनाता हूँ तो एक साथ ही ढेर सारी मिट्टी रौंदता हूँ फिर ग्रलग ग्रलग ग्राकार के पुतले बनाता हूँ ग्रौर फिर इन पुतलों को ग्रलग ग्रलग रंग देता हूँ।

(खिलौने उठाकर)—यह देखो लखनऊ का छबीला नवाब, ग्रौर यह पंजाब का बांका जवान ग्रौर यह बंगाली मौशाय, यह सिंधी व्यापारी
ग्रौर यह हैं दक्षिण के मेधावी पंडित ।
ग्रौर यह काश्मीर का खूबसूरत जवान ग्रौर
यह है हरियाणे की निडर स्त्री ।
यह सब पगले खामखाह भिड़ गए। भूल गए कि पंजाबी बंगाली मद्रासी सभी एक ही मां के रंग बिरंगे बेटे हैं हां भारत मां के बेटे ।

—प्रिया कपूर

———

चौराहा

इस गीत नाटिका में आठ पुतले कार्य करेंगे। इनकी रूपरेखा निम्न प्रकार है :

पंडित पेटू राम :—भोजन भट्ट, लम्बी चोटी, घुटी चांद, माथे पर त्रिपुण्ड, गले में जनेऊ। देह नंगी। धोती घुटनों तक। मैली कुचैली। बगल में बस्ता पूजा का। पंडित जी की नाक बड़ी। आगे मोटी। आंखें छोटी-छोटी। गड्ढों में धंसी हुई। देह मोटी, पेट बड़ा। आगे काफी निकला हुआ। आयु चालीस पैंतालीस वर्ष। झूम कर चलते हुए।

मियाँ चश्मुद्दीन 'हज्जाम':—सर पर फैज़ कैप पीछे निकले बाल। आंखों पर चश्मा। नाक बड़ी। पतली। आगे को चोंच नुमा झुकी हुई। एक गाल उठा हुआ (पान का भ्रम देने के लिए) दांत बड़े। आगे निकले हुए। नीचे होंठ पर रखे हुए। रंग के काले। शेरवानी। अलीगढ़ी पायजामा। आयु चालीस पैंतालीस वर्ष। एक पांव से लँगड़ा कर चलते।

सरदार चुकन्दर सिह 'मतलबी' :—हट्टे कट्टे। पगड़ी ढीला कुर्ता। चूड़ीदार पायजामा। घनी दाढ़ी। मूछें ऐंठी हुई (यदि सम्भव हो तो आंखें मिचकाते हुए दिखाना) आयु पैंतीस चालीस वर्ष।

मिस्टर बिलियम 'बोर' :—सर पर हैट। गले में लटका क्रौस। लम्बा सफेद चौंगा। कमर पर बंधा हुआ। आयु चालीस पैंतालीस वर्ष।

बच्चा पात्र :

सुधीर : आयु छः वर्ष। चुलबुला। सर मटका कर दौड़ने वाला। कभी-कभी हौपिंग कर चलने वाला। हाफ पैंट, बुशर्ट, किसी को

नोच कर या पीछे से 'कू ऊ ऊ कर भाग जाने वाला।

तेजिन्दर : सिख। आयु आठ वर्ष। तगड़ा। बिना पगड़ी। बालों का जूड़ा ऊपर बना। बनियान कच्छा पहने। घूंसे बाजी का उस्ताद।

बशीर : कुर्ता। अलीगढ़ी पायजामा। आयु आठ वर्ष। नंगे पांव। काला। दुबला-पतला। बात बात में खि: खि: कर हँस देने वाला। शक्ल ऐसी की देख कर हँसी आ जाए।

आइट : टिप-टाप। आयु छ: वर्ष। बीच में निकली माँग। फुल पैंट। शर्ट। बात-बात में रोने वाला।

नाटिका आरंभ

मंच पर चौराहे का दृश्य। लोगों का आना जाना।

पर्दे के पीछे से
देखो तो यह चौराहा है, कितने आते जाते।
किसके मन में क्या आता है, लोग समझ कब पाते।
अलग-अलग राहों पर जाते, अलग विचारों वाले।
कोई नहीं किसी से परिचित, सबके पंथ निराले।
देखो तो कोई आता है
हुश........
सुनो ! सुनो। वह कुछ गाता है।

पेटूराम : हे भगवान बड़ा तू स्वामी, भरता सबका पेट।
जिजमानों से कहता है तू, इन चरणों पर लेट।
लड्डू, पेड़े, बरफी, तू ही हलवा, पूड़ी देता।
हम जैसे पेटू पंडित की, तू ही नैया खेता।
हे परमेश्वर आज मिलादे—तू मोटा जिजमान।
रबड़ी, दूध, मलाई दे, जो बना सके मेहमान।
(जीभ चटकाते हुए) हाँ हाँ बना सके मेहमान
मुझको बना सके मेहमान।

(जाना)

पर्दे के पीछे से कोई बालक, आगे आकर भी बोल सकता है।
मुँह मटकाते चले गए, अब पंडित पेटू राम।
चश्मुद्दीन मियाँ आ पहुँचे, बहुत बड़े हज्जाम।
एक टाँग पर मचक मचक कर, चलें अनोखी चाल
आओ चुप हो जाएं हम अब इनका सुने कमाल
(मियां चश्मुद्दीन के हाथ में हजामत बनाने वाली पेटी है तथा स्टेज पर लंगड़ाते हुए चश्मा ठीक करते हुए आते हैं)

मियाँ : या अल्ला तू गरीब परवर, तू शाहों का शाह।
तुझ तक जाती है दुनियाँ के, हर मज़हब की राह।
इतनी मेहर आज तू करना, दुआ मुझे दे देना।
अपना बंदा समझ मुझे, तू कुछ ऐसा कर देना।
अच्छों अच्छों के सिर मूँडूं, चाँद चाँद सी कर दूँ
और अगर कुछ करे गड़बड़ी, टोंका सिर पर धर दूं
(स्वयं बड़े जोर से ठहाका मार कर हँस पड़ता है)

पीछे से : कूल्हा मटका बड़े मियाँ अब गए शाप की ओर
लो पश्चिम से आ पहुँचे ये मिस्टर विलियम 'बोर'
विलियम 'बोर' ? हा हा हा !
विलियम 'बोर' ? हा हा हा !
हाँ हाँ भाई विलियम 'बोर'
[विलियम बोर बीच बीच में नाक सिकोड़ने के आदी हैं कभी कंधे भी उचकाते हैं]

पीछे से : अहा ! अहा ! क्या शक्ल आपकी।
कर न सकेंगे नकल आपकी।
कीप साइलेंस। बोर जी बोले
शटप शटप, ये मुखड़ा खोले

बोर : आई एम गोइंग टू माई चर्च,
(हाथ सीने पर रखकर)
गॉड न हो मेरा कुछ खर्च।
दाउ डिवाइन ब्लैसिंग दे
वर्ल्ड बचाए—मुझको दे।
गिव मी गिव मी ऐसा ब्लैसिंग,
मिले सड़क पर आज गोल्ड रिंग।
डियर डिवायन दे दे वैल्थ,
सबसे अच्छी हो यह हैल्थ
मेरी हैल्थ ? या [यैस] मेरी हैल्थ
(जाना — कंधा सिकोड़ते नाक मटकाते)

पीछे से : विलियम बोर गए इधर, ये आए सरदार
इनसे समय न पूछना, नहीं पड़ेगी मार
मार पड़ेगी ? ओए खोते मार पड़ेगी।

सरदार जी : हुण सरदार चुकन्दर सिंह जी,
साड्डा काम ? जी क्या कैणा जी ।
वाहे गुरू दा खालसा, तू सबका पीर—
वाहे गुरू दी फतेह, तू मेरा रक्खागीर ।
त्वाडी किरपा होय तो कोई मुरगा फँसे,
माल चकाचक मिले जिन्दगी बल्ले बल्ले हँसे ।

पीछे से : पंडित, विलियम, मियाँ, चुकन्दर कह कह कर निज बात,
चौराहे पर छोड़ सब गए स्वार्थ सौगात ।
गए स्वार्थ सौगात, किन्तु सब ईश्वर वादी,
ईश्वर को सब मान रहे थे आदि अनादि ।
पढ़ते समय (ढ़ोंगी) कह योगी (ढ़ोंगी) कवि राय कभी ये नहीं लड़ेंगे
सबका भारत देश, मेल से सभी रहेंगे

(उसी चौराहे पर)

पीछे से : इधर से आया ब्राइट ब्वाय
इधर से आया मियाँ बशीर
इधर से तेजिन्दर की दौड़
उधर से आया भाग सुधीर
(अपने अपने गुणों के अनुकूल भाग कर आना)

मिले चौराहे पर वे चार,
खेल का होने लगा विचार ।

ब्राइट : चलो हम चले नदी के तीर,
सुधीर : मछलियाँ पकड़ेंगे हम फोर ।
तेजिन्दर : और मैं बन जाऊँगा चोर,
बशीर : मचा दूंगा मैं यारो शोर ।

(सबका एक साथ हँसना)

सुधीर : आज तो मौसम कितना साफ ।
ब्राइट : मगर तू है क्यों अरे उदास ?
बशीर : यार पर मन में आज उमंग ।
तेजिन्दर : अभी मैं लाता दोस्त पतंग ।
अभी हम उसे उड़ाएँगे;
यार के दुख मिटाएँगे ।

पीछे से : तेजिन्दर फिर गया दौड़ घर
लाया उठा पतंग बहादुर,
लगे उड़ाने सुक-सुक-सुक
गाते जाते छुक-छुक-छुक
(सुधीर और तेजिन्दर का पतंग उड़ाना। ब्राइट व बशीर का देखना।)

तेजिन्दर : आहा ! मेरी नई पतंग।
दिल दी प्यारी नई पतंग।
मम्मी से दस पैसे लाया,
दौड़ दौड़ नुक्कड़ पर आया।
चचो जहूरन की दूकान,
कनकउओं को वही दुकान।
आहा मेरी नई पतंग,
दिल दी प्यारी नई पतंग।
यह सूरज से बातें करती,
चंदा से यह नहीं झगड़ती।
तारा देख देख कर जलता,
डर के मारे नहीं पकड़ता।
यह चिड़ियों की नानी है,
यह परियों की प्यारी है।
आहा मेरी नई पतंग,
दिल दी प्यारी नई पतंग।

पीछे से : किन्तु तभी कट कर गिरी, आगे दूर पतंग,
मियाँ बशीर भागे उधर, लेकर नई उमंग।
ले पतंग फिर घर को भागे,
तीनों उसके पीछे भागे।
सूखे साखे मियाँ बशीर,
चिपटा उनसे दौड़ सुधीर।
चट-पट चट-पट धूम धड़ाधड़,
चाँटे थप्पड़ घूंसा लातें।
धक्का मुक्की पें-पें मैं-मैं,
गाली देकर करते बातें

तेजिन्दर : तू है पक्का चोर बशीर,
टुकड़े कर दूंगा दो चीर।
बशीर : कटी पतंग न है अब तेरी,
मैंने लूटी, यह अब मेरी।
ब्राइट : ठीक कह रहे डियर बशीर।
सुधीर : झूठ। झूठ। मैं कहूँ सुधीर।
तेजिन्दर : तू उल्लू है टिल्लू है।
बशीर : तू सरदारा लल्लू है।
ब्राइट : मारूँ मुक्का एक तुझे (तेजिन्दर के विरुद्ध)
सुधीर : दूंगा धक्का एक तुझे (ब्राइट की ओर)
पीछे से : फिर से चट-पट
फिर से पट-पट
फिर से लातें,
फिर से थप्पड़।

सुना शोर, आए वहाँ चश्मुद्दीन नवाब।
पिटते देख बशीर को बहुत आ गया ताव।
मियाँ जी : क्यों कम्बख्त छोकरों क्या है?
तेजिन्दर : मेरी पतंग चुरा भागा है।
पीछे से : ऐसा कह भिड़ गया तेजिन्दर,
उफने मियाँ क्रोध में भरकर।
मियाँ : औ शैतान कमीने छौरे।
(चट पट चट पट) ले, ये ले रे।
अबे सुधीरा ले परसाद।
तू भी ब्राइट करे फसाद।

पीछे से : जड़े तमाचे गालों पर,
लड़के रोए ऊँचे स्वर।
(बच्चों का ऊँचे स्वर में रोना)
पीछे से : आए निकल उधर सरदार।
पंडित पेटू राम खखार।
विलियम बोर हाथ फटकार।

चारों में होने लगी, फिर तो मारा मार।
भूल गए ईश्वर सभी, भूल गए फिर प्यार।

सरदार : अरे मियाँ तू है मक्कार।
मियाँ : ओ सरदाराँ तू बदकार।
बोर : दाढ़ी पकड़ हिला दूंगा।
पंडित : पेट मार दे मारूँगा (पेट निकालते हुए)
मियाँ : पकड़ घसीटूं तेरी चोटी (चोटी की ओर लपकना)
सरदार : अभी फैंकता तेरी पेटी (हज्जाम की पेटी छीन कर फेंकना)
बोर : आइ शैल किक यू ब्लाडी फूल कंधे उचकाकर नाक शिकोड़ कर)
मियाँ : छुरा पेट में दूंगा घोंप (छुरा उठाकर)
पीछे से : ईश्वर अल्ला गाँड के बंदे बेमतलब लड़ने लगे।
और इधर वे चारों बच्चे, भूल वैर हँसने लगे।
छुआ छुअव्वल का वहाँ, लगा जमकने खेल।
भूलभाल रोना सभी, वहाँ बढ़ गया मेल।
तेजिन्दर : मैं भागूंगा, तू छू लेना।
छू, न सको तो हार मानना।
बशीर : हाँ हाँ भाग--बड़ा बनता है।
सुधीर : देखूँ यार कहाँ जाता है।
ब्राइट : छू कर अभी हटाता तुझको।
दिन भर अभी पदाता तुझको।
पीछे से : भाग तेजिन्दर छिप गया, बड़े मियाँ के पास।
तीनों चक्कर काटते ; टूट रही थी सांस।
बच्चों के इस खेल को, देख हुए अवाक्।
लड़ना भिड़ना भूल एक, का एक रहे मुंह ताक।

सरदार : बच्चे तो जी एक हो गए !
पंडित : हाँ हाँ भैया एक हो गए !!
मियाँ : अमाँ शर्म की बात हो गई !
बोर : बच्चे से ही मात हो गई !
सरदार : अब न लड़ेंगे बेमतलब हम;
मियाँ : सीखें सबक़ बालकों से हम।

पंडित : राम राम है ! गुस्सा थू।
बोर : सौरी सौरी गुड मैन यू।
पीछे से : हाथ मिलाने लगे सब, बनकर सच्चे मीत।
और इधर गाने लगे, बच्चे सुमधुर गीत।
बच्चे : बच्चे तो लड़ते भिड़ते पर पुनः एक हो जाते,
आपस में लड़ने वालों को संदेशा दे जाते।
हिन्दु मुस्लिम सिख ईसाई, भारत माँ के बच्चे।
मिल जुल कर हम बने आज से अच्छे, दिल के सच्चे।
अच्छे दिल के सच्चे,
हाँ हाँ अच्छे दिल के सच्चे।
हाँ हाँ अच्छे दिल के सच्चे

— राधेश्याम 'योगी'

———

खून का रंग है एक समान

[पर्दा उठने से पहले एक गीत की आवाज़ उभरती है]

"सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा
हम बुलबुले हैं इसके, यह गुलस्तां हमारा"

[पर्दा उठता है—तीन दोस्त इस गीत को गाते हुये नज़र आते हैं]

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा
हम बुलबुले हैं इसके यह गुलस्तां हमारा
पर्वत वह सबसे ऊँचा, हमसाया आसमां का
यह संतरी हमारा—यह पासबां हमारा

तीनों दोस्त राम, गोबिन्द, जार्ज, इसी गीत की धुन पर नाचते गाते हैं।

राम : आज कौन सा खेल खेला जाये ?
चलो कबड्डी खेलें—क्यों जार्ज ?

जार्ज : नो-नो, इस खेल में हमको चोट लगना मांगता।

गोविन्द : ओये हम दसते हैं ऐसा खेल—न हिंग लगे न फटकड़ी और रंग भी चोखा।

सारे : वह क्या—जल्दी बताओ।

गोविन्द : ओये हम चढ़ता है पेड़ के ऊपर। ते ऊँतो गेरता है मोटे मोटे आम।

राम : अरे वाह—आम का नाम सुनते ही मेरे मुंह में तो पानी भी आ गया।

जार्ज : (Good Idea)। गुड़ आइड़िया। लेकिन अगर माली आना मांगता—तो हम किधर जाना मांगता।

गोविन्द : ओये तुम बिल्कुल नई घबराना मांगता—

"जे आ जायेगा किधर से माली
ते हम मैदान कर दयांगे खाली"

राम : गोविन्द—देखो देखो आम का नाम सुनते ही जार्ज के मुंह पर लाली आ गई।

गोविन्द : ओये इस के मुँह की लाली का भेद तो हम जान्दा है।
इस ने कल स्कूल के काम की करदी टाल
और मास्टर जी ने मार मार कर मुँह कर दिया लाल
बोल सिया पति राम चन्द्र की जै।

राम : तुम दोनों माली का ध्यान रखना और मैं पीछे से जा कर पेड़ पर चढ़ता हूँ।

जार्ज : (Yes, yes.) यस यस

(एक लड़का रहीम दूर से आता दिखाई देता है)

जार्ज : अरे कोई इधर आना मांगता।

रामू : (रहीम की तरफ देखकर) अरे यह लड़का तो मैंने पहली बार देखा है—गोविन्द तुम इसे जानते हो।

गोविन्द : ओये हमको की पड़ी है इसको जानने की। हम तो यह जानते हैं :
"तोते वरगी नाक है इसकी, चाल मोर नाल मिलती है।
सच पूछो ते शक्ल एस दी, किसी चोर नाल मिलती है"

जार्ज : हमको तो कोई (Mohammdan) मुहम्मडन लगना मांगता।

गोविन्द : ओये सीधी गल नई आखता—किसी मौलवी का पुत्तर लग रया है।

राम : नया नया ही आया जान पड़ता है। चलो ज़रा इसका स्वागत करें।

गोविन्द : चलो बादशाहो—अभी कर देते हैं इसकी टिबरी टैट।

[तीनों रहीम के चारों ओर चक्कर काटने लगते हैं। कभी उसे और कभी उस के कपड़ों को घूर कर देखते हैं]

राम : क्यों भाई—कहाँ से आये हो।

रहीम : अपने घर से।

जार्ज : तुम का घर किधर होना मांगता ?

गोविन्द : ओय हम बताते हैं इस का पूरा-पूरा हाल—यह टोपी लियाया है अजेबघर से (सारे हंसते हैं) यह बूट लियाया

है नीलामघर से, यह कमीज़ लियाया है धोबी घर से और यह खुद आया है चिड़ियाघर से। (सारे हँसते हैं।)

रहीम : मैं तो आप लोगों से मिलने आया हूं—दोस्त बनना चाहता हूँ—आप के साथ खेलना चाहता हूं।

राम : अरे जा-जा हम नहीं खिलाते तेरे जैसों को।

गोविन्द : हम के साथ जे खेलना चाहते हो—तो पहले छपड़ दे बिचो मुंह धो के आओ।

जार्ज : उधर मुंह धोने से रंग गोरा होना मांगता।

गोविन्द : हाँ जरा बूथी लिशक जाती है।

रहीम : आप लोग साथ नहीं खिलाना चाहते तो मत खिलाइये लेकिन कम से कम किसी का इस तरह मज़ाक तो न उड़ाइये।

गोविन्द : ओये जा-जा—बड़ा आया लाट साहब दा पुत्तर। नई खिलाते तुमको

"जा कर ले जो कुछ करना ई
 असीं तैनूं मज़ा चखावांगे
असी सारे खेडी जावेंगे
 पर तैनूं नई खिडाबांगे।
राम चन्द्र की जय—बोलो भाई—बोलो भाई

जार्ज : चलो रामू हम अपना खेल खेलना माँगता।

राम : हाँ चलो—मैं पीछे से जाकर पेड़ पर चढ़ता हूँ, तुम दोनों माली का ध्यान रखना।

[रहीम चुपचाप एक तरफ बैठ जाता है—रामू पेड़ पर चढ़ने लगता है]

गोविन्द : जार्ज तुम उधर माली का ध्यान रखो मैं इधर अम्बो का ध्यान रखता हूँ।

[जार्ज जरा दूर खड़े होकर माली की सूचना देने खड़ा हो जाता है]

गोविन्द : रामू—जरा ध्यान से पेड़ पर चढ़ना—और देखो जरा पैर मटक मटक कर रखना—इस वक्त आम सो रहे होते हैं। उन की नींदर न खुल जाये।

रामू : (ऊपर पेड़ से) तुम चिन्ता न करो— पेड़ों से आम तोड़ना तो मेरा रोज़ का काम हो गया है ।

गोविन्द : ज़रा मोटे मोटे आम तोड़ना—वो—हाँ —इधर नहीं—उधर हाँ—यह वाला ।

[गोविन्द हाथ ऊपर उठाता है—आम गिरने की बाट देखता है पीछे से जार्ज की आवाज़ आती हैं]

जार्ज : माली आना मांगता—माली आना मांगता ।

गोविन्द : रामू —छेती से नीचे उतर—माली आरिया है

ज़ार्ज : जल्दी रामू जल्दी ?

गोविन्द : अरे छेती नहीं उतर सकता तो छाल मार दे राम का नाम लेके ।

[राम छलांग मारता है—गिरते ही जख्मी हों जाता है]

जार्ज : रामू-रामू—यह तो बेहोश होना मांगता ।

गोविन्द : ओये बेहोश नहीं—हमको तो रामू का बोलो राम हो गया जापता है ।

जार्ज : फिर क्या करना मांगता है ।

गोविन्द : सिर पर पैर रखकर एयो भागना मांगता । जै हम एथे खलोता रहेगा ते फिर एह सारी गल हमके नाम लग जायेगी ।

जार्ज : राईट । चलो ।

[दोनों राम को वहीं छोड़ कर भाग जाते हैं। रहीम अपनी जगह से उठकर रामू के पास आता है]

रहीम : देखा—वह तुम्हारा दोस्त—मुसीबत में भाग गया न । कोई बात नहीं—तुमने खेल में मुझे साथ नहीं लिया लेकिन मैं इस वक्त तुम्हारा साथ दूंगा ।

[उस को अपने कँधे पर उठा लेता है और धीरे-धीरे बाहर चलता जाता है]

दूसरा दृश्य

स्थान : डाक्टर बोस की दुकान के बाहर

[डा० बोस कुर्सी पर बैठे हैं—रहीम रामू को लेकर आता है—डाक्टर रामू की नब्ज़ देखता है और उसे दुकान के अन्दर लाने

का संकेत करता है—रहीम रामू को अन्दर छोड़ कर बाहर आता है—इधर से रामू की मां घबराई हुई डाक्टर की दुकान पर आती है पीछे से गोविन्द और जार्ज छुप-छुप कर देखते हैं]

माँ : रामू कहाँ है—रामू—रामू !

रहीम : माँ जी—डाक्टर साहब उसका इलाज कर रहे हैं। वह जल्दी ही होश में आ जायेगा। आप घबराएं नहीं।

माँ : क्या कह रहे हो—रामू बेहोश है—यदि मेरे बेटे को कुछ हो गया तो मैं भी जिन्दा नहीं रहूँगी।

[डाक्टर हाथ साफ करता हुआ बाहर आता है]

डाक्टर : रामू की मां—घबराने से कुछ नहीं बनेगा।

मां : रामू कहां है—रामू कहां हैं ? डाक्टर साहब !

डाक्टर : रामू अभी होश में नहीं आया। गहरी चोट लगने से काफी खून निकल चुका है। उसे खून देना पड़ेगा।

मां : क्या कहा, खून। डाक्टर साहिब मेरे रामू को बचा लो। वह मेरे घर का चिराग़ है—मेरी आँखों का नूर—मेरे जीवन का वही तो एक सहारा है—चाहे मेरे जिस्म का सारा खून ले लो, लेकिन रामू को बचा लो।

डाक्टर : ठीक है—लेकिन तुम पहले ही बहुत कमज़ोर हो—क्या खून देने के लिए इसका कोई भाई नहीं ?

मां : नहीं—नहीं यह एक ही तो है मेरा बेटा। इसका कोई भाई नहीं।

रहीम : माँ ! तुमने यह कैसे कह दिया कि इसका कोई भाई नहीं—मैं इसका भाई हूं—मैं खून दूंगा।

डाक्टर : देखना पड़ेगा इसका खून उस से मिलता है कि नहीं (गोविन्द और जार्ज छुप कर नज़दीक आते हैं)

मां : नहीं-नहीं यह मुसलमान है हम हिन्दू। इसका खून मेरे बेटे से नहीं मिल सकता।

डाक्टर : रामू की माँ—एक तुम्हीं नहीं देश के हज़ारों लोग अभी तक इसी गलतफहमी में हैं कि वे हिन्दू हैं—मुसलमान, सिक्ख और ईसाई हैं—यह मजहब की दीवारें तो हमने खड़ी की हैं—इनके मजहब, इनके लिबास तो अलग-

अलग हैं रामू की माँ ! लेकिन इनकी रगों में दौड़ने वाले खून का रंग तो एक ही है—बोलो रामू के लिये कौन खून देने को तैयार है ?

गोविन्द : डाक्टर साहब। अगर यह लड़का, जिसको हम गैर समझकर साथ नहीं खिलाते थे—हमारे रामू की जान बचाने के लिये अपना खून देने को तैयार है—तो फिर हम क्यों पीछे रहें—हम भी खून देंगे।

सारे : (अपने हाथ डाक्टर की तरफ बढ़ाकर) हम सब तैयार हैं।

डाक्टर : तो ठीक है—अभी खून टैस्ट कर लेता हूँ।
(डाक्टर अन्दर चला जाता है।)

माँ : मैं समझती थी सिर्फ राम ही मेरा बेटा है–परन्तु नहीं यह मेरी भूल थी—आज मालूम हुआ—कि रामू, रहीम, गोविन्द, जार्ज सभी मेरे बेटे हैं—कोई भी अलग नहीं—कोई भी गैर नहीं—तीनों माँ के चरणों में झुक जाते हैं) पीछे से उसी गीत की आवाज उभरती है।
मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिन्दी हैं हम वतन है, हिन्दोस्तां हमारा।

[पर्दा गिरता है।]

—प्रकाश 'साथी'

———

राजा का बाग

भूमिका :

[इस पद्य-नाटिका के पात्र वास्तव में वे नहीं हैं जो मंच पर दीखते हैं। वे प्रतीक मात्र हैं जिनके माध्यम से राष्ट्रीय एकता के संदर्भ में प्रान्तों की परस्पर आत्मनिर्भरता को व्यक्त करने का प्रयास किया गया है। हम कई बार प्रान्तीयता के संकीर्ण दायरे में सोचने लगते हैं जो व्यापक राष्ट्रीय हितों के लिए हानिकारक होता है तथा राष्ट्रीय एकता को विखण्डित करता है । हमारी इस निर्बलता का लाभ विदेशी शक्तियां उठाती हैं । वे यहाँ विध्वंसात्मक कार्यवाहियाँ आरंभ करवाती हैं और हमारा अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाता है। नाटिका में जिस प्रतीक-योजना का प्रयोग किया गया है, वह इस प्रकार है।]

वन : संपूर्ण देश, एक इकाई से रूप में।

वट : पुरातनता, संस्कृति एवं क्षेत्रफल की दृष्टि से समृद्ध प्रान्त।

नीम : ज्ञान-विज्ञान, तकनीक एवं शिक्षा आदि की दृष्टि से समुन्नत प्रान्त।

गुलमोहर : कला, साहित्य, प्राकृतिक सम्पदा आदि की दृष्टि से आदरणीय प्रान्त।

बबूल : जनशक्ति, उद्योग—व्यापार, उत्पादन, प्रतिरक्षा आदि की दृष्टि से सशक्त प्रान्त।

मंत्री और सेवक राम : देश में काम कर रही विदेशी शक्तियों के प्रतीक जो हमारी संकीर्णताओं तथा आपसी भेदभाव का लाभ उठाकर अपने स्वामी (राजा) की इच्छाएं हमारी भूमि पर पूरी करने की कुटिल योजनाएं बनाते हैं।

लकड़हारे : विध्वंसात्मक विदेशी ताकतें जिनसे हमारा अस्तित्व ही नष्ट होने की संभावनाएं बनी रहती हैं।

[मंच पर जंगल का दृश्य । वट, नीम, गुलमोहर और बबूल के पेड़ों की अनुकृतियां । एक कोने में मंत्री और सेवकराम चुपचाप खड़े हैं। ज्योंही पेड़ों द्वारा अपनी-अपनी प्रशंसा आरंभ की जाती है वे दोनों चकित से एक-दूसरे का ध्यान उस ओर आकर्षित करते हैं और तरह-तरह की मुद्राएं बनाते हैं]

पेड़ों की बातचीत आरंभ होती है।

[ध्वनि नेपथ्य से]

वट (बड़) : मैं इस वन का सबसे बूढ़ा पेड़,
मैं सदियों से खड़ा हुआ हूँ।
अविरल—अविचल,
देख रहा हूँ युग—परिवर्तन,
धूप, हवा, पानी का नर्तन।
मेरी दीर्घ जटाएं मेरी पुण्य-पताका,
दूर-दूर तक जन मेरा ही यश गाते हैं,
थके मुसाफिर मुझसे नवजीवन पाते हैं।
बड़ा मनस्वी, बड़ा तपस्वी,
त्याग भरा घट हूँ।
मैं इस वन का बहुत पुराना वट हूँ।

नीम : वाह रे बूढ़े, नाम बड़े और, गुण हैं थोड़े
लम्बा इतिहास घसीटा है!
मुझको देखो, तन कड़वा है मन मीठा है।
कई युगों से प्राणी मात्र की सेवा में रत,
गाता सारा जग पूत—चरित।
मैं ज्ञान युक्त, विज्ञान युक्त, कितना, महान् ?
देख रहे हो तुम मेरा गौरव—वितान।
व्यापा, दिशि-दिशि मेरा प्रभाव,
खलता सबको मेरा अभाव।
पूजा करते मेरी वैद्य-हकीम,

मैं इस जंगल का नीम।

गुलमोहर : चाहे जो बूढ़ा बतियाये,
नीम कहीं मीठा कहलाए ?
कैसी भौंड़ी शक्लें पाईं,
बदसूरती इन पर शरमाई।
मुझको देखो, सुन्दर और गठीला तन है,
मेरी मुस्कानों को देखो, कैसा प्यारा बांकापन है !
जब-जब मेरे अधर रसीले हैं हिल जाते,
अनायास कितने ही टूटे मन मिल जाते,
झंकृत करता हूं तार-तार,
उर में बिखेरता सदा प्यार,
फिर भी हूँ अविकारी।
मैं उपकारी कला-सरोवर हूँ।
मैं इस वन का छोटा पेड़ गुलमोहर हूं।

बबूल : चाहे तुम सब कुछ भी कह लो,
पार नहीं मुझसे पाओगे।
जब तुम शिशु थे, मैंने ही तो पाला-पोषा,
मुझसा प्यार कहाँ पाओगे ?
पीर भरा मेरा यह तन है,
पर मन में तो मधु का धन है।
जब सबके सब सो जाते हो,
सुख-स्वनों में खो जाते हो,
तब मैं करता हूं रखवाली,
ताने अपने भाले जैसे शूल।
मैं सारे जंगल का रक्षक हूं बबूल।

राज-मंत्री : (कुछ सोचने की मुद्रा बनाते हुए)—अपने साथी सेवक राम से—
सेवकराम, सुनी कुछ तुमने इन पेड़ों की बातें ?
सब अपने को एक दूसरे से ऊँचा बतलाते।
इसका अर्थ हुआ यह इनमें कोई नहीं है ताकत,
फिर भी बढ़-बढ़ बातें करते देखो जरा हिमाकत !

सेवकराम : हाँ मंत्री जी, सब सुनता हूँ बेवकूफ हैं सारे,
इसमें कहने का क्या तुक है, सबके करतब न्यारे।

मंत्री : ठीक समझ तुम पाये, वाह भाई सेवकराम।
बहुत दिनों से रुका पड़ा जो बना हमारा काम।
राजा जी ने मुझे कहा था, 'बाग लगाया जाये,'
और बाग में फिर वे अपना सुन्दर महल बनायें।
मैं महीनों से परेशान हूं जगह नहीं मिलती है,
मिल जाती है जगह कहीं तो बात कोई अड़ती है।
आज मिली है जगह हमारी इच्छा के अनुकूल,
आज यात्रा सफल हो गई खिला हृदय का फूल।

सेवकराम : बहुत ठीक है मंत्री जी, फिर एक एलान करा दो।
इन पेड़ों को काट-कूटकर बाग यहीं लगवा दो।

मंत्री : वाह भई सेवकराम, राय तुम्हारी अच्छी,
तुमने मेरे मन की हालत जानी सच्ची-सच्ची।

[धीरे-धीरे सेवकराम और मंत्री मंच से गुजरते हुए अदृश्य हो जाते हैं]

[ऐलान के स्वर (नेपथ्य से)]

जंगल के पेड़ो सावधान !
कान खोलकर सुनलो यह ऐलान।
आज-आज की और जिन्दगी,
भले बघारो अपनी शान।
कल तुम सब छाँटे जाओगे,
फिर जड़ से काटे जाओगे।
राजा जी का बाग लगेगा,
फल फूलों से खूब सजेगा।

[एक दिन का अन्तराल प्रकट करने के लिये नेपथ्य-वाद्य) (दूसरे दिन चार लकड़हारों का प्रवेश। अपने हाथ की कुल्हाड़ियों से पेड़ों को काट गिराते हैं]

नेपथ्य से --

क्यों भई पेड़ो ?
अब तो तुम को पता चल गया,
'सब समान हैं गुण निधान हैं,
सब ऊँचे हैं सब महान हैं'
फिर फिजूल ही कल करते थे बेहद शोर--
देखा, आज हुए हो साबित तुम कितने कमजोर !
कोई बड़ा, न छोटा होता
जो कोई ऐसा सोचे तो
वह अपनी हस्ती ही खोता ।

--भगवती लाल व्यास

छात्रावास

स्थान : छात्रावास का भवन

[नेपथ्य से घंटी की ध्वनि, परदा उठता है]

एक कठपुतली सबसे पहले रंगमंच पर आती है। रंगमंच के दोनों भागों से अन्य कठपुतलियां आती हैं (3 एक ओर से, 3 दूसरी ओर से) पहली कठपुतली:—प्रिंसिपल

प्रिंसिपल : प्यारे बच्चो। तुम्हें यह जान कर प्रसन्नता होगी कि तुम्हारा एक और मित्र छात्रावास में आज ही आया है उसका नाम है रमेश शर्मा।

(रमेश शर्मा आगे आता है और सबको नमस्ते करता है)

प्रिंसिपल : देखो बच्चो। जो गाना पिछले सप्ताह सिखाया गया था आज इस प्रार्थना सभा में हम सब मिल कर वह गीत गायेंगे।

नेपथ्य से संगीत आरम्भ—

रंगमंच पर सब बच्चे, प्रिंसिपल, छात्रावास का वार्डन हाथ जोड़कर गाते हैं।

प्रार्थना गीत

तू ही राम है, तू ही रहीम है, तू करीम कृष्ण खुदा हुआ,
तू ही वाहे गुरु, तू यसूमसीह, प्रति नाम में तू रमा रहा,
तेरी जात-पात कुरान में, तेरा दर्श वेद पुराण में,
गुरु ग्रंथ जी के बखान में तू प्रकाश अपना दिखा रहा।
तू ही राम है। तू रहीम······
कहीं वाहे गुरु कहीं कीर्तन कहीं रामधुन कहीं आवाहन
विधि वेद का है यह सब रचन, तेरा भक्त तुझ को बुला रहा।
तू ही राम······

(दूसरा दृश्य)

बार्डन के साथ रमेश केवल

स्थान : छात्रावास के तीन कमरे

वार्डन : आओ रमेश। यह देखो कमरा नं० दो है। इसमें एक बंगाली लड़का रहता है और यही तुम्हारा भी कमरा है। और इसमें ही आसिफ नाम का लड़का जो अभी कुछ दिन हुए अलीगढ़ से आया है, वह भी रहता है।

रमेश : नहीं मास्टर जी। मैं मुसलमान छात्र के साथ नहीं रहूँगा।

वार्डन : छात्रावास में जाति पाँति का भेदभाव नहीं देखा जाता।

रमेश : लेकिन मैं क्या करूँ ? छात्रावास भेजने से पहले ही मेरी माता जी ने मुझे यह कहा था कि किसी भी दूसरी जाति के छात्र के साथ न रहना। और हाँ विशेषकर मुसलमान के साथ। मुसलमान तो म्लेच्छ हैं।

[इतने में बंगाली लड़का कमरे में आता है।]

वार्डन : अरे। देखो सुनन्दु तो आ ही गया है। सुनन्दु यह है रमेश आज से यह तुम्हारे कमरे में रहेगा।

सुनन्दु : रमेश। क्या तुम बिहार से आये हो ?

रमेश : क्या तुम भी बिहार से आये हो ?

सुनन्दु : हाँ। रमेश तुम रायल स्कूल में पढ़ते थे ?

रमेश : अरे हाँ। तुम तो मेरे सहपाठी थे। इस छात्रावास में कब से आये हो ?

सुनन्दु : पिछले दो वर्ष से। सर, यह तो मेरा पुराना दोस्त है।

रमेश : सुनन्दु, मुझे तो यह खुशी है कि हम दोनों एक ही कमरे में हैं।

[खुशी से सुनन्दु उसको गले लगाता है]

[वार्डन चला जाता है]

सुनन्दु : रमेश यह तो तुम्हें वार्डन ने बता ही दिया होगा कि इस कमरे में आसिफ नाम का एक लड़का भी है।

रमेश : हाँ। लेकिन मैं आसिफ से बात-चीत भी नहीं करूँगा। जानते हो मुसलमान आज भी हमसे बैर रखते हैं।

सुनन्दु : नहीं रमेश । ऐसा मत कहो । मनुष्य चाहे किसी भी जाति या वर्ग का हो— सब एक समान हैं किसी को घृणा की दृष्टि से नहीं देखना चाहिए ।

(इतने में आसिफ आता है)

वह देखो आसिफ आ गया !

सुनन्दु : आसिफ । मिलो मेरे दोस्त रमेश से ।

आसिफ वालेकुमसलाम । अच्छा तो रमेश भी हमारे साथ इस कमरे में रहेगा ।

सुनन्दु : हाँ आसिफ तुम्हें यह जानकर प्रसन्नता होगी कि रमेश भी तुम्हारी ही तरह क्रिकेट का बहुत अच्छा खिलाड़ी है । (मिलाओ हाथ) (आसिफ और रमेश हाथ मिलाते हैं)

आसिफ : बस । फिर तो एक दिन क्रिकेट का मैच हो जाये । क्यों रमेश बोलते क्यों नहीं……

रमेश : हाँ हाँ । क्रिकेट का मैच जरूर खेलेंगे ।

(पीछे से छात्रावास की घंटी बजती है)

सुनन्दु : अच्छा अब सब लोग चलो । खाना खाने का समय हो गया है ।

(खाना खाने का कमरा)

सुनन्दु, महेन्द्रसिंह, आसिफ, अशोक, रमेश सब बैठते हैं हाथों में प्लेट लेकर
खाना परोसा जा रहा है—
एक प्लेट में मीट देखकर—

रमेश : छि: छि: यहाँ मीट भी बनता है । मैं तो यहाँ खाना नहीं खाऊँगा । मेरी माता जी ने तो पहले ही मुझे चेतावनी दी थी कि मीट, अण्डा, मछलीं कुछ भी न छूना ।

(रमेश उठकर जाने लगता है)

सुनन्दु : अरे रमेश ! यह क्या कह रहे हो ?

[सुनन्दु रमेश को जबरदस्ती कुर्सी पर बैठा देता है]

सुनन्दु : भला यह तो सोचो रमेश । यह छात्रावास है, जहाँ सब मिल कर एक ही मेज पर खाना खाते हैं ।

रमेश : नहीं सुनन्दु मैं इस मेज़ पर खाना नहीं खाऊँगा । यहाँ

तो मीट परोसा जा रहा है। (रमेश कुर्सी से उठ कर चला जाता है। सुनन्दु रमेश को एक कोने में ले जाकर कहता है)

सुनन्दु : मीट प्लेटों में ही है न। तुम्हारे मुंह में तो नहीं आ रहा। तुम शाकाहारी हो तो साग भात खाओ। मीट कोई तुम्हारे मुंह में जबरदस्ती तो नहीं डाल रहा। चलो इन व्यर्थ की बातों को छोड़ो और खाना खाओ।

(सुनन्दु उसको वापिस खाने की मेज पर ले आता है। सब खाना खाते हैं। खाना खा कर जब सब जाने लगते हैं तो सुनन्दु——

सुनन्दु : प्यारे दोस्तो! एक आवश्यक सूचना है। तुम सब बैठ जाओ। तुम्हें यह जानकर खुशी होगी कि आज आसिफ की वर्षगांठ है। इस अवसर पर उसने तुम सबको शाम के जलपान के लिए निमन्त्रित किया है।

(पीछे से आवाज आती है—शुक्रिया, शुक्रिया और सब छात्र जाने लगते हैं)

रमेश : (अपने आप में ही) मैं तो आसिफ के जन्म-दिवस पर नहीं जाऊँगा।

सुनन्दु : चलो रमेश। चलो आसिफ। चलो।

(सब अपने अपने कमरे में जाते हैं सुनन्दु का कमरा)

सुनन्दु : आसिफ। तुम्हारे जन्म-दिवस की पार्टी का सारा इन्तजाम मैं ही करूँगा। और हाँ मेरी तरफ से सब को बर्फी दी जाएगी।

आसिफ : नहीं। सुनन्दु तुम इतनी मदद क्यों करोगे? देखो सुनन्दु कल ही अम्मी का पत्र आया है (हाथ में पत्र लेकर पढ़ने लगता है) अम्मी जी ने लिखा है—मैं तुम्हारी वर्ष गाँठ पर मिठाई का डिब्बा भेज रही हूँ और पुस्तकों का एक सेट भी भेंट रूप में भेज रही हूँ। आगे लिखा है—'खुदा तुम्हारी उम्र लम्बी करे'। आशा है कि तुम क्रिकेट अवश्य खेलते होगे। मुझे इस बात की खुशी है कि तुमने छात्रावास में बहुत से नये दोस्त बना लिए हैं।

—तुम्हारी अम्मी

(आसिफ पत्र को पढ़ कर चूम लेता है)

(दरवाजे पर किसी की दस्तक-चपरासी का आना)

सुनन्दु : अरे ! दिलेराम तुम ! हाथ में क्या लाये हो ।

चपरासी : आसिफ के नाम यह पार्सल आया है ।

(आसिफ—खुशी—खुशी चपरासी के पास से वह पार्सल लेना चाहता है)

आसिफ : आओ । लाओ । जरूर अम्मी ने कुछ भेजा है ।

सुनन्दु : लाओ आसिफ । मैं खोलता हूँ ।

(चपरासी चला जाता है)

(दोनों पार्सल खोलने लगते हैं, रमेश दूर खड़ा सब कुछ देख रहा है ।)

आसिफ : अहा । यह रहा मिठाई का डिब्बा। और यह भारी-भारी चीज़ क्या हैं—अरे सुनन्दु देखो तो यह पुस्तकें–प्रेमचन्द का उपन्यास गोदान, गाँधी जी की आत्मकथा, नेहरू जी की 'भारत की खोज़'

(आसिफ एक एक करके इन किताबों को या मुख-पृष्ठ को दिखाता है — मुख पृष्ठ चार्ट के कटे हुए हैं जिन पर पुस्तकों का शीर्षक और लेखक के नाम हैं ।)

सुनन्दु : अरे । तुम तो उपहार गिनने में लग गए। देखो तो घड़ी में क्या समय हो गया हो । 5 बज गए हैं—चलो चलें जलपान की तैयारी करें ।

आसिफ : अच्छा चलो सुनन्दु । सबको बुलाओ ।

सुनन्दु : अरे महेन्द्र, हमीद अशोक सब चलो ।

(रंगमंच के दोनों कोनों से कुछ छात्रों का प्रवेश)

महेन्द्र : मुबारक हो आसिफ । जन्म दिन मुबारक हो ।

(नेपथ्य से भी कुछ ऐसी ही आवाजें आती हैं । जन्म दिन मुबारक……।)

(आसिफ मिठाई का डिब्बा आगे करते हुए)

आसिफ : लो महेन्द्र मिठाई खाओ, सुनन्दु तुम भी लो । अरे अशोक अच्छा किया तुम सब आ गए । कितना आनन्द आ रहा है

(सब बारी बारी मिठाई खाते हैं)

आसिफ चारों ओर देखता है—

सुनन्दु : आसिफ मियां तुम भी तो खाओ।

आसिफ : सुनन्दु भाई। रमेश कहीं दिखाई नहीं दे रहा। देखों कहीं कमरे में सो तो नहीं रहा। है तो बड़ा पोस्ती। दिनमें भी सोता रहता है।

सुनन्दु : नहीं आसिफ। ऐसी बात नहीं। मैं अभी जा कर उसे यहां लाता हूं।

(सुनन्दु जाता है) रंगमंच पर बाकी छात्र आपस में धीरे धीरे बातें करते हैं।

महेन्द्रसिंह : क्या बात है। रमेश क्यों हम से दूर दूर रहता है। जब देखो अपने कमरे में अकेले बैठे रहता है।

[इतने में सुनन्दु के साथ रमेश]

सुनन्दु : लो आ गया रमेश भी।

आसिफ : आओ। आओ रमेश पता नहीं तुम हम से बात क्यों नहीं करते। एक ही कमरे में हम रहते हैं फिर भी······

सुनन्दु : आसिफ मियां। रमेश को अपनी वर्ष गांठ की मिठाई तो खिलाओ।

आसिफ : अरे हाँ। वह तो मैं भूल ही गया। मिठाई आगे करता है।

रमेश : (आसिफ की ओर) जन्म दिन मुबारक हो (रमेश आसिफ के साथ हाथ मिलाता है)

आसिफ : (हाथ मिलाते हुए) शुक्रिया। लो रमेश यह मिठाई खाओ। मेरी अम्मी ने आज ही भेजी है।

रमेश : नहीं आसिफ। मैं यह मिठाई नहीं खाऊंगा।

सुनन्दु : फिर वही बात।

अशोक : अरे रमेश। आज तो मिठाई खालो।

महेन्द्र : हाँ रमेश। इस शुभ अवसर पर मन से बुरे भाव निकाल दो। आसिफ अपनी प्लेट आगे करता है।

[रंगमंच पर शोर गुल। सब बच्चे रमेश को देखकर एक दूसरे से कुछ कहते हैं। आवाज धीमी है]

आसिफ : लो रमेश खाओ।

रमेश : लाओ आसिफ मियाँ । तुम भी क्या याद करोगे । (उसकी प्लेट में से खाने लगता है)

[सब बच्चे ज़ोर से हँसते हैं तालियों की ध्वनि से रंगमंच गूंजता है ।]

सब बच्चे : (एक साथ) वाह । आज तो आनन्द ही आ गया ।

नेपथ्य से गीत

मानव-मानव एक समान,
क्या हिन्दू क्या मुसलमान ।
ऊँच-नीच के भाव छोड़ दें,
जीवन को इक नया मोड़ दें ।
जाति-पाँति के झूठे बन्धन,
कर दें हम इन सबका मर्दन ।
इसमें ही है सब का मान,
मानव.........

नेपथ्य से गीत की ध्वनि

रंगमंच पर खड़े सब छात्र भी इस गीत में सम्मिलित होते हैं गीत के साथ अभिनय भी करते हैं ।

मानव-मानव एक समान,
क्या हिन्दू क्या मुसलमान ।
ऊँच-नीच के भाव छोड़ दें,
जीवन को इक नया मोड़ दें ।
जाति-पाँति के झूठे बन्धन,
कर दें हम सब इन का मर्दन ।
इस में ही है सब का मान ।
मानव-मानव एक समान ।।
निर्मल बने हम गंगा जल से,
कोमल बने हम फूल कमल से ।

मन दर्पण-सा स्वच्छ बनाएं,
भाई चारे को हम फैलाएं।

हम से ही भारत की शान।
मानव-मानव एक समान।।

सारा विश्व हमारा घर हो,
भारत-माँ हमें प्यारी हो।
घृणा-द्वेष 'औ' वैर मिटा दें,
दोस्ती का हम हाथ बढ़ा दें।

यही है सबसे बात महान्।
मानव-मानव एक समान।।

—स्वर्ण रत्ना

———

स्वर्ग-सम्मेलन

स्थान : स्वर्ग का एक भव्यभवन।

समय : ढलती दुपहरी।

[देवराज इंद्र, गांधीजी, तिलक, रवीन्द्र, मौलाना आजाद, चंद्रशेखर आज़ाद, भगतसिंह सभी यथास्थान बैठे हैं]

इंद्र : गाँधी जी ! आप अच्छे तो हैं ?

गांधी : (अन्यमनस्कता से) हाँ सब कुछ ठीक ही है।

इंद्र : आपके मुखमण्डल एवं वाक्यावली ने आपके अंतर की उदासी प्रकट कर दी है।

गाँधी : बात कुछ ऐसी ही है देवराज ! आपका कथन सत्य है। मुझे भारत की निरन्तर चिन्ता बनी रहती है।

इंद्र : ऐसी क्या बात है गाँधी जी ?

गाँधी : एक लम्बे संघर्ष के पश्चात् भारत स्वतन्त्र हुआ और बेचारा स्वतन्त्र होते ही नाना समस्याओं से घिर गया है।

[देवदूत का प्रवेश]

इंद्र : (देवदूत से) कहो देवदूत प्रसन्न हो ?

देवदूत : हाँ देवराज ! आपकी कृपा से सर्वथा कुशल है।

गाँधी : देवदूत ! आप संसार में विचरण करते रहते हैं। भारत में आप अवश्य गए होंगे। मैं उसके विषय में जानने को उत्कण्ठित हूँ।

देवदूत : यह संयोग की ही बात है गांधी जी ! मैं अभी-अभी वहीं से आ रहा हूँ। आजकल भारत आर्थिक सुधार के पथ पर अग्रसर है। स्थान-स्थान पर कल कारखानों का जाल बिछाया जा रहा है। बाँध बाँधे जा रहेहैं। बिजली उत्पन्न

की जा रही है परन्तु धर्म और आध्यात्मिकता का अभाव होता जा रहा है। एकता लुप्त हो गई है।

तिलक : यह तो अच्छा समाचार नहीं सुनाया देवदूत ! धर्म और आध्यात्मिकता ही तो भारत के प्राण रहे हैं। यही बात मैंने गीता रहस्य में भी लिखी है। रही एकता के लोप होने की बात तो किसी भी उदीयमान देश के लिए यह शुभ लक्षण नहीं है।

पटेल : बड़े खेद का विषय है ! कठोर परिश्रम, अथाह धैर्य और निरन्तर संघर्ष से प्राप्त एकता का इतना शीघ्र अन्त हो जाएगा इसकी मैंने कल्पना भी नहीं की थी।

[जवाहर लाल I क प्रवेश]

देवदूत : (जवाहर लाल की ओर संकेत कर के) यह लो पण्डित जी इधर ही आ रहे हैं वे आपको भारत के विषय में स्वयं बताएंगे । जवाहर लाल सब को प्रणाम करके बैठ जाते हैं।

गाँधी : (जवाहरलाल के कंधे पर हाथ रखकर) बताओ जवाहर ! भारत की कैसी दशा हैं ?

जवाहर : [बायां हाथ मोड़कर ठोड़ी के नीचे औंधा लगाकर चिन्ता की मुद्रा में]

गाँधी जी : (जवाहर को हिलाते हुए) बोलते क्यों नहीं जवाहर ?

जवाहर लाल : क्या बताऊँ बापू ! एक समस्या हो तो। कहीं चीन मित्र बनकर मित्र-घात करता है तो कहीं पाकिस्तान घात लगाए बैठा है । एक ओर प्रांतीयता उभर रही है तो दूसरी ओर सम्प्रदायवाद के पेट में दर्द हो रहा है। राष्ट्रभाषा समस्या ने अलग उग्ररूप ले लिया है।

गाँधी जी : किन्तु यह समस्या तो मेरे भारत रहते संविधान द्वारा सुलझा ली गई थी ।

मौलाना आजाद : पंडित जी ! दरअसल भाषा का मसला तो हमने नया आइन बनाकर सदा के लिए तय कर दिया था।

गाँधी : यही तो मैं कह रहा हूँ। भारत के सभी वर्गों के, प्रान्तों के

कानूनदानों ने खूब सोच-विचार के पश्चात् एक राष्ट्रभाषा बनाई थी ।

मौलाना : इसमें ज़्यादह सोचने की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ी थी ।

चन्द्रशेखर : (जवाहर लाल से) लेकिन क्या मेरा भारत आज ऐसी भाषा जैसी बचकानी समस्याओं का शिकार हो गया है? यह सब क्या हो रहा है ? हम क्रांतिकारियों ने देश की स्वतन्त्रता के लिए कभी नहीं सोचा था कि हम किस भाषा में बातें करें ।

भगतसिंह : आज़ाद भाई ! मैं इतना ही जानता हूँ, बंगाली, पंजाबी गुजराती, हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख हम सब एक देश के बेटे हैं। इनकी भाषा चाहे जो हो पर मां सब की एक है ।

सुभाष : (खड़े होकर हाथ ऊपर करके के) मुझसे पूछो, हम आज़ाद हिन्द फौज में क्या हिन्दू, क्या सिक्ख, क्या मुसलमान, क्या बंगाली क्या गुजराती और क्या पंजाबी सब एक झण्डे के नीचे खड़े थे। (तिरंगा झण्डा प्रदर्शन) हमारा एक निशान था टीपू सुल्तान का सिंह (सिंह मूर्ति का प्रदर्शन) एक नारा था (मुट्ठी बांध कर) 'दिल्ली चलो' हम गाते थे—
दिल्ली ने निज द्वार खोल कर हमको अभी पुकारा है ।
जामामस्जिद बिरला मंदिर जहाँ बना गुरद्वारा है ।।
जहाँ पावनी जमना जल की बहती निर्मल धारा है ।
करना ही अधिकार उसी पर पहला काम हमारा है ।।
—और आज क्या से क्या हो गया !

रवीन्द्र : (बीच में) मैं बीच में ही बोलने की धृष्टता कर रहा हूँ सुभाष !

सुभाष : बोलिए गुरुदेव ! बोलिए ।

रवीन्द्र : हमने सदा सुजलां, सुफलां, सस्यश्यामलां भारत माता का रूप देखा था, भले ही मैं बंगाली बोलता हूँ, भगतसिंह पंजाबी में बातें करते हैं, मौलाना साहब की भाषा उर्दू है और गाँधी जी की मातृभाषा गुजराती है, परन्तु इन सबकी जड़ में एक ही भाषा है और वही हम

भारतीयों की एक मात्र राष्ट्रभाषा। (लालबहादुर शास्त्री का प्रवेश। शास्त्री जी सब को हाथ जोड़ कर प्रणाम करते हैं)

जवाहर : शास्त्री जी ! खुश हो ?

लाल बहादुर : (सिर हिलाकर हाथ जोड़कर) हाँ पंडित जी ! सब ठीक है।

गाँधी जी : शास्त्री जो, आप जैसे त्यागी एवं कर्मठ पुरुषों के हाथों में भारत ऊपर उठा है। परन्तु देवदूत से जो कुछ सुना है उससे मन को प्रसन्नता नहीं मिली है। आप भी कुछ बताएं क्या दशा है भारत की ?

लाल बहादुर : पंडित जी के इधर आने के पश्चात् मुझे ऐसा लगने लगा जैसे देश उत्तर और दक्षिण दो घंटों में बँट जाएगा। देश के अनेक भागों में भाषा को लेकर विध्वंसात्मकदृश्य उपस्थित हुए। बड़े-बड़े नेताओं के मस्तिष्क भी सन्तुलन खों बैठे। तभी पाकिस्तान का आक्रमण हुआ। मैंने जय जवान जय किसान का नारा लगाया और देश में एकता की लहर दौड़ गई।

गाँधी : फिर क्या हुआ ?

लाल बहादुर : फिर क्या था, देश ने एक होकर पाकिस्तान को खदेड़ दिया। मैंने शाँति के लिए रूस जाकर अय्यूब खाँ से ताशकन्द में समझौता किया और वहीं से इधर चला आया।

जवाहर : आजकल कुछ फिर गड़बड़ी के समाचार मिले हैं। आपको तो सब पता होगा देवदूत !

देवदूत : हां पंडित जी ! मैं सभी बताता हूँ। इस समय भारत में पुनः विघटनकारी प्रवृत्तियाँ उभर रही हैं। एक ओर नक्सलवाद अपनी तोड़फोड़ की नीति के साथ उभर रहा है तो दूसरी ओर साम्प्रदायिकता का विष तेजी से फैल रहा है। एक ओर बंगाल में खुले आम चीनी प्रभाव बमों और अस्त्र शस्त्रों से जनता को आतंकित कर रहा है तो दूसरी ओर अहमदाबाद और भवंडी में धर्मान्धों का वीभत्स ताण्डव नृत्य हो रहा है।.........

पटेल : (बीच में ही) बस, बस देवदूत ! अब नहीं सुना जाता। अँग्रेजों की कूट नीति के दुर्ग को छिन्न भिन्न करके छः सौ रियासतों का वह एकीकरण ? (गांधी जी से) ओह बापू ! यह क्या हो गया है। क्या आपका बलिदान व्यर्थ गया ?

गाँधी जी : ऐसा प्रतीत होता है सरदार ! मुझे फिर से वहाँ जाना होगा। भारत वासी मेरे अहिंसा, सत्य और प्रेम के पाठको भूल गए हैं ! मुझे यह पाठ उन्हें पुनः पढ़ाने होंगे। भारत को भाषा की, जातिवाद की, प्रान्तवादकी और पृथक्ता वाद की भाषा भुला देनी होगी और उसकी एकता और अखण्डता को बनाए रखने के लिए जी जान से जुट जाना होगा। इसी में उसका और विश्व का कल्याण निहित है।

भारत को मुझ से प्यार घना मुझ को भी भारत प्यारा है।
भारत को एक बनाना ही अब पहला काम हमारा है ॥

—रामेश्वरदयाल शास्त्री

———

नया सूरज

काका : एक समझदार पागल (आयु लगभग 60 वर्ष)।

रमेश : एक सम्पन्न ब्राह्मण और काका का भतीजा (आयु लगभग 40 वर्ष)।

शर्मा : रमेश का नौजवान लड़का।

सीमा : एक आदिवासी प्रौढ़ किसान।

चेरिया : सीमा की नौजवान लड़की और शर्मा की प्रेमिका।

[भोर का समय है। परदा उठता है तो काका एक सुनसान टीले पर बैठा बांसुरी बजा रहा है। चिड़ियों आदि के चहचहाने की आवाज़ भी बीच बीच में सुनाई देती रहती है।]

रमेश : (पहचानने की कोशिश करते हुए जैसे अपने आप से) यह यह इस समय टीले पर कौन बाँसुरी बजा रहा है? (फिर चौंक कर) अरे, यह तो पागल काका मालूम होता है। (फिर ज़ोर से) कौन, काका?

काका : (बांसुरी रोककर)—हाँ बेटा रमेश। मैं हूँ। कहो अच्छे तो हो।

रमेश : सब भगवान की कृपा है काका। पर तुम यह अंधेरे टीले पर बैठे क्या कर रहे हो?

काका : (बड़ी अबोधता से)—अपने सबेरे को बुला रहा हूँ। देखो न, कितनी देर हो गई है। इतनी बांसुरी भी बजाई। पर जाने कहाँ रह गया है कि अभी तक आया ही नहीं (करीब आ जाता है)

रमेश : (हंसता हुआ)—सबेरे को बुला रहे हो? (फिर हंसता है) और वह भी बाँसुरी बजा कर? तुम भी खूब हो काका।

भला सबेरा भी कभी बांसुरी बजाने से आया है ? अरे काका, वह तो बस समय पर आता है। समय पर।

काका : (अचानक उत्साह से भर कर)—समय पर आता है ? समय तो हो गया। फिर यह धुँधलका क्यों छाया है ? अंधेरा क्यों है ? सूरज क्यों नहीं निकलता ?

(हल्का पोज: फिर अचानक नर्म पड़ते हुए धीमी आवाज़ में) पर······पर क्या पता, सूरज निकल भी गया हो, और हम उन ऊँची-ऊँची दीवारों के कारण उसे देख नहीं पा रहे हों।

रमेश : (आश्चर्य से) कौन सी दीवारों के कारण काका ?

काका : (दूर दाईं विंग की ओर इशारा करता हुआ)—वही, वही जो दूर यहां से वहाँ तक नज़र आ रही है। जहाँ से हमेशा सूरज निकलता है।

रमेश : (खुश होकर बड़े गौरव से) अच्छा······अच्छा वह। वह तो मस्जिद, मन्दिर, गुरुद्वारा और गिरजे की इमारतें हैं। (फिर खुशी से फूली सांसों को रोकते हुए) बताओ काका होगा कोई ऐसा आदर्श गांव ? जहां मस्जिद, मन्दिर, गुरुद्वारा और गिरजा इस तरह पास पास एक साथ खड़े हों। जहां एक ही समय में पुजारी भगवान की आरती उतारता हो, सिक्ख ग्रंथ साहब का पाठ करते हों, मुल्ला अजान देता हो और ईसाई अपने पवित्र बाप की इबादत करते हों। सच कितना महान् है हमारा यह गाँव। है न ?

काका : हाँ है। जरूर मगर······मगर मेरा सूरज क्यों नहीं निकलता। उसे इन इमारतों ने क्यों छिपा रखा है ?

रमेश : तुम्हारी तो अक्ल मारी गई है काका। (फिर सिर हिलाता हुआ धीमे लहजे में) गाँव वाले ठीक ही कहते हैं। पागल हो, बिलकुल पागल।

काका : (डबडबाई आवाज़ में) हाँ भाई, मैं पागल हूँ। पागल हूँ तभी तो सूरज का इंतजार करता हूँ। सवेरे की राह

देखता हूँ। अगर पागल न होता तो मैं भी तुम्हारी तरह ब्राह्मण होता। मेरा भी मान होता। मैं भी……

रमेश : (बात काटते हुए बड़े दुख भरे स्वर से)—राम-राम, कैसी बातें करते हो काका। कौन कहता है तुम ब्राह्मण नहीं। तुम तो हमारे ही वंश के ब्राह्मण हो। आसपास के दस बीस गाँवों में भी ऐसे उच्च वंश के ब्राह्मण नहीं होंगे। (फिर और भी दुख भरे स्वर से) मगर तुम तो सब कुछ भूल गए हो काका—सब कुछ भूल गए। यह भी भूल गए कि तुम मेरे सगे काका हो।

काका : नहीं, नहीं, मैं तुम्हें कैसे भूल सकता हूँ। तुम मेरे बड़े भाई के लड़के हो। मैं तुम्हारा काका हूँ। और मुझे तो यह भी याद है कि मैं पूरे गाँव का काका हूँ। बिल्कुल सगा काका। सभी मुझे काका कहते हैं—रहीम भी, सीमा भी और जूलियम भी। फतहसिंह का भी मैं काका हूँ और तुम्हारा भी। मगर तुम मुझे क्यों नहीं बताते कि यह अंधेरा कब तक रहेगा ? सूरज कब निकलेगा ?

रमेश : (निराशा से)—भगवान जाने (फिर सोचते हुए) अच्छा काका, चलता हूं। किसान खेतों पर इंतजार कर रहे होंगे।

काका : (बिगड़कर) क्यों इंतजार कर रहे होंगे ? वह इधर इस टीले पर क्यों नहीं आते ? यहीं मिलकर मेरे साथ सूरज का इंतजार क्यों नहीं करते ?

रमेश : (दुःख के साथ)—बड़ा मुश्किल है तुम्हें समझाना काका।

काका : मगर मैं समझूंगा और जरूर समझूंगा। और तुझे भी मेरे सवाल का जवाब देना ही पड़ेगा। वरना··वरना सब को यहां आना पड़ेगा। देख लेना (फिर अचानक नर्म पड़कर रमेश की झोली की ओर इशारा करता हुआ) खैर छोड़ इन बातों को। यह बता, यह तेरी झोली में क्या है ?

रमेश : इस साल मूंग की खेती करनी है काका। यह उसी का बीज है।

काका : अच्छा तो मुझे भी एक मुट्ठी देता जा।

रमेश : यह लो काका। (तनिक रुक कर) भगवान से प्रार्थना करना कि फसल अच्छी हो।

काका : जरूर अच्छी होगी। किसानों से कहना कि वे मेहनत से काम करें। मेहनत से हमेशा अच्छी फसल होती है। (क्षणिक विराम) अच्छा अब मैं भी टीले पर चलता हूँ ज़रा देखूँ तो कितनी देर है।

[टीले पर चढ़ने लगता है]

रमेश : (चलते हुए) —राम-राम काका।

काका : राम-राम।

(रमेश चला जाता है) इधर काका फिर उसी जगह टीले पर बैठ कर बांसुरी संभाल लेता है। कुछ देर तक वातावरण में उसकी बांसुरी की अलबेली और लम्बी तानें अपना जादू जगाती रहती हैं।

सीमा : (दूर से) राम राम काका।

काका : (बांसुरी रोककर) कौन, सीमा भाई ? राम राम। कहो, अच्छे तो हो ?

सीमा : सब ऊपर वाले की कृपा है काका।

काका : (सिर हिलाता हुआ) ठीक कहते हो, बादल बड़े मेहरबान होते हैं। देखो कल शाम जो वर्षा हुई तो धरती कैसी महक उठी। ऐसे, जैसे किसानों को बुला रही हो। है न ?

सीमा : हाँ काका, यही एक खुशबू तो अपनी है। इसी खूशबू की पुकार पर निकल पड़ा हूँ ताकि थोड़े से खेत जो पास हैं, उनमें और कुछ नहीं तो यह मोठ बो आऊँ···

काका : अच्छा, अच्छा, मोठ लगा रहे हो। बहुत अच्छा विचार है। मुझे भी एक मुट्ठी देते जाओ।

सीमा : (बड़ी श्रद्धा से) —एक क्या, दो मुट्ठी लो काका।

काका : ठहरो, जरा यह अंगोछा खोल लूं। (फिर बड़े आश्चर्य से) अरे, यह तुम इस तरह क्यों दे रहे हो। क्या मैं कोई अछूत हूँ ?

सीमा : राम राम कैसी बातें करते हो काका। अछूत तो हम हैं। तुम तो ब्राह्मण हो। इसीलिए···इ···इसीलिए डर रहा

था कि कहीं मुझ जैसे आदिवासी ऊरांव से छू गए तो···

काका : (बात काट कर, आहत स्वर में) क्यों गाली देते हो भाई ? क्या मैं तुम्हारी तरह इंसान नहीं हूं। क्या मेरा दिल भी तुम्हारी तरह नहीं धड़कता ? क्या मेरे आँसुओं का तुम्हारे आँसुओं से कोई रिश्ता नहीं ? फिर···फिर यह भेदभाव क्यों ? इंसान इंसान के बीच ये दीवारें क्यों हैं ? आखिर ये चहरदीवारियाँ कब तक हम सब के बीच रहेंगी। कब तक हम सब अकेले घुटते रहेंगे ? बताओ ? बताओ सीमा भाई ?

सीमा : (अत्यधिक श्रद्धा से) तुम तो देवता हो काका, बिल्कुल देवता। जाने यह दुनिया कैसी है जो तुम्हें पागल कहती है।

काका : (दुखी स्वर से)—दुनिया बहुत अच्छी है बेटा, बहुत अच्छी है। मगर ये दीवारें बहुत बुरी हैं। आज इन्हीं दीवारों ने इंसान की सारी खूबियों और अच्छाइयों को कैद कर रखा है और अंधेरे का ऐसा जाल फैला रखा है कि हम अपने को भी भूल गए हैं। हम यह भी भूल गए हैं कि हम सब एक ही मनु और शतरूपा या एक ही आदम और हौआ की औलाद हैं। सब इसी धरती के बेटे है। (खांसता है) उफ, कैसा अंधेरा है। सबेरा क्यों नहीं होता ? सूरज कब निकलेगा।

सीमा : बस निकलता ही होगा काका। अच्छा अब मैं चलता हूँ (बाएँ विंग की ओर बढ़ता है)

काका : (खांसता हुआ) अच्छा चले जाओ, पर ज़रा देखते जाना, मेरा सूरज इन दीवारों के पीछे तो नहीं रह गया है।

सीमा : मगर, मैं तो पश्चिम की ओर जा रहा हूं काका। अच्छा राम राम।

काका : (बुझे दिल से)—राम राम।

(हल्की खामोशी) फिर अपने आप से···

सीमा भी पश्चिम की ओर जा रहा है। रमेश भी पश्चिम की ओर ही गया है। दोनों के खेत इधर ही हैं।

आखिर पूरब की ओर किसी के खेत क्यों नहीं है ? उधर कोई क्यों नहीं जाता मेरे सूरज को जाकर क्यों नहीं बताता कि कब से उसकी राह देख रहा हूँ ।
(इतने में दूर से पायलों की झंकार उभरती हैं। काका चौंक कर अपने आप से……) यह……यह कौन आ रहा है ? एक नौजवान लड़का और एक लड़की ? (जैसे हाथ माथे पर लेजाकर बड़े गौर से देखता है। फिर चौंककर) अरे, यह तो रमेश का लड़का शर्मा मालूम होता है और लड़की ? लड़की चेरिया लगती है, सीमा की लड़की चेरिया…हां, हां वही दोनों हैं (तनिक रुककर) मगर…मगर ये दोनों इस तरह डरते डरते क्यों आ रहे हैं ? लगता है इन्हें डर है कि कोई देख न ले…आखिर इन्हें किस का डर है…? मुझे जाना चाहिये जरूर जाना चाहिये…अच्छा तो मैं इस टीले के पीछे छुप जाता हूं।

[पायलों की झुन झुन धीरे-धीरे मंच की ओर निकट आ जाती है। और फिर शर्मा और चेरिया घबराहट में पीछे मुड़कर देखते हुए बाईं ओर से मंच पर प्रकट होते हैं। चेरिया बहुत घबराई हुई है।]

चेरिया : आओ शर्मा जी यहां पर बैठ जाएं। यहां हमें कोई नहीं देख सकता।

शर्मा : (पास बैठते हुए गम्भीर आवाज में) मगर चेरिया, हम कब तक इस तरह छिप छिप कर मिलते रहेंगे ? आखिर कब तक…?

चेरिया : (बीच ही में) बस इसी जन्म तक शर्मा जी। इस के बाद कोई हमें अलग नहीं कर सकेगा ! कोई नहीं।

शर्मा : (गम्भीरता और भरोसे के साथ) मगर, मैं इसी जन्म में मिलना चाहता हूं, बिलकुल इसी जन्म में। अब मैं अपने प्यार के बीच किसी बन्धन, किसी रुकावट को बर्दाश्त नहीं कर सकता।

चेरिया : (निराशा से) यह तो नामुमकिन है शर्मा जी, बिलकुल नामुमकिन। भला सोचो तो। कभी ऐसा हुआ भी है।

शर्मा : कभी नहीं हुआ तो क्या ? अब होगा। जरूर होगा। हर नए कदम के लिये किसी न किसी को पहल करनी ही पड़ती है। यह पहल मैं करूँगा।

चेरिया : मगर, तुम धरती को रीत के खिलाफ़ तो नहीं जा सकते। यह उसी का फैसला है, हम तुम कभी नहीं मिल सकते, कभी नहीं,……।

शर्मा : (जोश भरे स्वर से) ज़रूर मिल सकते है चेरिया, ज़रूर मिल सकते हैं। सारे क़ायदे और कानून इंसान बनाता है। अपने और समाज के फ़ायदे के लिये बनाता है। ताकि मनुष्य सुखी रहे, समाज मजबूत हो। मगर जब वही कानून उस के पांवों की बेड़ियाँ बनने लगे, जब समाज को खोखला और कमज़ोर बनाकर वर्गों और जातियों में बंटने लगे, तब ऐसे नियमों को तोड़ देना ही हमारा कर्तव्य है और मैं अपना यह कर्तव्य जरूर निभाऊंगा। हाँ, मैं ऐसे किसी कानून को मानने के लिये तैयार नहीं जिस की नींव इंसानियत की लाश पर रखी हो। यह मेरा अटल फैसला है।

चेरिया : मगर, इस फैसले के बावजूद क्या यह सच नहीं कि तुम एक ब्राह्मण हो और मैं………मैं एक ऊरांव आदिवासी। तो क्या समाज इस मिलन को बर्दाश्त कर सकेगा ? ज़रा सा सोचो तो…………।

शर्मा : (बीच में ही उत्साह से) बहुत सोच चुका हूँ चेरिया, बहुत सोच चुका हूं और हर बार इस नतीजे पर पहुँचा हूं कि बस हम सब इंसान हैं। केवल इंसान, जिन में कोई अछूत नहीं कोई नींच नहीं, समझी।

चेरिया : लेकिन धर्म तो कहता है कि जन्मजात ऊरांव हूँ और तुम एक जन्मजात ब्राह्मण। तो क्या धर्म गलत कहता है?

शर्मा : मैं नहीं जानता कि धर्म मनुष्य के बीच कोई दीवार भी खड़ी करना चाहता है। वैसे इतना जरूर जानता हूं चेरिया कि हर धर्म एक रंगीन शीशा है। एकरंगीन

ऐनक जिस तरह बच्चे कभी-कभी अपनी पसन्द के लाल, पीले चश्मे अपनी आंखों पर चढ़ाकर उन्हीं रंगों में दुनियां को रंगीन देखते हैं, ठीक उसी तरह विभिन्न मजहबों और धर्मों के लोग भी सत्य और हकीकत को अपनी-अपनी पसन्द की ऐनकों से देखना चाहते हैं, देखते भी हैं। मगर इसके ये मायने तो नहीं कि वे हरा चश्मा लगाकर दुनिया की हर चीज को भी हरा ही समझने लगे और ठंडे और शीतल जल को भी ज़हर समझकर प्यास से खुदकुशी कर लें। और अगर ऐसी परिस्थिति हो जाए तो हमारा सब से बड़ा धर्म यही है कि हम धर्म के उस झूठे चश्मे को उतार फेंके। रंगों के उस मुलम्मे को खुरच डाले जो इंसान-इंसान के बीच दीवारें खड़ी करता है और जो हम से हमारी हकीकत, हमारी इंसानियत और हमारी मुहब्बत तक छीन लेना चाहता है।

चेरिया : (आशा भरे स्वर में)—तो क्या तुम्हारे पिताजी शादी की आज्ञा दे देंगे। क्या गांव वाले एक अछूत और एक ब्राह्मण के मिलाप को सहन कर लेंगे ?

शर्मा : हमारे पिताजी और गांव वाले भी मनुष्य हैं। उन में भी इंसान का वही दिल है जो हमारे और तुम्हारे शरीरों में धड़कता है। अगर हम उन्हें समझायें तो वह आज नहीं तो कल ज़रूर समझ जायेंगे। (तनिक रुककर) मैंने सोच रखा है, आज पिताजी से साफ-साफ कह दूंगा कि मैं चेरिया से शादी करना चाहता हूँ। मेरा ख्याल है कि वह मान जायेंगे। उन्हें मानना ही चाहिए। और अगर किसी वजह से न माने तो भी हमें बालिग होने के नाते इस बात का अधिकार है कि हम धर्म और जाति के इस झूठे बंधन को तोड़कर कानूनी तौर पर एक दूसरे से शादी कर लें और हम ऐसा करेंगे। अपनी मुहब्बत के लिये और छुआ छूत और जात पाँत के इन गलत बन्धनों को हमेशा के लिए तोड़ने के लिए भी···और तुझे भी साथ देना होगा, डटकर दुश्मनों से मुकाबला करना होगा।

चेरिया : (प्यार से विह्वल आवाज में) मैं कब तेरे साथ नहीं हूँ शर्मा ।

[प्यार के नशे में डूब जाती है]

संगीत के स्वर मुखरित हो उठते हैं । फिर अचानक चौंक कर (आकाश की ओर देखते हुए) अच्छा शर्मा जी, अब मैं चलती हूँ । सूरज निकलने वाला है ।

[वाक्य जैसे पूरा होता है पीछे आहट होती है काका रहस्यमय मुस्कान के साथ प्रकट होता है ।)

शर्मा : (घबराहट में) कौन ? काका । (दोनों खड़े हो जाते हैं) (पास आते हुए प्रसन्नता से गद्‌गद् होकर) हां-हां, मैं हूँ । सूरज निकल गया········सूरज निकल गया ············ सवेरा हो गया ।

चेरिया : (आश्चर्य से) —सूरज निकल गया·········

काका : सवेरा हो गया मगर कहाँ काका ? सूरज तो अभी निकलने वाला है ।

काका : (बिल्कुल उसी अंदाज में) —हां-हां बेटी, सूरज निकल गया । असल सूरज जो केवल दिल के आकाश पर निकलता है और उसके क्षितिज पर मुस्कराता है और एक बार चमक कर उठने के बाद कभी मन्द नहीं पड़ता । कभी नहीं मुरझाता । वह असल सूरज आज निकल गया है । अब किसी दिल में अंधेरा नही रहेगा·········किसी भी दिल में अंधेरा नहीं रहेगा ।

शर्मा : (आश्चर्य से) तुम तो पहेलियां बुझा रहे हो काका । मैं कुछ समझा नहीं । आखिर··············?

काका : (बात काटकर) मगर मैं समझ गया हूँ । मैं समझ गया हूँ । अब किसी भी दिल में अंधेरा नहीं रह सकता । बिल्कुल नहीं रह सकता—सूरज जो निकल गया है ।

[बांसुरी बजाते हुए दीवानों की तरह नाचने लगता है अंगोछा कंधे से गिर जाता है ।]

चेरिया : हाय काका । तुम तो शराबियों की तरह नाचने भी लगे ।

श्रौर यह लो, श्रपना श्रंगोछा भी गिरा डाला। जाने क्या कुछ बांध रखा है इसमें ?

काका : (बांसुरी रोककर जैसे श्रंगोछा उठाते हुए)—इस में ? एक कोने में मूंग बंधी है जो रमेश दे गया है श्रौर दूसरे कोने में तेरे बाप सोमा का दिया हुश्रा मोठ है। मगर……मगर मैं तो भूल ही गया किस कोने में मूंग है श्रौर किस कोने में मोठ। किस कोने में मोठ…………किस कोनें मूंग ? हाय, मैं तो बिल्कुल ही भूल गया। जरा छूकर बता तो बेटा।

शर्मा : (श्रंगोछा लेकर दोनों कोनों को टटोलता हुआ) कैसे बताऊं काका, दोनों तो एक से लगते हैं। मूंग मोठ में कौन छोटा।

काका : (फिर नाचने लगता है) ठीक कहते हो, ठीक कहते हो। मूंग मोठ में कौन छोटा। सब बराबर हैं………सब श्रनाज बराबर हैं, इन्सान बराबर हैं………कोई छोटा नहीं, कोई बड़ा नहीं………सब एक थे, एक हैं।

(खुशी से झूमता हुश्रा बांसुरी बजाने लगता है।)

शर्मा : (श्राश्चर्य से) श्राखिर तुम्हें हो क्या गया है काका, जो खुशी से फूले नहीं समा रहे हो।

काका : (जैसे श्रागे बढ़ता हुश्रा : बांसुरी रोककर)—कुछ नहीं, कुछ नहीं। बस श्राज मैंने श्रपने श्रसल सूरज को देख लिया है………श्रब कोई श्रन्धेरा नहीं रह सकता……… बिल्कुल नहीं रह सकता………मैं जा रहा हूं, ताकि दुनियाँ वालों को बता सकूं श्रसल सूरज निकल गया है। ………श्रसल सूरज निकल गया है………।

—जफ़ीर श्रहमद

———

वेटिंग-रूम

शायर : उर्दू का शायर,
गुलाव : गुजराती,
नरगिस : गुलाब की बीबी
बूटासिंह : पंजाबी सरदार,
पंडित कृष्ण : हिन्दी बोलने वाला पंडित,
मीरा : पंडित की पत्नी,
स्वामी : मद्रास प्रान्त का एक नौजवान,
टिकट कलक्टर : रेलवे का टिकट कलक्टर

[पर्दा उठता है]

(सामने एक सैंकिन्ड क्लास का वेटिंग रूम नज़र आता है। वेटिंग रूम के बीच में एक गोल मेज रखा है। उसके दाएं बाएं दो कोच रखे हैं। दीवालों पर विभिन्न हिल स्टेशनों के फोटों लगे हुए हैं। विजिट काश्मीर (Visit Kashmir) विजिट शिमला (Visit Simla), नैनीताल वगैरा। बीच वाली नेज पर एक उर्दू के शायर साहब बिस्तर लगा कर लेटे हुए हैं। शेर हुए गुन गुनाते हैं।)

शायर : आंखों के आंसू खत्म हुए……नहीं नहीं खत्म नहीं हुए खुश्क हुए।
आंखों के आंसू खुश्क हुए अब खून के आंसू बहते हैं,
परवाने तो जल कर खत्म हुए हम जल के जिन्दा रहते हैं। (घड़ी देख कर) सुभान अल्लाह ! गाड़ी आने का छोड़, गाड़ी जाने का वक्त भी निकल गया। कोई बात नहीं। गाड़ी निकल गई तो क्या हुआ। एक शेर तो आ गया वाह ! वाह ! क्या खूब शेर आया हैं दिमाग में। सुभान अल्लाह ! और नहीं आया। (बाहर की तरफ मुंह करके आवाज देता है) कुली-कुली (बाहर के दरवाजे से सर पर अटैची वगैरा उठाए हुए छोटे कद का आदमी। उमर लगभग ४०

साल, कपड़ों से गुजरात प्रान्त का रहने वाला मालूम होता है, अन्दर दाखिल होता है)

गुलाब : जी आपने मुझे बुलाया सेठ जी ।

शायर : जी नहीं मैं तो कुली……

गुलाब : कुली तो को न शै मैं शू मैं ।

शायर : जी हां आप आप ही हैं—आदाब अर्ज हैं ।

गुलाब : आपकी अर्ज तो फिर सुनुं सेठ जी, पहले म्हारी अर्ज शुन लिया । म्हारा जरा शामान उतरवाइया सेठ जी

शायर : मुआफ कीजिए किबला मुझे फुरसत नहीं ।

गुलाब : अरे जरा हाथ लगवाया शेठ जी ! वाह वाह रे शे शेठ जी, हमारा बन्टोडार कर देगा शेठ जी ।

शायर : तुम लोग कितने कंजूस होते हो, कुली के खर्च से कतराते हो । मुझे मुआफ करो किबला मुझे फुरसत नहीं—(फिर उसी शेर को गुन गुनाने लगता है)

आखों के आंसू खुश्क हुए अब खून के आँसू बहते हैं । परवाने तो जल कर खत्म हुए……

[एक सुन्दर नौजवान औरत 'नरगिस' मारवाड़ी की बीबी हाथ में जापानी पंखा लिये अपने आपको पंखा करती हुई अन्दर दाखिल होती है]

[शायर उसे देख कर सब कुछ भूल जाता है]

शायर : परवाने तो जल कर खत्म हुए—ओह ! गलत शेर लिखा गया है । शमा तो अब आई है । महफिल में परवाने कैसे जल गये (एक ठंडी सांस लेता है) ।

नरगिस : (अपने पति से) ओ यू—तुम अभी तक सामान उठाये खड़े हो ! सामान को इधर रख दो ।

शायर : (नरगिस से) अगर आप नाराज न हों तो मैं इसकी मदद करदूं ?

नरगिस : शुक्रिया ।

शायर ; शुक्रिया (ठंडी सांस भरकर) शुक्रिया ।

गुलाब : मैंनें कहा मेरी मदद शेठ जी ।

शायर : तुम्हारी मदद तो भगवान करेगा ।

नरगिस : भगवान तो बहुत दूर है आप हमारे बहुत नज़दीक हैं ।

शायर : मैं आपके बहुत नज़दीक हूं । शुक्रिया-शुक्रिया ।

नरगिस : ज़रा सामान……

शायर : जी सामान आप पहले कहतीं तो यहाँ से क्या मैं गाड़ी से ही उठा लाता ।

नरगिस : शुक्रिया……

गुलाब ; शुक्रिया फिर करियो शेठ जी पहले म्हारी मदद करो ।

शायर : अभी लो अभी लो किबला (सामान उतारकर दायें तरफ वाले कोच के पास रखवाया है) ।

नरगिस ; (बैठते हुए) उफ (गुलाब से) तुम भी बैठ जाओ ना ।

गुलाब : अरे मैं कहाँ बैठूं ? म्हारा तो दिल बैठ रियाशें ।

शायर : क्यों किबला आपको दिल बैठने की बीमारी कब से है ।

गुलाब : जब से दूसरी शादी हुई है शेठ जी ।

शायर : वाह-वाह आप तो कमाल के हाज़िर जवाब हैं । वाह ! वाह ! शादी के बाद दिल का बैठना, जज़बात का जागना हवाओं की लोरी, वह बातें चोरी-चोरी । वाह-वाह किबला आप तो बजातेखुद एक तरह मिसरा हैं ।

नरगिस : सुनो ! (नरगिस नावल पढ़ते हुए बिना किसी को देखे आवाज लगाती है)

शायर : जी !

नरगिस : आपसे कुछ नहीं कहा ।

शायर : ओह ! मुझ से कुछ नहीं कहा ! शुक्रिया ।

नरगिस : (गुलाब से) मेरे अटेची केस से आज का न्यूज़ पेपर तो निकालो ।

शायर : अगर मिलाप पसन्द हो तो मेरी खिदमत हाज़िर है ।

नरगिस : जी नहीं शुक्रिया ।

शायर : शुक्रिया—शुक्रिया ।

गुलाब : (ज़रा गुस्से से) क्यों शाहब आपको कोई दूसरा काम नहीं ? शे आप म्हारी बातों में क्यों बादा डाल रियाशे जी ।

शायर : मुआफ कीजिये, किबला मैंने तो कुछ नहीं कहा । पर हाँ परी है खूबसूरत ।

गुलाब : (ज़रा और गरम होकर) क्या बकते हो जी ? यह मेरी वाइफ शे जी ।

शायर : ओह मुआफ कीजियेगा यह आप की बीबी हैं ?

गुलाब : क्यों तन्ने क्या दिखरिया शेजी ।

शायर : मैं तो उन्हें आपकी बहन समझ रहा था ।

नरगिस : शटअप !

शायर : शुक्रिया ।

नरगिस : (गुलाब से) वहां से पता कर के आओ गाड़ी कितने बजे आयेगी ।

गुलाब : अभी पता करता हूँ जी (बाहर जाता है) ।

शायर : मुआफ कीजियेगा किबला ओह ! नहीं नहीं मोहतरमा आप कहां जायेंगी ?

नरगिस : जहन्नुम् में ।

शायर : अच्छी जगह है ज़रूर जाइए ।

नरगिस : आपका क्या ख्याल है ?

शायर : मेरा तो ख्याल है आप वहाँ मुकम्मल क़ायम कर लें ।

नरगिस : आपका वहाँ जाने का इरादा नहीं ?

शायर : वैसे तो नहीं लेकिन आप अगर बुलाएँगी तो जहन्नुम क्या उससे आगे चले जाएँगे

नरगिस : नौन सैन्स (Non sense) ।

शायर : शुक्रिया, मोहतरमा—वह जो बाहर गये हैं आपके खाविन्द (पति) हैं ?

नरगिस : क्यों आपको कोई शक है क्या ?

नरगिस : आप अपना काम करें।

शायर : शुक्रिया ।

(शायर बिस्तर पर लेट कर गुनगुनाने लगता है और बाहर से सरदार बूटासिंह उम्र लगभग ३५ साल, सामान के साथ दाखिल होते हैं)

बूटासिंह : (पंजाबी में) मैं क्या बाऊ जी बन्दयाँ दा वेटिंग रूम ऐहो है ? (कोई जवाब नहीं देता) तुसीं ते आपेई गवाचे जापदे ओ मैं कियां बाऊ। और लाला जी। (बिस्तर शायर के ऊपर गिरा देता है)

शायर : (घबरा कर) अरे मार डाला ! मार डाला ! जालिम तेरा जबाव नहीं—अरे दिल तोड़ने वाले देखके चल, हम भी तो पड़े हैं राहों में—क्या बात है किबला—?

बूटासिंह : मैं क्या बन्दयाँ दा वेटिंग रूम ऐहो ई ऐ ?

शायर : आप को क्या जानवर नज़र आते हैं ! देखो किबला बन्दयां का बेटिंग रूम तो मुझे पता नहीं पर यह सैकिन्ड क्लास का वेटिंग रूम है।

बूटा : आहो जी ! ते फिर ऐ बन्दियाँ दाई होया। के देखो तुसीं समझे ई नई, रब ने तीमिया ते बनाईया फर्सट क्लास ते, बन्दे बनाए सेकण्ड क्लास (Second Class) फिर बन्दयाँ दा ई होया के।

शायर : किबला यह अपना बिस्तर नीचे उतार लीजिए।

बूटा : ओए बिस्तर भुंजे लैए तेरा तेरे अगले पिछलियां दा। ओए तेरी जनानी तेरे नाल न हुन्दी ने सौ रब दी हुने इ तेरा बिस्तरा भुंजे ला देना सी (सामान बाईं तरफ के कोच पर लगा देता है)

शायर : अजी किबला आप कहाँ से आए हैं ?

बूटा : ठंडे खूह चों, जाना ई ओथें।

शायर : इंशा अल्लाह ! कोई बहुत ही सेहत अफजां मुकाम होगा तभी आप की सेहत बहुत अच्छी है।

बूटा : ओए असां लसियां दे छन्ने पीते ने दिने रातीं ते सरगी वेले टो लैके ते शाम बेले तक हल वाए ने ताइयां ओदे फल पाएने।

शायर : वाह ! वाह किबला वाह ! वाह ! क्या हकीकत बयान की है गांव के किसान की ! वाह—वाह !

बूटा : मैं क्या लाला जी किते तुसी शुदाई ते नई हो गये एवे वां वां की करन लग पए ओ।

शायर : आपको दाद दे रहा हूं किबला।

बूटा : ओहो जी ! एहो जई दाद साडे पिण्ड डँगरा नूं मोडने वेले दई दीए।

शायर : मुआफ कीजिए किबला आपका नाम पूछ सकता हूं।

बूटा : बूटा सिंह ! पिण्ड शाम चुरासी, गली पिपल वाली जिला होशियारपुर।

शायर : किबला आप बूटा सिंह हैं, वही शहीदे मुहब्बत जिसने अपनी मुहब्बत के लिये अपनी जान देदी। आपको तो सजदा करना चाहिए।

बूटा : ओए नई नई असी ओ बूटे नई असी अपने माँ पियों दे गुल बूटे आं। मैं क्या बाऊ इक गल मैवी पूछाँ ?

शायर : पूछिये किबला जरूर पूछिए।

बूटा : ओए तेरी जनानी केड़ी गलों रूस गईए तू ऐवे मूदा पया ऐं ओ ओथे बूथा सुजा के बैठी ऐ, गल कीऐ ?

नरगिस : शट अप !

शायर : शट अप (Shut Up)

बूटा : हाँ मैं समझ गया ! धर्म नाल समझ गया वां, ऐ शटापू खेड़ना चाऊंदी ऐ।

नरगिस : (गुस्से से) मरदों को न जाने कितनी बुरी आदत होती है। जब कभी अकेली औरत को बैठा देखा, लगे जमाने भर की बातें करने। भगवान बचाए इन मरदों से।

बूटा : (इक करारा जमा थप्पड़ शायर दे मोडियां ते मार के) ओए बाऊ मैं समझ गया तेरी जनानी दा सूबा साडे पिण्ड दी

लाल मिर्च बांग ई। पर तू घबरा न साडे कोल वी इक तबीत ऐ, सौं रब दी जे डंगरा दे गल विच पा दईये ते मजाल ऐ सिर तां चुक जान किसे बन्दे नूं घोल के दे दईए ते जिथे सुता ए ओथे सुता रह जाए। मजाल ऐ पासा वी परत जाए।

(बाहर से गुलाब आ कर अन्दर बैठ जाता है) मैं क्या लाला जी, जरा उरां आओ।

गुलाब : आपने को मन्ने बुलाया शरदार जी ?

बूटा : आहो लाला जी तुवानू ई सदयाऐ उरां आ जाओ तुहाडे पैरांदी मेहन्दी नई लथचली (गुलाब पास आता है)—

गुलाब : बोलो शरदार जी क्या बात शे ?

बूटा : ओए सौरिया तेरी मत ते नई मारी गई, वेहदन नई ओथे जनानी सवारी बैठी ऐ अन्ने वां कोल जा बैइठाए। सवारी शरीफ ए नई तेरी टिवरी टेट कर देन्दी।

गुलाब : क्या बोलो शे शरदार जो जो हमारे बैठे शे तुमको के मतलब शे।

बूटा : ओय मतबल दया पुतरा असी सारी गल समझने आं। बहुते आने एकड़ के पया बेहना ऐं मैं बूथा सेक दयांगा।

गुलाब : शरदार जी आप के बात कर रहे शै जी ? यह तो मेरी घरवाली शे जी।

बूटा : इकते ऐदा घरवाला ए आ—उत्तों इक तू आँ गया ऐ, ओए गल की ऐ किने कू घरवाले ने ?

गुलाब : खबरदार सरदार जो ऐसी बात की हमारे साथ तो अभी पोलिस को बताऊंगा कि सरदार जी हमको धमकी दयो जी।

नरगिस : (इन दोनों के पास आती है) क्या बात है ?

बूटा : कुछ नई बीबी तेरे घर वालयां दा झगड़ा ऐ।

गुलाब : तुम न जाने सरदार जी हम दोनों मियाँ बीबी शे हमारा नाम गुलाब, इनका नाम नरगिस शे।

शायर : (चौंककर) नरगिस, वाह ! वाह ! और फिर चश्में नर-गिस हाय-हाय।

बूटा : ओ बाऊ तैनूं फिर कनों पे गई जापदी ए फिर वां वां करन लग प्या ऐं (गुलाब से) लाला जी, माफ करया तुहाडा नाँ गुलाब ऐ ।

गुलाब : हाँ गुलाब शे क्यों के बात शे, घूर के क्यों देख रिया शे ?

बूटा : मैं ते ए पया देखना, बनाने वाले ने हद कर छडी ऐ। वारे जाइये उसदे जिसने तेरे वर्गा गुलाब बनाया ।

नरगिस : (गुलाब से) चलो चलो यहाँ से चलो ।

गुलाब : ज़रा थोड़ी देर रुक जाओ जी । अभी बात कर राशूं जी।

बूटा : मैं क्या बाऊ जी ? एस बीबी दा नाँ नरगिस ऐ ?

गुलाब : तुम्हें इससे के मतलब शे ?

बूटा : मतलब ते कोई नई पर मैं किहा सिलमाँ विच कम करन वाली नरगिस ए ? मैं सिलमा देख के दिल बिच धारया सी के नरगस माई दे दर्शन जरूर कराँगा । मैंनूं मथा टेक लेन दियो मैं आख्या मत्था टेकना ।

नरगिस : शट अप!

बूटा : की आखिया ऐ (गुलाब से) ।

गुलाब : शट अप !

बूटा : ओ बीबी ! ऐथे बैहन न थाँ नई लबदी तैनू शटाप खेडन दी पई ए ।

शायर : क्यों झगड़ते हो ? किबला मोहतरमा अगर मेरी मदद की जरूरत है तो मैं सालस बनकर झगड़ा निपटा दूं ।

नरगिस : जी नहीं शुक्रिया ।

शायर : शुक्रिया-शुक्रिया-शुक्रिया (नरगिस गुलाब को बाजू से पकड़ कर अपनी सीट पर ले जाती है वहां दोनों रोटी का डिब्बा खोल कर खाने लगते हैं। शायर अपने बिस्तर पर लेट जाता है। बाहर से पंडित कृष्ण, उम्र लगभग 40 साल, माथे पर तिलक लगाए अपनी पत्नी मीरा को साथ लिए, सिर पर गठरी रखे हाथों में पीतल का लोटा, गले में माला डाले, राम राम करते हुए अन्दर दाखिल होते हैं),

[शायर बाथरुम में जाता है।]

बूटा : पंडित जी हरद्वारों आये ओ ।

पडित : राम……

बूटा : किसे दा बोले राम करा के आए जापदे ओ ।

पंडित : (अपनी पत्नी मीरा से) भाग्यवान तू वहाँ स्त्रियों के साथ विराजमान हो जा । और मैं यहाँ पुरुषों के साथ विराजमान होता हूं । यह शुद्ध जल का लोटा तू अपने साथ ले जा और यह शुद्ध जल का लोटा मैं अपने पास रखता हूं ।

मीरा : (चरण छूते हुए) जो आज्ञा ।

पंडित : क्यों इतना आभारी करती हो । तुम्हारे जैसी गुणवान स्त्री मुझे इस जन्म तो नहीं मिल सकती । कुछ देरी के लिए अलग बैठोगी फिर भी चरण छू रही हो। चिरंजीव रहो । तुम्हारा सुहाग सौ वर्ष का हो ।

शायर : वाह ! वाह ! किबला अपने आपको आशीर्वाद दे रहे हो ?

पंडित : महानुभाव ! तुम्हारी बात भी सत्य है और मेरी भी । तुम भी निर्णय करो मैं अपने आपको आशीर्वाद न दूँ तो क्या गालियाँ दूं । जाओ भाग्यवान निर्पेक्ष होकर अपना कार्य किए जाओ । शास्त्रों में यही लिखा है । भाग्यवान स्त्रियों में जाकर बैठना ।

गुलाब : अरे के बोल रहे शे पंडित जी । अरे इसको अपने पास बठाओ नाँ शेठ जी ।

मीरा : सुनिये जी ।

पंडित : क्या है भाग्यवान ?

मीरा : यहां तो घोर कलयुग है । अनर्थ हो रहा है । यहाँ तो पति-पत्नी पराए पुरुषों के सम्मुख साथ बैठे हैं । इतना ही नहीं एक साथ खा रहे हैं, एक बर्तन में… (नरगिस अन्दर जाती है) ।

पंडित : हरे राम ! हरे राम! भाग्यवान इस घोर कलयुग में हो रहे अनर्थ का मन की शान्ति से सामना करो । वहीं बैठ कर भूख हड़ताल कर दे ।

गुलाब : अरे पंडित जी ! अरे इनको अपने पास ही बुला लो न—

पंडित : महानुभाव अनर्थ का विरोध करना हमारा धर्म है। बस अपना कर्म निर्भय होकर करते जाओ। शास्त्रों में यही लिखा है। भाग्यवान तू वहीं बैठ कर भूख हड़ताल कर दे। (नरगिस आती है)

नरगिस : ए मीरा बाई, चलो उठो यहां से। जाओ अपने कृष्ण कन्हैया के पास।

पंडित : धन्य हो देवी ! धन्य हो ! तुमनें यह कैसे जान लिया कि इसका नाम मीरा और मेरा नाम कृष्ण है ?

नरगिस : तुम लोगों के माथे पर लिखा है।

गुलाब : अरे सब जाने शे तुम्हारी नाटक मंडली को। शब जाने शे पंडित जी। यह भी जाने शे कि तुम्हारे पास सैकण्ड क्लास टिकट नहीं शे। अभी पोलीस आए के तुम्हारा इन्तज़ाम करेगी (अन्दर चला जाता है)।

पंडित : हरे राम ! हरे राम ! इस जगत में भक्तों को कष्ट देने के लिए बड़े बड़े नास्तिक विराजमान हैं।

मीरा : परन्तु अनर्थ का विरोध करना हमारा धर्म है।

पंडित : इसके अतिरिक्त संसार की बातों से मत डरो। शास्त्रों में यही लिखा है। भाग्यवान अपना स्थान मत छोड़ना।

मीरा : जो आज्ञा। आप चिन्ता न करें आपकी आज्ञा का पालन करना मेरा परम धर्म है।

बूटा : पंडित जी जदों दे तुसी आये ओ सारयां नू वखत ई पा दिता जे। जबान कुतर-कुतर कैंची वांग पई चलदी ए। ओ मैं किहा रब दे वास्ते चुप करो, घड़ी कूँ आराम कर लईये।

पंडित : महानुभाव, जो आराम करता है वह सीधा नरक में जाता है।

मीरा : और जो काम करता है वह सीधा स्वर्ग में जाता है। क्यों स्वामी ?

पंडित : शास्त्रों में यही लिखा है।

शायर : आप चाहते क्या हैं किबला ?

पंडित : केवल थोड़ा सा स्थान चाहिए विश्राम करने को।

शायर : आपको जगह चाहिए ना ? सरदार जी के पास बैठ जाइए।

बूटा : ओए चुप कर मुँह कडिया होयाई जिवें मोंगलू पुट के पाए होण। मेरे कोई जगह नजर औउंदी ए। अपने कुछड़ बिठा ले ऐनू। तू विस्तरा वशा केएंज मूंदा पया ऐ जिवें रब्ब दी जंजे आया होआ एँ। तू कोई ज्यादा कराया नई खरच कीता।

शायर : और आपने कौन-सा ज्यादा दिया है किबला।

बूटा : ओए ए घड़ी घड़ी काबला किदां पाया कराना ऐ ? तेरे ते अपने पेच कसन वाले जापदे ने।

नरगिस : चलो मीरा बाई, जगह खाली करो उधर जाओ।

मीरा : मुझे तो अब यमराज ही उठा सकता है यहां से।

नरगिस : यमराज तो बाद आए पहले मैं ही तुम्हें यहां से उठाती हूं।

(उसको पकड़ कर उठाने की कोशिश करती है।)

मीरा : हे सीता मइया ! हे पार्वती, हे झांसी की रानी। मेरी लाज बचानी है।

नरगिस : चलो यहां से।

मीरा : नहीं जाऊँगी।

नरगिस : जाएगी कैसी नहीं, यह तेरी जगह है ?

मीरा : तो क्या तेरे बाप की है ?

नरगिस : अजी सुनते हो।

गुलाब : अजी के शे ? (अन्दर से आता है)

नरगिस : यह मुझे गालियां दे रही है।

गुलाब : देख लियो पंडित जी, थारी घरवाली गालियां निकाले शे।

पंडित : महानुभाव जब युद्ध होता…

मीरा : तो गाली और गोली सब अनुकूल होती है, क्यों स्वामी ?

पंडित : शास्त्रों में यही लिखा है भाग्यवान, लड़ते रहना पर अपना स्थान न छोड़ना।

नरगिस : मैं यहां तुम्हें बैठने नहीं दूंगी।

मीरा : बैठने कैसे नहीं दोगी, यह जगह तुमने खरीद ली है। मैं तो यहां ही बैठूंगी।

नरगिस : मैं अभी पुलिस को बुलाती हूँ कैसे नहीं उठती।

शायर : पुलिस। अरे मोहतरमा गुस्सा छोड़िये। पुलिस आएगी तो आपको भी तंग करेगी।

नरगिस : यू शट अप !

शायर : शुक्रिया-शुक्रिया !

गुलाब : अजी तुम हमको नई जाने शे। म्हारा बाप डिप्टी शे, हम तो इसका बन्टो डार करवा दें।

बूटा : ओए छोड़ो सेठ जी, बन्टे फेर खेड़ लयो, कुछ घड़ियां दी गल ए। हुने गड्डी आ जानी ए ते तुहाडा आपे ही बन्टा डार हो जाणा।

गुलाब : केह बात करो शरदार जी ? हम न डरे किसी शे, म्हारा भाई थानेदार शे।

शायर ; वाह-वाह-वाह !

बूटा : ओ बाऊ। जान दे, तैनू बड़े औतरे वेले कनी पउँदी ए।

शायर : अजी किबला मैं तो बस कुली के इन्तजार में हूँ।

पंडित : और हम तुम्हारे जाने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। तुम्हारे प्रस्थान के पश्चात् हमें विराजमान होने का अवसर मिलेगा।

(बाहर से मदरासी अपना सामान सिर पर उठाए हुए अन्दर दाखिल होता है। सबको खड़ा देखकर मुस्कराता है)

स्वामी : आई-आई यौ Wonderful सब लोग देखकर हमारा Welcome के लिये Oh thank you जी Sit down please

बूटा : लओ इक होर बिमारी आई जे। ओ लंग आओ, शहनशाओ, तुहाडी कसर सी। बड़ा पक्का रंग कीता होया जे बूथी ते बहुता न हंसो किथे खुर न जाए।

स्वामी : आई-आई यो। इन्ने रम्बा कष्टम आ :। ए छोड़ो जी सरदार जी Delhi Junction इल्ले-इल्ले। Absolutely bad आ: I ask for a collie but there is no collie but in our Vadaswami wonderful, excellent आई-आई यो in our Vadaswami आ: आ: wonderful. excellent, You ask for a collie-Every body is collie

बूटा : ओए, ऐथे अगलयाँ दा स्यापा नई पया मुकदा। तू अपना राम रौला पाई जाना ए। ऐ आई-आई यो न कर। मतलब दी गल कर साडे नाल।

स्वामी : ऐ सरदार जी इल्ले-इल्ले आई-आई छोड़ो यो न जी। I went to Simla ji. You know what a calimate every day pouring pouring, horible but in our Vadaswami superfine every day cloud but no rain.

शायर : अजी किबला। आप तो बरसाती मेंढक की तरह टरर: टरर किये जा रहे हैं। यहाँ तो पहले ही जगह के लिए सर्द जंग जारी है, किबला। आप किसी बड़े वेटिंग रूम में चले जाएँ। यह छोटा-सा रूम है।

स्वामी : इल्ले। अभाँ आई-आई यो। आप किधर जाएगा जी ? अरे छोड़ो जी। Delhi Junction hopeless. Every waiting room full of passenger. But in our Vadaswami, what a fine, superfine. Every room is waiting room. You see so many waiting room, but no passenger तेरी मा—

बूटा : ओए, होश दिआं गल्लां कर। ओए तेरी मां किनू आख्या है ?

स्वामी : आई-आई ओ। तुमको बोला सरदार जी, तेरी मां ?

बूटा : आ, फिटे मुंह भैड़ी बूथी वालया। क्यों अपनी मौत नूं वाजां प्या मारनाए ? असीं गाला कडन वालयां दा बूथा भन देने आं।

स्वामी : आई-आई यो, सरदार जी, You are mistaken आ:

गुलाब : म्हारी बात मानो, पुलिस ने बुलाओ जी।

नरगिस : तुम डरते क्यों हो जी ? जाकर पुलिस को बुलाते क्यों नहीं ? अभी सब का फैसला हो जायेगा ।

पंडित : महानुभाव। यह धरती यहीं रहेगी माटी से बनें हैं, माटी माटी में मिल जाना है ।

मीरा : कुछ देर का यहां ठिकाना है ।

पंडित : यह दुनिया मुसाफिर खाना है। शास्त्रों में यही लिखा है। भाग्यवान सब जाने वाले हैं। स्थान हमारा ही रहेगा ।

नरगिस : हूं ! स्थान हमारा ही रहेगा ।

मीरा : हां-हां रहेगा-रहेगा।

नरगिस : कैसे रहेगा।

मीरा : (बैठते हुए) ऐसे रहेगा ।

स्वामी : आई-आई यो। यह कैसा झगड़ा है जी ? काहे का झगड़ा करता ? छोड़ो जी।

नरगिस : तुम बीच में मत बोलो ज़ी ।

मीरा : हां-हां मत बोलो जी ।

स्वामी : आई-आई यो।

नरगिस : तुम चुप रहते हो या नहीं ।

स्वामी : आई-आई यो सरदार जी पंजाबी girl, very fashionable, every girl wears 3 inch high heel sandle but in our Vadaswami what a simplicity, girl bare footed.

बूटा : ओए तू अपनी राम कथा बन्द करनी ए के नई। लस्सी लेन वाल्यो वांग अग्गे वदी जाना ऐ। कन खा मारे नी।

[सब अपनी-अपनी आवाज में ऊँचा-उँचा बोलते हैं]
(एक रेलवे टिकट चैकर अन्दर आता है)

टिकट चैकर : क्या झगड़ा है ? क्यों शोर मचा रहे हैं ?

स्वामी : ए Swamy—ए Ticket Collector जी हमको बैठने का Space मांगता है।

टिकट कलक्टर : [पंडित से] आप लागों को क्या तकलीफ है ?

[सब अपना-अपना सामान बांधने शुरू कर देते हैं]

पंडित : महानुभाव, कुछ क्षण के लिए विश्राम करना है। तनिक स्थान चाहिए। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे सामने विरोधी दल का बोल वाला है। महानुभाव, निर्भय होकर अपना कार्य किये जाओ संसार की बातों से न डरो। शास्त्रों में यही लिखा है। [अहिस्ता से अपनी पत्नी से] भाग्यवान ! सामान बांध लो गड़बड़ होने वाला है।

बूटा : आहो जी। मैं एनों सारयाँ कोलों बड़ा तंग आं। सौं रब्ब दी जदों दे आऐ ने, कां-कां करी जान्दे ने। घड़ी आराम नई करन दित्ता। मेरी अर्ज मन्नो ते सन्ताँ नूं जरा एनां तो वखरी थाँ दे देहो।

शायर : लाहौर बिला कुव्वत। किबला बहुत शोर करते हैं ये लोग। आदाबे महफिल से अनजान हो। जहाँ शेरोशायरी हो। जाम और मीना हो। वाह.........।

बूटा : ओए तेरी वां-वां नां मगरों लथो।

गुलाब टिकट कलक्टर जी, हम तो इन शब से तंग शे। हमने अच्छी जगह दियो। हम इनके साथ न बैठेंगे।

नरगिस : हम इन लोगों के साथ बिल्कुल नही रह सकते।

मीरा : सुनिये मैं क्या कहूँ।

पंडित : भाग्यवान, निस्वार्थ भावना से अपने बैठने के लिए थोड़ा-सा स्थान माँग लो। शास्त्रों मैं यही लिखा है।

मीरा : जो कुछ इन्होंने कहा है, वही सत्य है, बाकी सब भूठ है। इसके अतिरिक्त मुझे और कुछ नहीं चाहिए।

टिकट कलक्टर : देखिये, आप कुछ घड़ियों के लिए एक साथ नहीं बैठ सकते ? बड़ी अजीब समस्या है। सब अपनी अपनी जगह अलग-अलग माँग रहे हैं। आपही सोचिये यह कैसे हो सकता है ? फर्ज़ कीजिए यह वेटिंग रूम नहीं हमारा भारतवर्ष है। इसमें हर प्रान्त के लोग रहते हैं। क्या आप लोगों की राय में इसके अलग-अलग

टुकड़े कर देने चाहिये। ऐसा करने से क्या भारत, भारत रहेगा? और इस कमरे के टुकड़े कर देने से क्या यह वेटिंग रूम, वेटिंग रूम रहेगा? ऐसा करने से किसीको आराम नहीं मिलेगा।

स्वामी : ए swmay अरे छोड़ो जी! हमें बैठने को Space मिलेगा other go to hell आ:

टिकट कलक्टर : यह स्वार्थ की भावना है। अपने आराम के लिए दूसरे को बेचैनी माँगना, यह खुदगर्जी है। आप लोग जब अपना फैसला खुद नहीं कर सकते, तो फिर मुझे ही फैसला करना होगा। लाइये अपने-अपने टिकट दिखाइये।

स्वामी : ए Mr. Ticket collector आई-आई यो I do not want any space now. I am going. Thank you.

टिकट कलक्टर : ऐ मिस्टर! टिकट दिखाइये।

स्वामी : Mr. Ticket Collector, you know I am not without but I have no ticket jee

टिकट कलक्टर : अच्छी बात है जरा एक तरफ हो जाइए [गुलाब से] आपका टिकट?

गुलाब : आरे तैन्न के बताये टिकट कलक्टर शाब, म्हारो तो बंटा डार हो गया शे। म्हारे तो बटुआई गुम हो गयो शे। उसी में म्हारो टिकट शे।

टिकट कलक्टर : समझा—आप भी लाइन में लग जाइए [बूटा सिंह से] आपका टिकट?

बूटा : टिकट कदी? गड्डी चढ़न दी टिकट ते लगदी आ, वेटिंग रूम बिच बैहन दी टिकट ते कदी नई सुनी। जद्दो संता गड्डी चढ़न गियां, ओदो टिकट वी लेख। जे नई मनदा तो असी चलने आं—सांभ लै अपना थां।

टिकट कलक्टर : आप भी जरा इनके पीछे लाइन में लग जाइए (शायर से) क्यों साहब? आपके पास......।

शायर : किबला, आपने मुझसे कुछ फरमाया !

टिकट कलक्टर : जी हां आपसे ही अर्ज कर रहा हूँ ।

शायर : आदाब अर्ज़ है ।

टिकट कलक्टर : आदाब अर्ज़ । आपके पास......।

शायर : जी हां मेरे पास मुरादाबादी तम्बाकू पान हाजिर हैं शौक फरमाइए ?

टिकट कलक्टर : शुक्रिया !

शायर : शुक्रिया ! शुक्रिया !

बूटा : बाऊ जी : आगे बद के कोई गल कर जाओ, नई ते एन्नू फेर वां-वां दी कन्नी पै जानी ए ।

टिकट कलक्टर : हुजूर आपके पास टिकट है ?

शायर : क्या बात करते हैं गरीब परबर! आली जाह First class का टिकट है ।

टिकट कलक्टर : मुझे दिखाइए ।

शायर : जब मैंने ही नहीं देखा, तो आपको कहाँ से दिखाऊं ?

टिकट कलक्टर : बहुत खूब ! तो आप भी इसी लाइन में आइये ? [पंडित से] हां तो साहब आपके पास तो टिकट होगा ही ?

पंडित : महानुभाव यह संसार एक वेटिंग रूम है। न कोई यहां टिकट लेकर आता है, और न यहां से कोई टिकट लेकर जाता है। शास्त्रों में यही लिखा है—रामनाम की लूट है, लूट सके तो लूट। अन्त समय पछताएगा जब प्राण जाएँगे छूट ।

टिकट कलक्टर : कितनी अजीब बात है। थोड़ी देर पहले आप एक दूसरे के साथ बैठना नहीं चाहते थे। हर एक अपनी-अपनी जगह अलग टुकड़ा माँग रहा था। लेकिन अब एक ही लाइन में खड़े हैं। कुछ मांगने से पहले, अपने अपने गिरेबान में मुंह डाल कर देखिये आप

कहां तक इसके हक़दार हैं : आपको अलग कोठरी चाहिए तो चलिए तो आप सबको पुलिस वाले जेल में अलग अलग कोठरियां दे देंगे [सब लाइन बनाकर बाहर जाने लगते हैं]

बूटा : बाऊ जी—हमको अपनी गलती सुधारने दा इक मौका दे देओ । आगे तो हम अपनी जवानी दी सौंह खाता है—ऐहो जयी गलती न करता—

नरगिस : सरदार जी ठीक कहते हैं :

बूटा : शुकर ऐ तेरी सुर भी साडे नाल मिलीं ऐ :

पंडित : किस्मत को यह दिन देखने भी लिखे थे :

टिकट कलक्टर : जैसा करोगे वैसा भरोगे शास्त्रों में यही लिखा है :

शायर : वाह-वाह-वाह !

बूटा : ओए बाऊ : हुन तेह वां वां दी बिमारी छड़ दे—वाऊ जी—कुछ करो किरपा साडे ते ।

टिकट कलक्टर : अच्छी बात है आप अगर फिर कभी एक दूसरे से नफरत न करें, आपस में प्यार से साथ रहने और बिना टिकट सफर न करने का वायदा करें तो मैं सबको एक मौका देने को तैयार हूँ ।

शायर : शुक्रिया ! शुक्रिया !

बूटा : बाऊ : रब तेरा भला करे—ते छेती तेरा ब्याह करा दे ।

टिकट कलक्टर : धन्यवाद—चलिये—मैं प्लेट फार्म पर चलकर सब को टिकट बना देता हूं ।

शायर ; पर किबला अपने पास तो शायद कुछ पैसे की कमी पड़ जाए ।

बूटा : कोई गल नई—जो पैसे घट जानगें ओ हम पा देंगे :

शायर : शुक्रिया—पर आप तो मुझे जानते नहीं :

स्वामी : आई-आई यो—पैसा वापिस—इल्ले :

नरगिस : आप जब उनको जानते नहीं तो उनको पैसे क्यों दे रहे हैं ?

बूटा : शट अप—अब हम जान गया है के हम सारे—इक ही बाग दे फल आं : चलो गड्डी दा वक्त न लंग जाए—

[सारे बूटा को शाबाश देते हुये एक दूसरे से हाथ मिलाते बाहर की तरफ जाते हैं]

नरगिस : [बूटा सिंह को] आप का बहुत शुक्रिया !

बूटा : Thank you.

[सभी हंसते हुए बाहर को चले जाते हैं]

—प्रकाश 'साथी'

बड़ी हवेली

चौधरी : बिहार प्रान्त का हिन्दू युवक,
लक्ष्मी : चौधरी की पत्नी,
अर्जुनसिंह : पंजाब प्रान्त का सिख युवक,
मानकौर : अर्जुनसिंह की पत्नी,
अब्दुल हमीद : काश्मीर प्रान्त का मुसलमान,
रज़िया : अब्दुल हमीद की पत्नी,
कीलर : बम्बई प्रान्त का क्रिश्चयन युवक,
टहलसिंह : मानकौर का भाई,
अय्यूब : रज़िया का भाई,
डाकू अय्यूब खां : डाकू,
अफीमची :डाकू का साथी,

(पर्दा उठता है)

(स्टेज पर अंधेरा है। मन्दिर की घंटियां बजने की आवाजें, गुरुद्वारे के शंख और मस्जिद की आजान सुनाई दे रही है। अंधेरे में खड़ी एक औरत थाली पर रखे हुए दीप को जलाती है। स्टेज पर रोशनी फैल जाती है और सामने एक बड़ी हवेली नज़र आती है। चार घरों के दरवाजे दिखाई दे रहे हैं। एक दरवाजे के पास एक औरत बाहर खड़ी थाली में दीप जलाए तुलसी की पूजा कर रही है। उस घर के बाहर बोर्ड लगा है 'चौधरी' दूसरे साथ वाले दरवाजे पर 'अर्जुनसिंह', तीसरे दरवाजे पर 'अब्दुलहमीद' और चौथे दरवाजे पर 'कीलर' लिखा नज़र आता है। मन्दिर की घंटियाँ बजने की आवाजें, गुरुद्वारे के शंख, मस्जिद की अजान की आवाजें बन्द हो जाती हैं। लक्ष्मी तुलसी की पूजा समाप्त करती है और दरवाजे की ओर मुंह करके आवाज़ देती है।

लक्ष्मी : अजी सुनते हो.........मैंने कहा ....अजी सुनते हो (कोई जबाब न पाकर) ओ हो। मैंने कहा भगवान का प्रसाद ले लो, अजी मैंने कहा.........

चौधरी : (घर से बाहर आकर) जो कुछ तुमने कहा मैंने सुन लिया है। भगवान के लिए आवाज़ मुझे दो, सारी हवेली को न सुनाओ।

लक्ष्मी : कब से कह रही हूँ भगवान का प्रसाद ले लो।

चौधरी : बात छोटी सी है, भगवान का प्रसाद ले लो और आवाज़ इतनी ऊँची लग रही हो जैसे मुझे नहीं भगवान को ही आवाज़ दे रही हो।

लक्ष्मी : भगवान तो हमारे दिल में हैं। उसको तो हमारी एक-एक साँस सुनाई देती है। यह तो एक श्राप ही है जिन्हें कुछ भी सुनाई नहीं देता।

चौधरी : तुम तो इतना जोर से चीख़ती हो कि मेरे कानों के पर्दे फट जाते हैं, सुनाई क्या ख़ाक दे।

लक्ष्मी : मैं आवाज़ देती हूँ तो इसे चीख़ना कहते हो और अगर चीखने लगूंगी तो······

चौधरी : (बात काट कर) तो रोकूंगा नहीं। और हाँ, अगर चीखो भी तो ज़रा खुल कर! इस से गला साफ़ हो जाता है। गाना गाने वाले अक्सर इसी तरह रियाज़ करते हैं।

लक्ष्मी : मैं सब जानती हूँ कि तुम मुझे बना रहे हो, तुम्हें तो मेरी आवाज़ से भी नफ़रत है।

चौधरी : क्या कह रही हो, भगवान झूठ न बुलवाए, मैं और नफ़रत करूँ? ऐसा मैं कैसे कर सकता हूं। मुझे अभी कुछ देर जिंदा रहना है।

लक्ष्मी : भगवान करे तुम हज़ार वर्ष जिन्दा रहो, और मैं इसी तरह तुम्हारी सेवा करती रहूँ।

चौधरी : अगर हज़ार वर्ष तुमको साथ ही रहना है और ये ही चीखें सुनाई देनी हैं तो इससे अच्छा है कि मैं जल्दी ही······

लक्ष्मी : (मुंह पर हाथ रख कर) बस आगे कुछ मत कहो।

चौधरी : वैसे तो तुम्हारी आवाज़ बुरी नहीं पर यह चीख़ने की आदत अच्छी नहीं, तुम ही सोचो, इस हवेली में सभी धर्मों के लोग रहते हैं यहाँ 'अर्जुनसिंह' उधर 'अब्दुल-

हमीद' इधर कीलर। सुबह से किसी की आवाज़ सुनी है तुमने, सब चुपचाप घर में भगवान को याद कर रहे हैं, और एक तुम हो कि सारी हवेली को सिर पर उठा रखा है।

लक्ष्मी : मैंने आपको आवाज़ देकर क्या बुरा किया है और लोग रहते हैं तो रहा करें, मैं उनको क्या कहती हूँ ?

चौधरी : उन लोगों को क्या कहना है, जो कुछ भी कहना है मुझे ही कह लो।

लक्ष्मी : आपको क्या कहूँ आप तो किसी की सुनते ही नहीं। (रोने लगती है)

चौधरी : हाँ, शाबाश, शुरू हो गया रोना धोना। हे भगवान ! जब इसके दिल को ही शान्ति नहीं तो पूजा पाठ का क्या फायदा।

(सामने वाले दरवाजे से अब्दुलहमीद आता है)

अब्दुलहमीद : क्या बात है बेटी, चौधरी ने आज फिर तुम्हें कुछ कहा ?

लक्ष्मी : नहीं चाचा जी ऐसी कोई बात नहीं, लो प्रसाद ले लो।

[अब्दुलहमीद प्रसाद लेता है]

अब्दुल : प्रसाद तो मुझे दे दिया, लेकिन बात नहीं बताई, क्यो चौधरी तुमने हमारी बेटी को क्या कहा ?

चौधरी : चाचा, मैं इसे कह ही क्या सकता हूँ ? बस इतनी बात कही कि सवेरे-सवेरे गला फाड़ना अच्छा नहीं। देखो न चाचा, तुम नमाज पढ़ रहे थे और यह इतना ऊँचा बोल रही थी। तुम्हारा ध्यान बिखर जाता तो ?

अब्दुल : अगर छोटी सी आवाज़ से अल्लाह की इबादत टूट जाए तो फिर क्या खाक इबादत है। चौधरी तुम हमारी बेटी को कुछ नहीं कहा करो, समझे।

[लक्ष्मी चौधरी को अंगूठा दिखा कर चिढ़ाते हुए अन्दर चली जाती है]

चौधरी : देखा-चाचा-देखा।

अब्दुल : (हँसते हुए) अरे बेटा, यह भी एक प्रसाद है। हाँ—आज अर्जुन सिंह नजर नहीं आया।

[अर्जुन सिंह की दरवाजे से आवाज आती है]

अर्जुनसिंह : बोले-सो-निहाल, सत-सिरी-अकाल ? तुसी याद कीता ते असी झट पुज गये ऐथे। ऐ लो प्रशाद छको।

अब्दुल : प्रसाद तो मैंने लक्ष्मी बेटी से ले लिया है।

अर्जुन : चाचा अब्दुलहमीद, सानूं कर न शहीद, ओह ते प्रशाद सी चाचा, ऐते कड़ाह प्रशाद है, छेती हत्थ कर, ऐले, ते ऐ तुमकी ज़नानी लई।

[चौधरी भी हाथ आगे करता है और प्रसाद लेता है]

चौधरी : भइया अर्जुनसिंह, देख लो तुम एक हवेली में रह कर सब को एक नजर से नहीं देखते हो।

अर्जुन : ओह साडियाँ है वी सुख नाल दो अखियाँ, इक नाल किस तरह देखिए।

अब्दुल : क्या कोई बेइन्साफ़ी की बात हुई है ?

चौधरी : बेइन्साफ़ी नहीं चाचा, इससे भी बड़ी चोरी और सीनाज़ोरी।

अर्जुन : ओय गल्ल सिधी क्यों नहीं करते ? गल बिच बलेवें क्यों पाँदे हो ?

चौधरी : सिधी सी बात है चाचा, देखो बेग़म के लिये प्रसाद दे दिया, लेकिन मेरी पत्नी के लिये कुछ न दिया।

अर्जुन : चाचा, मैं जान के ऐह कम नहीं कीत्ता पता ऐ क्यों ? ऐने साडी भाभी दा प्रशाद आप ही छक जाना सी, ते पिछों सानूं सारी उमर दा उलामा मिलना सी।

[दायँ तरफ से कीलर आता है]

कीलर : गुड मार्निंग

अर्जुन : सत-सिरिया-काल।

अब्दुल : अस्लामालेकुम।

चौधरी : नमस्कार।

कीलर : वैल (Well) हमका शेयर (Share) किधर है ?

अर्जुन : शेर ते ऐदर है, प्रशाद ऐदर।

[प्रसाद कीलर को देता है]

अब्दुल : कीलर, आज तुमने बड़ी देर लगा दी। क्या बाईबल पढ़ रहे थे ?

कीलर : बाईबल तो हमने कबका फिनिश (Finish) किया, ये हम तो जरा पेपर रीड (Read) करता था।

चौधरी : क्या कोई ख़ास खबर है ?

अर्जुन : हाँ साब कीलर एक गल हमने भी पुछनी है। ऐ दसो जेहड़ा रात की झगड़ा पया था उसदा अखबार वाले कोई ज़िकर ज़िकरा कीत्ता ?

कीलर : ओह, No, No, पेपर वाला ऐसा खबर नहीं छापता।

अर्जुन : हाला,—ऐ न सई, ओ जेहड़ा साडी छल्लियाँ नूं कीड़ा खा गया था, ओदा जिकर ताँ कीत्ता ही होवेगा।

चौधरी : अर्जुनसिंह जी अखबार में तो बड़ी बड़ी खबरें आती हैं।

अब्दुल : उस दिन कीलर भाई सुना रहे थे कि किसी हवेली के दो भाई आपस में लड़ पड़े और किसी तीसरे आदमी ने हवेली पर कब्जा कर लिया।

कीलर : Yes; Yes Right.

अर्जुन : तुसी आखते हो Right, जो हमकी हवेली बिच होता Fight, ते फिर हम उस दी टिब्बरी कर देता tight.

अब्दुल : ख़ुदा का नाम लो। इस हवेली में हम सब एक हैं।

चौधरी : यहां कोई पराया नहीं ?

अर्जुन : ए गल होई न लख रुपए दी साडी हवेली बिच कोई दुश्मन आ जाए तो फेर जिन्दा बच के टुर जाए। हम भुड़ता न कर दे ओस का।

चौधरी : चाचा मुझे एक काम से नदी पार के गाँव में जाना है, हो सकता है रात को घर न आऊं।

अब्दुल : कोई बात नहीं बेटा मेरी बेग़म लक्ष्मी बेटी के पास रात को रहेगी।

अर्जुन : हमकी बीबी कोई फाहे देन को राखी है, रात नूं भाभी कोल लगी जाएगी।

कीलर : Well, अब हम भी जाना मांगता ।
Good bye.

अर्जुन : ओय ठहर भाई । हमने भी जाना ऐ—जरा खूह तक । तुमके नाल ही लगे जावाँगे ! ते नाले बड़े आखते हैं— कल्ला सुख न विराने होवे, इक इक दो ग्यारह, (नाल भंगडा पान लगदा ऐ) याराँ नाल वहारां, इक इक दो ग्याराँ ।

[सारे हंसते हैं । अर्जुन कीलर, चौधरी बाहर चले जाते हैं और अब्दुल हमीद अन्दर चला जाता है । अर्जुनसिंह की बीबी मानकौर अपने दरवाजे से आती है । उसके हाथ में एक थाली है जो कपड़े से ढकी है । अब्दुल हमीद के घर के पास आकर आवाज़ लगाती है ।]

मानकौर : रज़िया बहन, रज़िया बहन ।

रज़िया : (अन्दर से) आती हूं (बाहर आकर) आओ बहन, मानकौर काम से निबट गई ।

मानकौर : ऐ कामकाज ते मर के ई मगरों लथन गे । परसों त्वाडे कोलूं खंड दी कौली लै गई साँ, सोचया वापस कर आवां ।

रज़िया : कमाल करती हो बहन । यह भी कोई बात है । तुम्हारी और हमारी चीजें कोई दो हैं । हमने इस्तेमाल कर ली या तुमने । क्या फ़र्क है ।

मानकौर : ऐ ते तुमकी गल ठीक है पर हमके कोलूं मंग के नई खाया जाँदा । हम तो अपने हथ की कमाई खाँदे हाँ ! ते रब रब दा यश गांदे हाँ ।

रज़िया : अल्ला तुम लोगों को और ज़्यादा दे । पर बहन यह वापिस दे कर मुझे शर्मिन्दा न करो ।

मानकौर : हद करनीं ऐ रज़िया बहन, ऐ लैलो, होर फिर लोड़ होवेगी तां लै जावांगे ।

[रज़िया थाली ले कर अन्दर जाती है और मानकौर अपने दरवाजे के पास आती है, बाहर से एक आदमी अन्दर आता है, उसका लिबास मुसलमानी ढंग का है, वह इधर उधर देख कर मानकौर के पास आता है ।]

मेहमान : अस्सलामालेकुम ।

मानकौर : सत-सिरिया-काल भरा जी । तुसीं किथों आये हो ?

मेहमान : मैं तो बड़ी दूर से आया हूं बैठ जाऊं ?

मानकौर : हाँ, हाँ, क्यों नई, बैठ जाओ (चारपाई पर बैठ जाता है) मैं तुआडे वास्ते पानी ले आंवां ?

मेहमान : पानी ? प्यास तो लगी है…पर आप हिन्दू हैं या मुसलमान ?

मानकौर : भिरावाँ—हिन्दू होवे या मुसलमान—पानी ते सब वास्ते इको जैसा ही होता है ।

मेहमान : अब्दुल हमीद कहां रहता है ?

मानकौर : तुसीं ओना दे घर जाना ?

मेहमान : हां ।

मानकौर : ओ सामने रहन्दे ने ।

मेहमान : अच्छा, तो मैं वहीं चलता हूँ ।

मानकौर : नहीं भरा जी, तुसी उनके परौने हो ते हमके सिर माथे, पर पानी पीते बगैर मैं नई जान देना ।

[रजिया अन्दर से आती है ।]

रजिया : (मेहमान की ओर देख कर) अरे, भाईजान आप कब आये ?

मेहमान : बहन, अभी आया हूँ, तुम्हारा घर ढूंढ रहा था…गलती से यहां बैठ गया ।

रजिया : गलती से क्यों, यह भी अपना घर है ।

मानकौर : वीरां…रजिया तेरी भैणा है तुसी बैठो मैं हुन्नी पानी लै के आंवां ।

मेहमान : नहीं नहीं मुझे प्यास नहीं ।

रजिया : बहन तकलीफ़ न करो । वहां और यहां में क्या फर्क है ।

मानकौर : साडा भ्रा आया है, अड़िये—ते मैं पानी वी न प्वांवा

[अन्दर चली जाती है]

मेहमान : रज़िया, यह लोग हिन्दू हैं, तुम इन लोगों के साथ क्यों मिल कर रहती हो !

रजिया : अयूबभाईजान, इस हवेली में सभी एक हैं। देखा नहीं आपके आने से, उसे, मुझसे ज्यादा खुशी है।

मेहमान : रज़िया मुझे तो इन लोगों पर ऐतबार नहीं, जरा अन्दर जाओ, कहीं पानी में कुछ मिला न दें।

रजिया : (खड़े होकर) भाईजान, आप यह कहकर इसका नहीं रज़िया का अपमान कर रहे हैं। एक बहन अपने भाई के लिए कभी ऐसा चाह सकती है ?

मेहमान : हूं। एक हिन्दू औरत का एक मुसलमान भाई कैसे हो सकता है ?

रजिया : अगर ईरान की राजकुमारी या यूं कहिये कि सिकन्दर की बीबी हैलन एक राखी भेज कर पोरस की बहन बन सकती है तो क्या मानकौर तुम्हें भाई नहीं बना सकती ?

मेहमान : यह सब किताबों की बातें हैं।

रजिया : किताबों की बातें नहीं हैं, इस हवेली में ऐसा ही होता है।

[बाहर से एक मेहमान आता है उसका नाम है टहलसिंह]

टहलसिंह : सत-सरिया-काल। भैणा।

रजिया : भाई साहब मानकौर अन्दर गई है। आप बैठिए ना।

अय्यूब : आप की तारीफ ?

टहलसिंह : तारीफ उस रब दी जिस ने सानूं बनाया, अज भैणा नूं मिलन लई ऐह टहलसिंह आया।

अय्यूब : चलो रजिया घर चलें।

टहलसिंह : घर जाके तुसीं बेशक, राजी खुशी पये बसो, की नां जनाव दा है, पहले सानूं ते दसों ?

अय्यूब : हूँ— मुझे अय्यूब कहते हैं।

टहल : और हमको टहलसिंह आखते हैं।

रजिया : ये मेरे भाईजान हैं।

टहल : ते हम मानकौर दा सक्का।

अय्यूब : (हाथ मिलाकर) आप से मिल कर.........

टहल : (बात काटकर) हमका थकेवां उतर गया है।

[मानकौर अन्दर से गिलास में पानी लेकर आती है]

टहल : भैणा जी, सत-सिरिया-काल।

मानकौर : सत-सिरिया काल। भरावां कदों आया वे।

टहल : बस हुन ही समझ लें। हाले ता बैठा वी नई सुखनाल।

मानकौर : [अयूब से] लो आ जी—पानी पियो।

अय्यूब : (उठते हुए) मुझे प्यास नहीं।

रज़िया : भाईजान, पानी तो पी लीजिए।

अय्यूब : कह दिया ना, प्यास नहीं (उठकर चल देता है)

मानकौर : नई इस तरह पानी तां पीना ई पयेगा।

टहल : भैणा, जे ओने पानी दा घुट नहीं भरया ते तुसी ही सबर दा घुट भर लओ।

रजिया : माफ करना, बहन, भाईजान को अभी इस हवेली में रहने वालों के आपसी प्यार का पता नहीं। वह जहां रहते हैं, वहां हिन्दू और मुसलमान अलग-अलग होंगे। मुझे माफ कर दो बहन।

मानकौर : कोई गल नई रजिया, भरावां का गुस्सा बद जान नाल भैणा दा प्यार घट नई सकदा [टहलसिंह] चल वीर समान अन्दर रख।

टहल : ओए-समान तां मैं अन्दर रख देना वां पर एनूं की तकलीफ होई ए, पानी क्यों नहीं पींदा !

अय्यूब : मैं नहीं पीता, कोई जबरदस्ती है ?

टहल : ओए नई पींदा ते न पी, औखा क्यों पया हुना ए।

अय्यूब : तुम अपना काम करो—मैं तुमसे कुछ नहीं कह रहा।

टहल : ओय-ऐवे कोले वांगू तत्ता न हो, असीं जे तंदूर वांग भख गये ते फेर खराबी हो जायेगी। ओये कानू साड़ना हे जी, जरा ठंडा पानी पी-तैनू होश फिरे।

[टहलसिंह मानकौर के साथ समान लेकर अन्दर चला जाता है।]

अय्यूब : रज़िया—मुझे यहां बुलवा कर अच्छी इज्ज़त करवाई तुमने ! मुझे मालूम होता तो मैं यहां कभी न आता ।

रज़िया : भाईजान—आप गलत समझ रहे हैं ।

अय्यूब : मैं गलत नहीं समझ रहा—बल्कि तुम ग़लत रास्ते पर जा रहे हो । तुमने गैर मरद के सामने भी परदा नहीं किया । हमारा और उनका क्या मेल ? हम मुसलमान और वह हिन्दू और सिख ।

रजिया : भाईजान इस हवेली में हिन्दू और मुसलमान एक हैं । ईद वाले दिन सभी लोग हमारे यहां खाना खाते हैं । दिवाली को हम सब मिलकर इस हवेली में दिये जलाते हैं । हम सब क्रिसमिस के मौके पर भाई कीलर के पास दावत करते हैं और बैसाखी वाले दिन भाई अर्जुनसिंह सब को एक साथ लंगर में बिठाकर खाना खिलाते हैं । यहां कोई गैर नहीं—सब एक दूसरे की इज्ज़त के रखवाले हैं ।

अय्यूब : लेकिन मुझे यह बात पसन्द नहीं कि तुम किसी गैर मरद के सामने पर्दा किये बगैर चली जाओ ।

रजिया : मानकौर का भाई, मेरा भाई है । क्या मैंने कभी आप से पर्दा किया है ।

अय्यूब : मेरी और तुम्हारी बात और है ।

[अब्दुलहमीद आता है]

अब्दुल : तुम गलत समझ रहे हो अय्यूब । इस हवेली के हंसते खेलते गुलजार में, फूलों को शोक से देखो लेकिन उन्हें शाख से मत तोड़ो । इस शहद में ज़हर घोलने की कोशिश न करो । यहां कुछ दिन ठहर कर देखो । तुम्हें खुद महसूस होगा कि यहां सब एक परिवार की तरह रहते हैं ।

अय्यूब : मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता । मैं आप लोगों से क्या कहूँ ।

अब्दुल : चलो, अन्दर चलो, मैं सब कुछ सुनने को तैयार हूं ।

[रज़िया अब्दुल हमीद और अय्यूब अन्दर चले आते हैं ।]

[चौधरी की बीबी लक्ष्मी अन्दर आती हैं और अर्जुनसिंह के दरवाजे के पास जाकर आवाज लगाती है।]

लक्ष्मी : बहनजी, बहनजी !

मानकौर : [बाहर आकर] आ भैंन लछमिये तैनूं सवेरे दी बेल ई नई मिली !

लक्ष्मी : कोई आया है आपके घर ?

मानकौर : मेरा भ्रा आया है टहलसिंह !

लक्ष्मी : आप भी कमाल करती हैं आपके भाई टहलसिंह आये हैं तो हमें उसकी टहल सेवा का मौका भी नहीं दिया, लो मैं यह हलवा लाई हूँ।

मानकौर : ऐदी की लोड़ सी।

लक्ष्मी : अपने भाई को यह लक्ष्मी बहन की तरफ से खिलाना।

[मानकौर प्लेट ले लेती है]

मान : रजिया दा भ्रा वी आया सी, मेरे हथ दा पानी नई सू पीता। पता नई तेरे हथ दा हलवा खांदा है या नईं।

लक्ष्मी : एक बहन के हाथ से भाई हलवा नहीं खायेगा—यह कैसे हो सकता है—मैं अभी रजिया के भाई को हलवा खिलाती हूं।

[रजिया के दरवाजे के पास आती है]

रजिया : [अन्दर से] आती हूं [बाहर आकर] आओ लक्ष्मी बहन

लक्ष्मी : हमारे भाई को कहां छुपा रखा है तुम सोचती होगी कि कहीं हमारी नज़र न लग जाये लेकिन कभी बहनों की नज़र भी भाई को लगती है।

रजिाय : वह-वह-उसकी जरा तबीयत ठीक नहीं।

लक्ष्मी : तबीयत ठीक नहीं। तब तो मैं जरूर उसे देखूंगी।

रजिाय : वह ज़रा सफर से आया है न। आराम कर रहा है।

लक्ष्मी : अच्छा—तो जब उठे तो उसे यह हलवा लक्ष्मी बहन की ओर से दे देना ! मैं अभी चाय बना कर भेजती हूं।

रज़िया : हलवे की प्लेट ले लेती है।

[अन्दर से अय्यूब आता है]

अय्यूब : रज़िया क्या है इसमें।

रज़िया : लक्ष्मी बहन तुम्हारे लिए हलवा लाई थी।

अय्यूब : हलवा लाई थी या ज़हर। फैंक दो इसे।

रज़िया : नहीं इसमें एक बहन का प्यार है।

अय्यूब : लेकिन इस प्यार के बीच में मज़हब की दीवार है फैंक दो इसे।

[हाथ से प्लेट गिरा देता है]

रज़िया : [चीखकर] भाई जान।

टहलसिंह : [बाहर आकर] की होया ऐ मालूम होंदा ऐ अजे तक ऐनें पानी नई पीता गुस्सा पी रहा है।

अय्यूब : मैं गुस्सा नहीं खून भी पी सकता हूं।

टहलसिंह : होश दी गल कर असीं हथां विच चूड़ियां नई पाइयाँ।

अय्यूब : जिस में हिम्मत है वह मैदान में आ जाये !

टहलसिंह : ओय—लै, मैं आंदा। कर लै की करना ए।

रज़िया : भाईजान, नही, नहीं ऐसा काम न कीजिए।

अय्यूब : तुम हट जाओ रज़िया, मैं सब देख लूंगा अकेला ही।

मानकौर : रज़िया अपने भ्रा नूं मोड़, नहीं ते फेर खून खराबा हो जाना ई।

टहलसिंह : भैणा, तूं जरा परे हो जो। मैंने ज़रा देख लैन दे ऐदी बहादुरी।

अय्यूब : मैं कहता हूं मौत को आवाज न दो पीछे हट जाओ।

टहलसिंह : ओय आखिरी सांस तक तेरे सामने डटांगे। जनटुर जावेगी पिछे नई हटांगे

[बाहर से अर्जुन आता है]

अर्जुनसिंह : की गल ए, की होया एथे !

मानकौर : देखो जी, ए रजिया दा भ्रा मेरे भ्रा नूं मारन आया ए।
अय्यूब : बुला लो और बुला लो। मैं किसी से नहीं डरता।
अर्जुनसिंह : ओय गल की ए। औखा क्यूं होना ए ?
रज़िया : बहन जरा तुम भाई साहब को अन्दर ले जाओ, नहीं तो बात बिगड़ जायेगी।
मानकौर : सानूं किसे दा डर नईं मारया। असी क्यों जाईये अन्दर, एनू फड़ के रख बड़े शूरवीर नूं।
अय्यूब : होश की बात करो, नहीं तो जबान खींच लूंगा '
अर्जून : तुम रज़िया के भ्रा हो, इस लई में तुम को कुछ नई आखता ! जे कोई और होंदा ते मैं मजा चखा देंदा।
अब्दुल : [बाहर आकर] तुम समझदार हो बात को बढ़ने न दो।
अर्जुन : पर चाचा, साडे ऐनें बरयां दे प्यार नूं ऐ खराब न कर दे, एनूं समझा।
टहलसिंह : जे आंखो ते मैं कर दयां एदा कल्याण।
अर्जु न : नई टहलसिंह फेर वी ऐ ऐसी हवेली दा परौना ए। रजिया दा भ्रा ए। साडा मेहमान ए।
अय्यूब : सभी मेरे दुश्मन है यहां !
अब्दुल : दुश्मन नहीं दोस्त हैं। इन्हें नफरत से नहीं प्यार की नज़र से देखो। यह सब इस हवेली के रखवाले हैं।

[बाहर से एक डाकू हाथ में बन्दूक लिए हुए आता है। उस के साथ एक छोटे से कद का एक चालाक आदमी है]

डाकू : खबरदार किसी ने एक कदम भी आगे बढ़ाया तो···
अब्दुल : तुम क्या चाहते हो।
डाकू : मैं यह पूछना चाहता हूँ कि इस हवेली में कितने लोग रहते हैं। कितनी कौमें बसती हैं ?
अब्दुल : यहां सभी कौमें बसती हैं लेकिन कोई जुदा नहीं हैं सब एक हैं।
डाकू : लेकिन अभी जो यहां पर शोरगुल हो रहा था, वह क्या था ?

अय्यूब : मुझ से झगड़ा हो रहा था।

डाकू : मालूम होता है तुम मुसलमान हो।

अय्यूब : हां, मुझे अय्यूब कहते हैं।

डाकू : वाह—मेरा नाम भी अय्यूब है। मुझे तुम्हारे जैसों की बहुत जरूरत है। बोलो तुम एक मुसलमान होकर मुसलमान की मदद करोगे ?

अय्यूब : तुम क्या चाहते हो ?

डाकू : मुझे बताओ कि तुम्हें यहां कौन तंग कर रहा था पहले मैं उसे गोली का निशाना बना दूंगा।

अय्यूब : मुझे तो किसी ने कुछ नहीं कहा। यहां तो यूं ही······

डाकू : ओह—तो तुम इनकी तरफदारी करने लगे। तुम मुसलमान होकर मुसलमान की मदद करो। मैं यह हवेली तुम्हारे नाम कर दूंगा। बोलो यहां कौन-कौन रहता हैं ?

अय्यूब : मुझे नहीं मालूम।

डाकू : तुम यूं नहीं मानोगे (बन्दूक उठा लेता है) तो फिर सबसे पहले तुम्हें ही गोली का निशाना बना दूं।

[अर्जुन अय्यूब के सामने आ जाता है]

अर्जुन० : ऐह नूं गोली मारन तो पहलां मेरे सीने से पार कर।

अय्यूब : क्या तुम मेरे लिए जान दोगे ?

डाकू : तुम एक मुसलमान के लिए जान तक देने के लिए तैयार हो ?

अर्जुन० : ऐह रज़िया दा भ्रा है। साडा परौना है। इस हवेली दा परौना है। इस हवेली दी इज्ज़त है। गोली इसनूं नई मेरे सीने तों पार कर।

डाकू : थोड़ी देर पहले तो तुम आपस में लड़ रहे थे और अब एक दूसरे के लिए जान लुटा रहे हो। यह क्या नाटक है ?

अब्दुल : यह नाटक नहीं हकीकत है। यह लोग आपस में किसी गलत फ़हमी की वजह से लड़ने लगे तो तुम भी मौका

तलाश करके आ गये लेकिन यहां से खाली हाथ जाना होगा।

डाकू : मैं तुम दोनों घरों को कुछ नहीं कहता, लेकिन वह सामने जो औरत खड़ी है उसके जेबरात मेरी झोली में डाल दो

अर्जुनसिंह : हूँ ओ ऐस हवेली दी लक्ष्मी ऐ। ओसदे जेबर की तू ओस दे पैरा दी मिट्टी भी नई लै सकता।

डाकू : देखता हूं कौन रोकता है मुझे।

अब्दुल : ठहर, उसकी तरफ आंख उठाने वाले, यह मत सोच कि आज लक्ष्मी अकेली है, वह अकेली नहीं सभी यहां हैं।

डाकू : सभी कौन।

अब्दुल : वह मेरी बेटी है।

अर्जुन : मेरी भाभी।

अय्यूब : और मेरी बहन।

डाकू : तुम्हारी बहन, एक मुसलमान की हिन्दू बहन कैसे हो सकती है।

अय्यूब : अगर सिकन्दर की बीबी राखी भेज कर पोरस को भाई बहन बना सकती है तो मैं भी लक्ष्मी का भाई बन सकता हूं।

अब्दुल : तुम्हें पहले इन तीनों की लाश से गुजरना पड़ेगा।

डाकू : (अपने साथ आए चाचा अफ़ीमची को) तुम तो कहते थे कि इस हवेली में कोई किसी की मदद नहीं करेगा। सब अपना-अपना बचाव करेंगे यहाँ तो सब एक दूसरे के लिए मरने को तैयार हैं। बताओ क्या सोचा ?

अफ़ीमची : तुम फ़िक्र न करो। जो कुछ मिल सकता है हासिल करो। अगर तुम्हें कुछ हो गया तो मैं तुम्हारी लाश ठिकाने लगाने का इन्तजाम कर दूंगा।

डाकू : तो क्या मुसलमान को भी ...

अफ़ीमची : हाँ मुसलमान, हिन्दू, सिक्ख, कोई हो, सब को लेकिन ज़रा तरतीब से।

डाकू : तुम लोग जेबर मेरे हवाले कर दो वरना मौत के लिए तैयार हो जाओ।

अर्जुन : गीदड़ दी जद मौत आंदी ऐ ते ओ शहर वल दौड़ता है? तैनूं तेरी मौत ऐथे खिच ल्याई है।

अब्दुल : देखते क्या हो। दुश्मन हद से आगे बढ़ रहा है। इस हवेली में इसके नापाक इरादे पूरे नहीं होने देंगे। दे अर्जुनसिंह, अय्यूब, टहलसिंह।

[बाहर से चौधरी और कीलर आते हैं]

चौधरी : तुमने चौधरी और कीलर को आवाज़ भी नहीं दी और हम बिना आवाज़ के ही चले आये।

[सभी मिलकर डाकू को गिरफ्तार कर लेते हैं—चाचा अफीमची भाग जाता है]

डाकू : (चाचा के पांव छूकर) मुझे माफ कर दो। मुझे हवेली के बारे में गलत बात बताई गई थी।

अब्दुल : देखो मुसीबत के वक्त हम सब एक हैं। लेकिन तुम्हारा वह दोस्त जिसकी शह पर तुमने बन्दूक उठाई थी तुम्हें धोखा देकर भाग गया। बोलो अब तुम्हें क्या सजा दें।

अर्जून : मैं ते कैना चाचा एदा कर दयो कल्याण।

चौधरी : चाचा इसको ऐसी सज़ा दो कि यह फिर इधर आने की हिम्मत न कर सके।

कीलर : yes right, kill him.

अब्दुल : इसको ऐसी सज़ा दी जाएगी कि यह मरेगा भी नहीं लेकिन यह अपने आप को ज़िन्दा भी न कह सकेगा। अय्यूब साहब, तुम ने जिस लक्ष्मी के जेवरात की तरफ नज़र उठाई थी आज इसी के पांव छूकर मांफी मागो कि वह तुम्हारी हमशीरा (बहन) है।

अर्जुन : चाचा अब्दुल हमीद।

सारे : ज़िन्दाबाद।

अर्जुन : अब्दुलहमीद

सारे : ज़िन्दाबाद

अब्दुल : नहीं। अर्जुन ऐसे नहीं यह कहो हमारी एकता……

सारे : ज़िन्दाबाद

[नारे गूंजते रहते हैं। डाकू अय्यूब लक्ष्मी के पैर छूकर माफी मांगता है। ज्यों ही डाकू लक्ष्मी के पांव छूता है चारों ओर से मन्दिरों की घन्टियां, मस्जिदों से आजान की आवाजें, गुरुद्वारे से शंख की आवाजें सुनाई देती हैं।]

—प्रकाश 'साथी'

रोशनी का समन्दर

[श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चंद्र' की कहानी के आधार पर नाट्य रूपान्तर]

संक्षिप्त कथानक :

[नेपथ्य में ढोल बाजे आदि राजस्थानी वाद्यों की ध्वनियां]

चापोली के ठाकुर सुजान सिंह विवाह कर अपने घर आते हैं। द्वार पर उनकी मां द्वारा स्वागत। [नेपथ्य में राजस्थानी बधावा गीतों के स्वर] मां के पास जाकर चरणस्पर्श। मां द्वारा आशीर्वाद। ड्योढ़ीदार द्वारा खण्डेला से नरपत सिंह के आगमन की सूचना। नरपत सिंह द्वारा औरंगजेब के सेनापति के खण्डेला पर आक्रमण की जानकारी। रक्षा की प्रतिज्ञा। खण्डेला प्रस्थान। सुजानसिंह की मृत्यु। यासीन खाँ द्वारा अपने मित्र का मस्तक लेकर युद्ध भूमि से भागना।

ठाकुर सुजान सिंह : चापोली के ठाकुर
वीर सिंह : चापोली का एक प्रौढ़ राजपूत
ठकुराणी : ठाकुर सुजान सिंह की नवविवाहिता पत्नी
मां साहब : ठाकुर सुजान सिंह की विधवा मां
यासीन खाँ : चापोली निवासी मुसलमान, ठाकुर का मित्र
ड्योढ़ीदार : ड्योढ़ी [द्वार] पर रहने वाला सेवक
नरपत सिंह : खण्डेला निवासी राजपूत
बहादुर खाँ : औरंगजेब का सेनापति
संदेश वाहक . प्रतिपक्षी सैनिक
सैनिक : चार [दो-दो, दोनों पक्षों के]

ध्वनि, प्रकाश—अंधकार तथा नेपथ्य की उत्तम व्यवस्था अपेक्षित]

संध्या का समय। नेपथ्य में ढोल तथा हर्ष सूचक वाद्य। [विवाहोत्सव पर उपयुक्त] शहनाई का स्वर। बधावा गीतों की

ध्वनियां। बारात द्वार पर पहुँचती है। शहनाई ढोल, तथा अन्य वाद्यों की ध्वनियां तेज हो जाती हैं।

सुजानसिंह तथा उनकी वधू [राजस्थानी दूल्हा दुल्हिन की वेशभूषा में] मां के पास आशीर्वाद लेने जाते हैं।

सुजानसिंह : [मां के चरणों में झुक कर] माँ जी, मेरा प्रणाम स्वीकार हो :

माँ : (आर्शीवाद देते हुए]जुग-जुग जिम्रो बेटा। जोड़ी अमर रहे। [वधू को अन्त:पुर में ले जाती है]

[मंच पर अकेले सुजानसिंह रह जाते हैं। यासीन खां तथा वीर सिंह का प्रवेश]

यासीन : दोस्त ! शादी के इस मुबारक मौके पर आज मैं अपनी ओर से दावत देना चाहता हूं। मुझे उम्मीद है कि कबूल फरमाओगे। कौन-सा वक्त ठीक रहेगा ?

वीरसिंह : तुम भी निरे गँवार रहे भाई। इनसे क्या पूछना। दावत तुम दे रहे हो और समय इन से पूछ रहे हो !

[सुजानसिंह कुछ प्रत्युत्तर दे, इससे पूर्व ही ड्योढ़ीदार का प्रवेश]

ड्योढ़ीदार : अन्नदाता। खण्डेला से नरपतसिंह जी पधारे हैं। कुछ ज़रूरी समाचार लाए हैं।

सुजान : उन्हें यहीं भेज दो।

ड्योढ़ीदार : [हकलाते हुए] म······गर हजूर वे आपसे एकांत में बात करना चाहते हैं।

सुजान : तुमसे कह दिया है कि उन्हें यहीं भेज दो। जाओ।

ड्योढ़ीदार : जो हुकुम अन्नदाता। भेजता हूं।

[सुजानसिंह माथे पर हाथ रखकर कुछ सोचने लगते हैं] नरपत सिंह का प्रवेश।

नरपत : (विनय पूर्वक नमस्कार करते हुए) जै माता जी की।

सुजान : जै माता जी की। कहिए ठाकुर साहब कैसे पधारना हुआ ?

नरपत : बुरा समाचार लाया हूं ठाकुर साहब !

सुजान : (चौंकते हुए] क्या ?

नरपत : हाँ, ठाकुर साहब। समाचार बहुत-ही बुरा है। औरंगजेब बादशाह का सेना पति बहादुर खाँ अपनी विशाल सेना लेकर खण्डेला पर चढ़ आया है। उसने खण्डेला को नष्ट करने के आदेश दे दिए हैं।

सुजान : [आश्चर्य से] और राजा बहादुर सिंह क्या कर रहे हैं। [व्यंग से] ठीक है ? उन्हें क्या पड़ी है। वे तो किसी दूसरे तरह के युद्ध की तैयारी में व्यस्त होंगे।

नरपत : [लज्जा से मस्तक झुक जाता है] इसी बात का दुःख है कि शेखावटी-नरेश रायसल के पराक्रम का सूर्य अब निस्तेज हो गया है। उनके पौत्र बहादुर सिंह जी खण्डेला की प्रजा और शौर्य के प्रतीक शूरवीरों को त्याग कर कहीं भाग रहे हैं। प्रजा और वीर उनके इस कार्य से अत्यन्त विचलित, व्यथित और आतंकित हैं।

सुजान . [गरज कर] ऐसा नहीं हो सकता। रायसाल का रक्त इतना सफेद नहीं हो सकता।

नरपत : मैं आपके समक्ष अक्षरशः सत्य बोल रहा हूँ। यदि किसी ने खण्डेला की रक्षा का बीड़ा नहीं उठाया तो रायसाल की महिमा नष्ट हो जाएगी। अत्याचारी बहादुर खाँ नगर को नष्ट कर देगा। मंदिरों की जगह मस्जिदें बनवा देगा। निरीह प्रजा बेमौत मारी जाएगी।

सुजान : आप चिन्ता न करें। मेरी रगों में भी रायसाल का रक्त है। मैं भी उनका पोता हूं। मैं खण्डेला की रक्षा करूँगा। पधारिए।

यासीन : [उत्साह भरे स्वर में] इसमें क्या शक है। यह तो आपका फर्ज़ है।

सुजान : [वीर सिंह को सम्बोधित करते हुए] आपकी क्या राय है वीर सिंह जी ?

वीर सिंह : [कुछ सोचते हुए] आप इस झमेले न पड़ें तो अच्छा रहे। बहादुर सिंह जी पर बादशाह अत्यन्त कुपित हैं। आप उसकी विशाल सेना का सामना नहीं कर पाएंगे तथा अपना ही विनाश करवाएँगे।

यासीन : [मूछों पर ताव देकर] मैं वीर सिंह जी की बात नहीं मानूंगा। हालांकि मैं मुसलमान हूँ पर हमारे मज़हब में किसी दूसरे धर्म को मिटाने की बात नहीं लिखी है। किसी भी पाक घर को नापाक करना मज़हब की खिदमत में शुमार नहीं किया जा सकता। यह तंगदिली है। मज़हब की बेइज़्ज़ती। [चारों ओर देखकर] यदि बादशाह का सेनापति बहादुर खाँ खण्डेला के मंदरों को नष्ट करने आ रहा है तो मैं उसका विरोध करूँगा।

वीरसिंह : यह कोरी भावुकता है। यासीन, एक बार और सोच लो।

यासीन : खूब सोच लिया है भाई। और तुम्हारा कहना भी सही है कि यह जजबाती तूफ़ान है। मगर जजबात के बिना खुशी कहां? फिर मैं तो इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि हर मुसलमान को मन्दिर और हर हिन्दू को मस्जिद की रक्षा करनी चाहिए। तभी हम मज़हब के सही मायने सीख सकेंगे।

सुजान : (यासीन खाँ को गले लगाते हुए) और यही मेरे अन्तर्मन की आवाज है। मैं जीते जी यह अन्याय और अनर्थ नहीं होने दूंगा।

यासीन : ऐसा ही होना चाहिए। हम गिनती के हैं तो क्या हुआ? हम हैं सच्चे और बेकसूर। हमारा एक-एक बहादुर एक-एक सौ के लिए काफी है।

सुजान : (नरपतसिंह की ओर उन्मुख होते हुए) हम कल सुबह भगवान सूर्य की आराधना करके खण्डेला आएँगे। वहां के वीरों से कहिएगा कि रायसाल का गौरव सहजता से नहीं मिटेगा। (सब की ओर उन्मुख होकर) अच्छा अब आप लोग भी चलें। कल कूच की तैयारी करनी है।

[सब चले जाते हैं। मंच पर अकेला सुजानसिंह रह जाता है। तीन ताली बजाता है। (ड्योढ़ीदार का प्रवेश)

ड्योढ़ीदार : (आदरपूर्वक) आज्ञा, अन्नदाता?

सुजान : रावले में माँ जी को यह समाचार दो कि मैं उनसे मिलना चाहता हूं।

[थोड़ी देर तक मंच पर सुजान सिंह चिन्तित मुद्रा में चहल-कदमी करता है]

[ड्योढ़ीदार का पुनः प्रवेश ।]

ड्योढ़ीदार : पधारिये, अन्नदाता ।

सुजान : (मां के चरणों में मस्तक झुका कर) (गंभीर स्वर में) माँ साहब मुझे प्रातःकाल ही यहां से प्रस्थान करना होगा ।

मां : कहां ?

सुजान : खण्डेला ।

माँ : पर क्यों !

सुजान : मातृभूमि पर संकट के बादल छा गए हैं। पूर्वजों के खण्डेला को बादशाह की आज्ञा से बहादुर खाँ विनष्ट करने को आ रहा है ऐसी स्थिति में भोजराज के वंशधर को घर में बैठना शोभा नहीं देता । उसे तो शहनाइयों के मधुर स्वर का सम्मोहन छोड़ कर रणक्षेत्र में रणभेरियां सुनने को जाना ही होगा ।

माँ : आपने मुझे धर्म संकट में डाल दिया है । अभी तो वहू के हाथों की मेंहदी का रंग फीका नहीं पड़ा है ।

सुजान : वे मेंहदी के रंग की चिन्ता नहीं करेंगी । वे क्षत्राणी हैं। मेरे इस निर्णय पर तो उन्हें गर्व ही होगा ।

माँ : पर जब खण्डेलापति स्वयं अपने देश की रक्षा करने में असमर्थ हैं तो फिर आप कैसे सफल होंगे ?

सुजान : वे पथभ्रष्ट हो सकते हैं पर सारे कुटुम्ब का गौरव एक ही होता है। एक भाई अयोग्य निकल जाय तो दूसरा कैसे अपनी मान-मर्यादा की रक्षा नहीं करेगा ? करेगा माँ साहब ।

मां : (दीर्घ श्वास लेते हुए) मैं आपको युद्ध-प्रयाण के लिए मना नहीं कर सकती । हमारे गौरव-मण्डित इतिहास के पन्नों को धूल-धूसरित नहीं होने देना चाहिए । यह भी मैं चाहती हूं । मैं आपको कोई भी ऐसा आदेश नहीं देना चाहती जो मुझ जैसी क्षत्राणी को लज्जित करे, किन्तु

इसका अन्तिम निर्णय और प्रस्थान की आज्ञा नई दुल्हन देगी।

सुजान : ठीक है माँ साहब मैं उनसे आज्ञा ले लूंगा। मुझे विश्वास है कि महान् क्षत्राणियों की भांति वे मुझे युद्ध करने की आज्ञा दे देंगी। वैसे मैंने अपने वीरों से सुबह तक वहां पहुंचने की प्रार्थना कर दी है।

माँ : ईश्वर तुम्हें विजयश्री प्रदान करे। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।

[मां का मंच पर से हट जाना। सुजानसिंह द्वारा अपने निजी शयन कक्ष पर खट-खट की ध्वनि। द्वार का खुलना। सुजानसिंह की नवविवाहिता वधू विवाह के वस्त्रों में मंच पर प्रकट होती है। विवाह के वस्त्र केसरिया ओढ़ना, केसरिया घाघरा और केसरिया आँचली आभूषण आदि से लदी सजी-संवरी। वधू अपने पति के चरण स्पर्श करती है।]

सुजान : ठकुराणी जी आपको पाकर हर पुरुष अपने को परम सौभाग्यशाली समझेगा। किन्तु यह सौभाग्य क्षणिक है।

[ठकुराणी लज्जा से धरती की ओर देखती और फिर धीरे-धीरे उसकी प्रश्न सूचक मुद्रा बनती है।]

सुजान : बात यह है कि मुझे सूर्योदय के साथ ही रणभूमि के लिए प्रस्थान करना है। हमारी मातृभूमि खण्डेला पर बादशाह औरंगजेब की सेना ने आक्रमण कर दिया है। युद्धोन्मत्त वह सेना सर्वनाश का ताण्डव करेगी। हमारे काका साहब खण्डेला त्याग कर भाग गए हैं, पर हम अपने पूर्वजों की गरिमा को बिना संघर्ष किए नष्ट नहीं होने देंगे। हमारा रक्त और हमारा कर्त्तव्य हमें ललकार रहा है—प्रत्येक सच्चे वीर को अपनी मातृभूमि की रक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी चाहिए।

ठकुराणी : आप ठीक फरमाते हैं ठाकुर साहब। राजपूत का जन्म ही तलवार की धार पर चलने के लिए हुआ है। मैं आपको युद्धभूमि में प्रस्थान करने से मना नहीं करूँगी। मुझे तो गर्व ही होगा कि मैंने घर आते ही अपने पति को जन्मभूमि की रक्षार्थ विदा किया।

सुजान : आपको यह नहीं भूलना चाहिए ठकुराणी साहब कि हम मृत्यु के मुख में जा रहे हैं। हम अल्प हैं और वे असंख्य।

ठकुराणी : मृत्यु से क्षत्राणी नहीं डरती। मनुष्य जन्म से मृत्यु तो एक बार सुनिश्चित है ही ; फिर मातृभूमि की रक्षा करते करते प्राण दे देने से बढ़कर पुण्य कौन सा होगा ?

सुजान : आपसे मुझे यही आशा थी। अब मैं निश्चिन्त होकर युद्धभूमि में जाऊँगा।

(मंच पर अंधकार ! क्षण भर बाद प्रकाश। गुलाल उड़ाकर ऊषा काल का आभास दिया जा सकता है। नेपथ्य से युद्ध वाद्यों की ध्वनियाँ)। मंच पर मां, ठकुराणी, और यासीन दिखायी देते हैं।)

सुजान : (मां के चरणों में प्रणाम करते हुए) आज्ञा माँ साहब विलंब हो रहा है।

माँ : (आरती उतारते हुए) भगवान आपको विजयी बनाएँ।

(माँ पीछे हो जाती है, ठकुराणी आगे आती है। उसके एक हाथ में कटार है जिससे वह दूसरे हाथ के अँगूठे को चीर कर पति के मस्तक पर रक्त-तिलक करती है)

ठकुराणी : इन चूड़ियों की लाज रखना। हर घाव सीने में हो ताकि लोग जाने कि मेरे स्वामी ने पीठ नहीं दिखाई।

सुजान : हम पर विश्वास कीजिए ठकुराणी।

यासीन : [राजमाता के चरण-स्पर्श करते हुए] माँ, मुझे दुआ नहीं मिलेगी ? आशीर्वाद का तो मैं भी हकदार हूं।

माँ : क्यों नहीं ? हर राजमाता का हर सैनिक बेटा होता है। भगवान तुम्हें विजयी बनाए और तुम लोग अपनी मातृ-भूमि की रक्षा कर सको।

सैनिकों का खण्डेला की ओर प्रस्थान घोड़ों की टापों तथा रणभेरी का स्वर मंद होते-होते वायु में विलीन हो जाता है। मंच पर अंधकार छा जाता है। [कार्ड बोर्ड पर] खण्डेला के किले की अनुकृति। दो तीन भव्य मंदिर जिनके स्वर्ण कलश चमक रहे हैं। नेपथ्य से जनरव। चीख-पुकार मारो काटो की ध्वनियां] मंच पर सुजान सिंह, यासीन खाँ और नरपतिसिंह दिखाई देते हैं।

सुजान : [यासीन नरपति की ओर उन्मुख होकर] लगता हैं, बहादुर खाँ अपनी सेना लेकर आ पहुंचा है ।

[यासीन तथा नरपति दूर तक देखने का उपक्रम करते हैं। सामने बहादुर खाँ का एक सिपाही आता है उसके हाथ में सफेद ध्वज है जो संन्धिका प्रतीक है शत्रु-सैनिक आदरपूर्वक एक पत्र बढ़ाता है। सुजानसिंह हाथ बढ़ाकर पत्र लेता है। पढ़ता है।]

सुजान : हूं SS··· । [वीरसिंह तथा यासीन खां की ओर उन्मुख होते हुए] सेनापति हमसे सन्धि-वार्ता करना चाहते हैं । आपकी क्या राय है ?

यासीन : तो हम ही कौन-सा जंग चाहते हैं । हमें अमन पसंद है पर कोई हमारी आबरु की ओर आंख उठाकर देखने की जुर्रत करे तो हमें बर्दाश्त नहीं होता । ठीक है, बात करके देख लिया जाय । तिलों में कितना तेल है ।

सुजान : फिर आप और नरपतसिंह जी बात कर आयें ।

नरपत : जो आज्ञा ।

[नरपत और यासीन का सैनिक के साथ प्रस्थान । मंच के दूसरे सिरे से बहादुर खां का प्रकट होना ।]

बहादुर खाँ : (रुआब भरे स्वर में) हम चाहते हैं फिजूल खून खराबे से पेश्तर हालात पर बातचीत कर ली जाय। मैं सुलह चाहता हूं बशर्ते आप बादशाह सलामत की रिआया बनना पसंद करें और मंदिरों के सोने के कलश उतार कर हमें दे दें ।

नरपत : यह सम्भव नही है । सिपहसालार जी ! न तो आपके बादशाह की आधीनता हम स्वीकार कर सकते हैं और न ही ये कलश आपको मिल सकते हैं ।

बहादुर खाँ : (मूंछों पर ताव देते हुए)—क्यों ?

यासीन : इसलिए कि बहादुर इनसान ऐसी कोई भी सुलह नहीं करेगा जो उसे अपने ही लोगों की नजरों से गिरा दे। तुम्हारा बादशाह अपने मज़हब की खिदमत नहीं, बुरा

ही कर रहा है। हर मज़हब इन्सान और इन्सानियत की हिफाज़त करता है। अपनी अच्छाइयों और नेक नामियों से इन्सानों के दिलों को जीतता है। तलवारों ने कभी इन्सानों के दिलों में मुहब्बत पैदा नहीं की है।

बहादुरखाँ : हम अपनी बात का जबाब चाहते हैं। यह हमारे आलीज़ाह का हुक्म है।

यासीन : उन्हें कभी फुरसत से कहना कि मरहूम अकबर ने हिन्दू-मुसलमानों के बीच जिस मौहब्बत की रोशनी जलाई थी उसे वे अपनी तंगदिली से न बुझाएँ वरना आने वाला जमाना इन गलतियों को मुआफ नहीं करेगा।

बहादुरखाँ : [गरज कर] आप हमारी बात का जबाब दें। हमारे पास आपकी वाहियात दलीलों को सुनने का वक्त नहीं है।

नरपत : आपको कलश नहीं मिल सकते। हाँ अगर आप में हिम्मत हो तो युद्ध में हमारे मस्तक काट कर अपने बादशाह को सौंप दीजिए।

बहादुर खाँ : फिर तो हम सोने का कलश ही लेंगे।

यासीन . [क्रोधित होकर हाथ का छोटा सा मिट्टी कलश दिखाते हुए] मंदिरों के कलश आप उतार लेंगे? यदि आप लोगों में हिम्मत है तो इस मिट्टी के कलश को तोड़िए, देखिए कितना खून मांगता है यह।

(नरपत सिंह की ओर उन्मुख होकर) चलिए, नरपत सिंह जी। हम खण्डेला और उसके मन्दिरों की रक्षा करेंगे।

(बहादुर खां का पैर पटकते हुए क्रोध प्रकट करना तथा मंच की एक दिशा में प्रस्थान। ठीक विपरीत दिशा में नरपत सिंह तथा यासीन खां का प्रस्थान।)

(मंच पर अंधकार फिर प्रकाश। नेपथ्य से युद्धभूमि की 'मारो-काटो' की ध्वनियां रण वाद्यों का बजना, मटियाली गुलाल का उड़ना। वही मंदिर के बाहर का दृश्य। मंदिर के बाहर यासीन खाँ, सुजानसिह तथा नरपत सिंह मंदिर की रक्षा के लिए प्रस्तुत हैं। बहादुर खां का अपने कुछ सैनिकों के साथ घोड़े पर सवार होकर वहां आगमन। दोनों दलों में युद्ध। नरपतसिंह का मर कर

तथा यासीन खां का बेहोश होकर भूमि पर गिरना। इस असहाय स्थिति का लाभ उठा कर बहादुर खाँ द्वारा अपने सैनिकों को आदेश देना।)

बहादुर खाँ : ठाकुर साहब की गरदन काट कर हमारे सामने लाई जाय।

(दो सैनिकों तथा सुजान सिंह का युद्ध) अंत में ठाकुर गिर पड़ते हैं।

बहादुर खाँ : (ललकार कर) हमें ठाकुर साहब की गरदन चाहिए।

(प्रतिपक्षी सैनिक द्वारा सुजान सिंह की गर्दन पर वार। उसका मस्तक कट जाता है। कटे हुए मस्तष्क को लेकर भागने से पूर्व ही घायल यासीन खाँ को होश आना। एक ही बार में दोनों प्रतिपक्षी सैनिकों को मार गिराना तथा मस्तक को अपने हाथों से उठा लेना।

यासीन : बहादुर खाँ, यह एक बहादुर इन्सान का माथा है। तुम इसे ठोकर नहीं मार सकते। यह तो काबिले इबादत है। मैं इसे अपनी भाभीजान को सौंपूंगा। यह उनकी अमानत है। तुममें अगर ताकत हो तो मुझे रोक लो। जाने से पहले मैं कहे जाता हूं अपने बादशाह सलामत से कह देना कि इस सोने के लिए तुमने कितनी माताओं और बहनों की तकदीर पोंछ दी है। ये मंदिर और मस्जिदें यही रहेंगी। इन्सान की मोहब्बत कभी नहीं मरेगी। यह धरती से कभी रुखसत नहीं होगी। रुखसत हो जाओगे तुम इस फानी दुनियाँ से। इन्सानियत का दिया इन कमजोर झोंको से नहीं बुझा करता बहादुर खां। याद रखो धरती को न आज तक कोई बांट सका है न आसमान में दरारें डाली गई हैं। यह हमारी आँखों का धोखा है कि हम ऐसा सोचते हैं। इन्सान इन्सान एक हैं। इनसानी मोहब्बत की रोशनी का समन्दर न कभी सूखा है न सूखेगा। इन्सानियत जिन्दाबाद। (यासीन तेज गति से मंच की एक ओर भागता है। अलविदा।)

बहादुर खाँ : (चीख कर) गिरफ्तार कर लो इस काफिर को। (चारों ओर देख कर) कोई नहीं है मेरा हुक्म बजा लाने वाला। अफ़सोस। (दूसरी दिशा में चल देता है।)

[मंच पर पूर्ण अंधकार]

—भगवती लाल व्यास

———

सहारा

पात्र--सूत्रधार, चिड़िया, कौआ, बन्दर, साँप, बिल्ली, और सपेरा।

दृश्य

एक घना सा सुन्दर वन है। चारों तरफ हरियाली ही हरियाली है। लम्बी-लम्बी घास है। घने घने वृक्ष हैं। ऊंचे-ऊंचे पहाड़ हैं और है एक नदिया की धारा। इसी वातावरण में एक चिड़िया है। वह फुर-फुर करती चूं-चूं करती नील गगन में उड़ रही है। एक बन्दर है वह डालियों में छिपा खों-खों कर रहा है। पास ही एक डाल पर एक कागा है काँव-काँव करता है और यह सब कुछ देख रहा है। ऊंचा फन करे हुए एक साँप।

सूत्रधार

एक गगन था नीला,
नीचे थी बसती हरियाली।
ऊँचे-ऊँचे पेड़ वहाँ थे,
मस्त हवा बहती मतवाली।
बरगद का एक पेड़ पुराना,
हरी भरी थी उसकी डाली।
उस डाली पर गाती रहती,
एक सलोनी चिड़िया काली।
नाच दिखाता खों खों करता,
बन्दर की थी शान निराली।
डाल डाल पर उड़ने वाला,
कौं कौं करता कौआ काला।
और पेड़ की जड़ खंडहर में,
साँप एक रहता मतवाला।
चारों में थी खूब दोस्ती,
चारों का था साथ निराला।

गुड़ की ढेली चिड़िया लाती,
दूध मलाई कौग्रा लाता।
चावल लेकर बन्दर ग्राता।
साँप मजे से खीर बनाता।
मिल जुल कर के फिर वे खाते।
हंसते जाते गाते जाते।
दु:ख सुख में वे हाथ बंटाते,
दु:ख सुख में वे साथ निभाते।
इत उत चिड़िया उड़ती रहती,
गाती रहती तिनके लाती।
डाली पर वह उन्हें सजाती,
इसी तरह वह नीड़ बनाती।
धीरे धीरे बीत गये दिन,
सुबह हुई फिर एक सुहानी।
जब सबने यह शोर मचाया,
खबर सुनो भई एक लुभानी।

बन्दर, कौग्रा, साँप :

लो चिड़िया के ग्राए ग्रंडे।
लो चिड़िया के ग्राए ग्रंडे।
फहराग्रो खुशियों के झंडे।
फहराग्रो खुशियों के झंडे

सूत्रधार :

सोच रही थी चिड़िया मन में

चिड़िया :

मैं तो जाती रहती बन में,
मैं तो जाती रहती दिन में।
उड़ते रहते दिन भर पक्षी।
ग्राते जाते रहते पक्षी।
मेरे ग्रंडों की रखवाली,
कौन करेगा चौकीदारी।

सूत्रधार :

चारों ने फिर करी सलाह,
और निकाली ऐसी राह ।
सबने बांधी बारी बारी,
सब मिल करते चौकीदारी ।
रहती थी फिर उस जंगल में,
मोटी सी एक बिल्ली काली ।
अवसर देखा दांव लगाए,
ताक लगाए आंख गड़ाए ।
अंडों को चट कर जाने को,
चुपके चुपके पांव बढ़ाये ।
लेकिन—कौआ छिप कर देख रहा था ।

दृश्य :

बिल्ली दबे पांव अंडों की ओर बढ़ रही है। कौए ने यह देख कर शोर मचाना शुरू कर दिया है। वह एक डाल से दूसरी डाल पर जाता है । उधर बन्दर भी यह शोर सुनकर खों खों करता बिल्ली की तरफ लपकता है । बिल्ली जान बचाकर भागती है। इतने में चिड़िया भी वहां उड़ती हुई आ जाती है।

सूत्रधार :

एक दिन ऐसी बात हुई जब,
सभी गये थे खाना लाने ।
बैठा था बस फन फैलाए,
सांप वहाँ पर निपट अकेला ।
सोच रहा था अपने मन में ।

सांप :

आज बड़ा बढ़िया मौका है,
कौन यहाँ पर देख रहा है ।
एक उठा कर खा लेता हूँ,
इतने तो हैं अंडे प्यारे ।

सूत्रधार :

यौंही डरते डरते उसने,
लालच के आकर के बस में।
हिम्मत करके खा ही डाला,
इक अंडा वह कोने वाला।

दृश्य :

सांप एक अंडा खाकर झपट कर अपने बिल की ओर भाग रहा है। तभी नील गगन में उड़ती चिड़िया आती है।

सूत्रधार :

इसी समय चिड़िया भी आई,
लौट के आये बन्दर भाई।
उड़ता उड़ता कौआ आया,
चिड़िया को तब रोते पाया।

चिड़िया :

अंडे मेरे पांच नहीं हैं।
अंडे मेरे पांच नहीं हैं।
अंडे मेरे पांच नहीं हैं।
सांप कहाँ है सांप कहा है,
मेरा अंडा एक कहां है।

सूत्रधार :

शोर सुना तब बिल से आया।
झूठ मूठ का शोक मनाया।

सांप :

मैं तो बिल में अभी गया था,
दिन भर तो सब ठीक गया था।
बिल्ली ही वह आई होगी,
सचमुच मैं हूँ इसका दोषी।

भाई कागा, चिड़िया, बन्दर,
मारो मुझ को तुम सब मिल कर ।
मैं ना जाता बिल के अन्दर,
तो यह गलती कैसे होती ?

सूत्रधार :

चिड़िया थी वो बिलकुल भोली,
दुखी देख सांप से बोली ।

चिड़िया :

होनी थी सो होकर बीती,
नहीं तुम्हारी इसमें गलती ।
दुख तो मुझ को भी होता है,
भाग्य से किसका बस चलता है ।
आओ अब सों जायें जाकर ।

सूत्रधार :

एक सवेरे बन में आया,
बीन बजाता एक संपेरा ।
बीन बजाता देख रहा था,
अपने मन में सोच रहा था ।

सपेरा :

मिल जाये यदि साँप दो गजा,
आ जाये फिर बहुत मजा ।

सूत्रधार :

चलते चलते उसने देखा,
पेड़ों के नीचे बैठा था ।
फन फैलाये सांप निराला,
लम्बा लम्बा काला काला ।
झटपट उसने बीन बजाई,
और निकाली दूध मलाई ।

आज वहाँ पर चिड़िया ही थी,
नीचे सब कुछ देख रही थी।
पीने को वह ज्यों ही आया,
सहसा उसने शोर मचाया।

चिड़िया :

खबरदार तुम दूध न पीना !
खबरदार तुम दूध न पीना !

सूत्रधार :

लालच में था वह भरमाया,
आगा पीछा समझ न पाया।

दृश्य :

सपेरा बीन बजाता ताक में बैठा है। वह सांप को मस्ती से गर्दन हिलाते हुए देख रहा है। उसने झट से सांप की गर्दन को पकड़ा और टोकरी का ढक्कन खोला और फौरन बन्द करके बैंगी अपने कंधों पर रख कर बीन बजाता हुआ जंगल में आगे की ओर चल पड़ता है।

सूत्रधार :

चिड़िया ने सब देखा हाल,
वह दुख से हो गई बहुत बेहाल।
ढूँढ ढूँढ कर सबको लाई,
उनको सारी बात बताई।
और फिर—सबने मिलकर सलाह बनाई।

दृश्य :

चिड़िया सपेरे के आगे आगे उड़ती जाती है और कुछ कदम आगे जाकर जमीन पर गिर जाती है। सपेरा अपनी बीन रोककर बैंगी नीचे रखता है और चिड़िया को उठाने के लिये आगे बढ़ने को है तभी कौआ कांव कांव करता आता है और उसकी पगड़ी पर चोंच मारता है। अब सपेरा अपनी पगड़ी को संभालता है। पीछे

से बन्दर पेड़ से उतर कर आता है। वह डलिया का ढक्कन खोलता है। सांप रेंगता हुआ उसमें से फौरन भाग जाता है। बन्दर डलिया का ढक्कन बन्द करके पेड़ पर चढ़ जाता है। उधर सपेरा धरती पर गिरी चिड़िया को उठाने को फिर बढ़ता है। पर चिड़िया झट से उड़ जाती है।

सूत्रधार:

किन्तु सपेरा ख़ुश था मन में
सांप तो बन्द है इस झोली में
उधर दोस्त वे हंसे ठठा कर,
सांप को बन्धन से छुड़वा कर
पर सांप को पश्चाताप बहुत था,
शर्म से नीचे आंख किये था
क्यों..................?
बच्चों। तुम बतला सकते हो क्यों ?

—हृदय नारायण सेठ

त्यौहार का दिन

[श्री विष्णु प्रभाकर की कहानी पर आधारित नाट्य रूपान्तर]

अहमद : मुस्लिम बालक
फातिमा : अहमद की मां
मुन्नू मियाँ : अहमद की गली में रहने वाला—अहमद का एक दोस्त
दिलीप : हिन्दू बालक
शीला : दिलीप की माँ
एक बुढ़िया : दिलीप की दादी
स्थान : एक गली—तीन से चार घर

पहला दृश्य

[पर्दा उठता है]

स्थान : अहमद के घर का एक कमरा।

फातिमा : (हाँफते हाँफते) कहाँ हो अहमद। अभी तक सो रहे हो मेरे बच्चे। कितना दिन चढ़ आया? तू दूध लेने नहीं गया।

अहमद : (आँखें मलते हुए) नहीं अम्मी (सिर हिलाकर)।

[अहमद कमरे के बाहर चला जाता है]

फातिमा : (अपने पति के चित्र की ओर देखकर)

पारसाल अहमद का बाप जिन्दा था तो सारे घर में फुलवाड़ी खिली थी। लेकिन दुनिया आखिर दुनिया है। यहाँ जिन्दगी की बगल में मौत सोती है। काल के कठोर हाथों से कोई नहीं बच सकता।

[आँखों से आँसू पोंछती हुई कमरे के एक कोने में झुक स्वगत कहती है।]

फातिमा : मैं कितनी बुरी हूँ, साल का त्यौहार आया और मेरा बच्चा इस तरह मोहताज ! बेबस बैठा है। (सीधे खड़े होकर) नहीं। नहीं आज ईद मनेगी ज़रूर मनेगी। अरे अहमद। फिर कहाँ चला गया।

अहमद : आया अम्मी लाओ बाल्टी तो लाओ।

फातिमा : (बाल्टी देती हुई) यह ले, तू जल्दी जा कर दूध ले आ। मैं तब तक तेरे कपड़े निकालती हूँ।

अहमद : अम्मी, मैं आज कुर्ता-पायजामा और अचकन पहनूंगा।

फातिमा : बेटा वही पहनना।

[अहमद जाने लगता है फिर वापिस मुड़ता है]

अहमद : और हाँ अम्मी। मैं यह सितारों वाली टोपी पहनूंगा जो पार साल अब्बा ने ईद के मेले में खरीद कर दी थी।

फातिमा : मेरे बच्चे जाओ पहले दूध तो ले आओ।

[अहमद ने एक बार फिर अपनी अम्मी को देखा और बाल्टी उठा कर बाहर चला गया। वह जल्दी-जल्दी जाता है कि सहसा मुन्नू मियाँ से टकरा जाता है]

मुन्नू मियाँ : अरे। इतनी जल्दी क्या है ? तुम क्या दूध लेने अब जा रहे हो। अब तक कहाँ सो रहे थे, अब तो दूध बँट चुका है अहमद मियाँ। अब वहाँ जा कर क्या करोगे ?

अहमद : सच कहते हो मुन्नू मियाँ। लेकिन आज तो माँ ने कहा है कि दूध की बहुत आवश्यकता है। अरे तुम तो जानते ही हो कि आज ईद है।

मुन्नू मियाँ : तो इसका मतलब तो यह हुआ कि तुम्हारे घर सेवैयां नहीं बनेंगी।

अहमद : मुन्नू मियाँ, क्या तुम्हारे घर में थोड़ा सा दूध मिल जाएगा।

मुन्नू मियाँ : अहमद मियाँ, हमारे घर में दूध रखा तो है पर अम्मी जी देंगी नहीं। अब्बा की चाय के लिए रखा है।

[अहमद आगे बढ़ता है]

(अहमद का मित्र दिलीप अपने दरवाजे से बाहर आता है।)

दिलीप : अहमद मियाँ कहाँ जा रहे हो (उसकी बाल्टी की ओर देखकर) अरे! तेरी तो बाल्टी खाली है! क्या आज दूध नहीं मिला? तू अब तक कहाँ था?

अहमद : (भरी हुई आवाज़ में) अम्मी बीमार हैं, मुझे कुछ देर हो गई।

दिलीप : तो दूध बिल्कुल नहीं है?

अहमद : (सिर हिलाकर) ना।

दिलीप : अच्छा अहमद। तू चिन्ता मत कर। तू यहीं ठहर। मैं अभी माँ जी से पूछता हूं। बस पलक झपकते ही मैं आया। (दिलीप चुटकी मार कर अन्दर जाता है) माँ के पास खड़ा होता है।

दिलीप : माँ जी, कुछ दूध है?

माँ : हाँ है। तेरे और मुन्नू के लिए है। तू पिएगा।

दिलीप : हाँ माँ मेरा हिस्सा दूध मुझे दे दीजिए।

माँ : यह लो गिलास।

[माँ दूध का गिलास दिलीप के हाथ में देकर कमरे से चली जाती है]

दिलीप : (हाथ में दूध का गिलास पकड़ कर चुपके से) यह लो अहमद। कर अपनी बाल्टी आगे। जल्दी कर।

अहमद : दिलीप, इसके लिए मैं तुम्हारा कितना शुक्रिया अदा करूँ। सचमुच तुमने मेरी मदद की।

[खुशी खुशी घर की ओर बढ़ता है—कहता जाता है आज तो सवैयाँ बनेंगी। अहा।]

(दूसरा दृश्य)

[अहमद का घर]

अहमद : (खुशी खुशी) कहाँ हो अम्मी। मैं दूध ले आया।

फातिमा : (बिस्तर से धीरे-धीरे उठकर खुशी से) आ गए मेरे बच्चे, कहाँ से दूध लाया है?

[उस के कन्धे पर हाथ रख कर]

अहमद : अम्मी, बहुत देर हो गयी थी। सब दूध बँट चुका था, लेकिन दिलीप ने अपनी माँ से अपने हिस्से का दूध लेकर मुझे दे दिया।
अच्छा अम्मी दूध थोड़ा तो नहीं है।

फातिमा : बहुत है मेरे बेटे। इतना ही बहुत है।

अहमद : अम्मों, मेरे दोस्त दिलीप ने आज मेरी कितनी मदद की है।

फातिमा : (गद्‌गद् होकर) खुदा उस का भला करे। उस ने गरीब की मदद की है।

[फातिमा सेवैंयाँ बनाने में लग जाती है—उसके हाथ में कड़ाही है]

फातिमा : जाओ अहमद। जल्दी कपड़े बदल लो और ईद का मेला देख आओ।

[नेपथ्य से—कुछ शोर गुल]

मुन्नू मियाँ : (घर से बाहर आकर) हमीद मियां अहमद मियाँ दिलीप भाई। कहाँ छिप गए। बाहर आओ। चलो चलें ईद का मेला देखने।

फातिमा : (अहमद को देखकर) मेरे बच्चे। तुम हो गये तैयार। देखो बाहर तुम्हारा दोस्त तुम्हें बुला रहा है। यह लो पाँच रुपये। जो जी में आये ईद के मेले से खरीद लेना।

[नेपथ्य से]

[मुन्नू मियाँ—हमीद मियाँ से]

मुन्नू मियाँ : अरे दोस्त तुम क्या खरीदोगे ईद के मेले से। भई मैं तो अपने छोटे भाई के लिए लकड़ी का घोड़ा खरीदूंगा और तुम……

[रंगमंच पर]

अहमद : माँ आज मैं मेला देखने नहीं जाऊँगा। आप की तबियत

ठीक नहीं है। मैं आप के साथ घर का काम काज करूँगा।

फातिमा : (सेवैयाँ का बर्तन अहमद के सामने रखती हुई) यह लो सेवैयाँ तो हो गईं तैयार।

अहमद : अहा ? माँ गरम-गरम सेवैयाँ कितनी उम्दा लग रही हैं।

फातिमा : मेरे बच्चे,जा कटोरा ले आ और खाला के घर सेवैयाँ दे आ। फिर मामू के घर जाना और फिर···

अहमद : क्या सब के घर देते हैं (एक ही कटोरा रखता है)

फातिमा : हाँ बेटा। वे भी तो हमें भेजेंगे।

[अहमद सेवैयाँ का कटोरा माँ के हाथ में देता है। माँ उसमें सेवैयाँ भरती है और उसे रूमाल से ढक देती है।)

[अहमद दरवाजे तक जा कर फिर वापिस घर के अन्दर आ जाता है]

अहमद : लेकिन अम्मी। सबसे पहले तो सेवैयाँ मुझे दिलीप के घर देनी चाहिए। उसने ही तो मुझे अपने हिस्से का दूध दिया था।

फातिमा : (खुशी से) हाँ बेटा क्यों नहीं। जाओ दिलीप के घर दे आओ।

(अहमद हाथ में कटोरा पकड़ कर गली में जाता है। पीछे से मुन्नू मियाँ उसे आवाज़ देता है)

मुन्नू मियाँ : अहमद मियाँ तुम। क्यों ईद का मेला देखने नहीं जाओगे।

(मुन्नू मियाँ अहमद के कटोरे की ओर देखता है और आगे की ओर झुक कर————वाह क्या मज़ेदार खुशबू है। सेवैयां हैं। सेवैयां मेरे घर ले जा रहे हो।)

(मुन्नू मियां जीभ बाहर निकाल कर—लार-सी टपकने लगती है और अहमद के पीछे पीछे चलने लगता है। अहमद चुपचाप मुन्नू मियां के घर केआगे से गुजर जाता है)

वह दिलीप के घर का दरवाजा खटखटाता है। अन्दर से आवाज़ आती है।

दिलीप : कौन। (दरवाजा खोलता है) अरे अहमद मियाँ तुम। आओ, आओ अन्दर आओ।

अहमद : दिलीप भैया। मैं ईद की सेवैयाँ लाया हूँ।

दिलीप : मैं सोच रहा हूं कि मजेदार खुशबू कहाँ से आ रही है। अच्छा, तुम बैठो तो, मैं अपनी माँ जी को बुलाता हूं। माँ जी, माँ जी।

दिलीप की माँ : क्या हुआ दिलीप।

दिलीप : देखो माँ मेरा दोस्त अहमद आया है। ईद की सेवैयां लाया है।

अहमद : हाँ चाची। ईद के दिन हम सब सगे-सम्बन्धी, और मित्रों को सेवैयाँ बांटते हैं।

[कटोरा आगे करता हुआ]

दिलीप की माँ : नहीं दिलीप हम अहमद की सेवैयाँ नहीं लेंगे। वह मुसलमान है।

दिलीप : माँ, ऐसा क्यों कह रही हो ?

माँ : अहमद मुसलमान है इससे हमारा ईमान बिगड़ता है।
[इतने में दिलीप की बूढ़ी दादी—हाथ में माला लिए हुए—

बुढ़ियां : राम-राम। राम-राम-राम।

दिलीप : माँ ईमान क्या होता है ? यह कोई मशीन है कि हाथ लगाते ही बिगड़ जाती है। आप जानती हैं अहमद मेरा दोस्त है। मैं उसको नाराज नहीं करना चाहता।
(बुढ़िया के राम, राम की आवाज क्रोध पूर्ण होती है और वह दिलीप की माँ की ओर क्रोधपूर्ण दृष्टि से देखती है)

दिलीप : माँ। इस बात को क्यों नहीं समझती कि अहमद मेरा दोस्त है। इस संसार में हमें सब को एक समान समझना चाहिए। जानती हो मां, राजा राम मोहन राय ने क्या कहा है—

'गौएँ भिन्न रंगों की होती हैं किन्तु दूध सबका सफेद होता है। इसी प्रकार संसार में कितने ही धर्म, ग्रंथ और

मत हैं परन्तु सब हमें यही सिखाते हैं कि हम सब एक ही भगवान के बनाए हुए हैं।

दिलीप की माँ : कुछ भी हो मैं तो अहमद की सेवैयां नहीं लूंगी।

दिलीप : लाओ अहमद। मुझे दो सेवैयां का कटोरा।

(दिलीप कटोरे को अपने हाथ में लेता है और उस की माँ उस कटोरे को दिलीप के हाथ से छीनना चाहती है—दोनों में छीना-झपटी होती है)

माँ : मैं कहती हूं दे दो वापिस इस कटोरे को।

(बुढ़िया की राम राम की आवाज तेज होती है)

दिलीप : नहीं छोड़ूंगा। नहीं छोड़ूंगा।

मां : नहीं छोड़ोगे ?

(एक ज़ोर से झटका लगता है। थोड़ी दूर पर अहमद खड़ा देखता है—उस की आँखों में आँसू हैं। सहसा दिलीप के हाथ से कटोरा जमीन पर गिर जातां है सेवैयां सारी बिखर जाती हैं।)

दिलीप : (आवेश भरे कंठ से) यह तुमने क्या किया माँ ?

अहमद : (भरी आवाज में) अब मैं किसी और के यहाँ सेवैयाँ देने नहीं जाऊँगा जब कि मेरे दोस्त दिलीप, जिसने अपने हिस्से का दूध मुझे दिया था, उसने सेवैयां लेनें से इन्कार कर दिया।

(अहमद यह कह कर चला जाता है)

(इधर दिलीप जमीन पर बिखरी सेवैयों को हाथ से कटोरे में धीरे-धीरे डालता है—उसकी आंखों में आंसू हैं।)
बुढ़िया के राम-राम-राम की आवाज़ धीमी होती जाती है।

[रोशनी धीमी होती है]

[पर्दा गिरता है] नाट्य रूपांतर-स्वर्णरत्ना

रिश्ता

(डॉ० नरेश की कहानी पर आधारित नाट्य रूपांतर)

पात्र :

तीन बच्चे (रफ़ीक, अजिम और सादिक)
राजीव
अल्ताफ
एक स्त्री (आजिम की अम्मा)

(रामगली, लाहौर की नुक्कड़ पर बना चौबारा। राजीव के बचपन के मित्र अल्ताफ का एक कमरा जिसमें हिन्दुस्तान से आया राजीव ठहरा हुआ है। चौबारे की खिड़की में खड़े होकर राजीव आस-पास रहने वाले लोगों को देख रहा है। नीचे खड़े तीन बच्चे कानाफूसी कर रहे हैं)

रफ़ीक : (राजीव की ओर इशारा करते हुए) कसम खुदा की। मानो भी, हिन्दू हैं।

आजिम : यार, शक्ल-सूरत से तो नहीं लगता।

सादिक : हो सकता है, भेस बदलकर आया हो।

आजिम : यार रफ़ीक तुमसे कहा किसने कि हिन्दू है।

रफ़ीक : सीदू बता रहा था यार।

आजिम : उसे किसने बताया ?

रफ़ीक : तीफू चाचा ने।

आजिम : सच ?

रफ़ीक : अल्ला क़सम।

सादिक : (बुजुर्गों की तरह कहते हुए) तब तो बड़ा बुरा होगा। अल्ला जाने किस-किस की जान पर बनेगी।

आजिम : (हैरानी से) मगर क्यों ?

रफ़ीक : क्यों क्या ? हिन्दू है, मुसलमानों को मारने-काटने आया है।

आज़िम : (मासूमियत से) क्या हिन्दू मारते-काटते हैं मुसलमानों को ?

रफ़ीक : (व्यंग्य से) नहीं पुचकारते हैं। अबे, इतना भी नहीं मालूम कि हिन्दू काफ़िर होता है। इसके तो साए से भी बचना चाहिए। मेरी अम्मा बता रही थी कि जब पाकिस्तान बना तो मेरे अब्बा को हिन्दुओं ने बेरहमी से कत्ल कर दिया था।

आजिम : मगर यह अकेला हिन्दू यहाँ क्या कर सकेगा ? यहां यो इतने मुसलमान हैं कि एक-एक हाथ भी दें तो इसकी हड्डी पसली एक कर दें।

(सब कुछ देख-सुन रहे राजीव के हाथ में पकड़ी एक किताब सहसा नीचे छूट जाती है। तीनों बच्चे सहम कर उधर देखते हैं और सरपट भाग जाते हैं)

राजीव : (स्वगत में) कितने प्यारे बच्चे हैं, मासूम, निष्पाप बिल्कुल निर्दोष मगर···अल्ला इन की उम्र-दराज़ करे।

(अल्ताफ़ सहसा कमरे में प्रवेश करते हुए)

अल्ताफ़ : किसी की उम्र-दराज़ करे ?

राजीव : तुम्हारी।

अल्ताफ़ : सो तो बहुत दराज़ है। चलो नाश्ता नहीं करना है क्या ?

राजीव : नहीं, पहले एक बात बताओ अल्ताफ़ भाई।

अल्ताफ़ : क्या, कौन-सी ?

राजीव : तुम्हें बचपन का वादा याद तो होगा। तुमने कहा था कि तुम पाकिस्तान से बराबर मुझसे मिलने हिन्दुस्तान आते रहोगे। तुम अपना वादा क्यों भूल गए थे ?

अल्ताफ़ : राजीव भाई, अब तुम्हें कैसे बताऊँ। दरअसल मुझे अपना वादा अच्छी तरह याद था लेकिन···

राजीव : लेकिन···लेकिन क्या ?

अल्ताफ़ : अब क्या छुपाऊँ तुम से मुझे अपने खाली हाथ होने का अहसास दबाए रहता था राजीव भाई। सौ रुपए की नौकरी में मैं लाख कोशिश करने के बावजूद भी इतना कुछ नहीं जुटा पाया कि खुशी-खुशी तुमसे मिलने हिन्दुस्तान आ सकता। शायद तुम्हें याद नहीं, तुम्हें मिलने आने के वादे के साथ-साथ मैंने एक और वादा भी किया था···एक और वादा भी किया था राजीव भाई।

(अल्ताफ का चेहरा ग़मगीन हो जाता है और वह नजरें झुका लेता है)

राजीव : (कुछ चिढ़ कर) कौन-सा वादा ? मुझे याद है वह वादा। यही न कि तुमने शादी में अपनी भाभी को नेकलेस सेट देने का वादा किया था। लेकिन अल्ताफ़ भाई, यह इतना जरूरी तो नहीं था जितना···

अल्ताफ़ : जरूरी था। नेकलेस सेट खरीदे बिना मैंने हिन्दुस्तान न जाने की कसम खा रखी थी। भाभी को दी हुई जबान पूरी किए बिना मैं कैसे चला आता। क्या कहती वह ! मैं ही जानता हूं राजीव भाई कि मैं तुमसे मिलने के लिए मछली की तरह तड़प रहा था लेकिन फिर भी लाचार था।

राजीव : जानता हूँ अल्ताफ़ कि तुम बचपन से ही बहुत जिद्दी हो। लेकिन अब तो तुम्हें यह अपना जिद्दीपन छोड़ देना चाहिए। देखो, मैं भी तो तुम्हारी तरह जिद कर सकता था कि जब अल्ताफ़ मुझसे मिलने हिन्दुस्तान नहीं आ सकता तो मैं ही उसे मिलने पाकिस्तान क्यों जाऊं। लेकिन नहीं, तुम्हारी मुहब्बत मुझे यहां खींच लाई मेरे दोस्त।

अल्ताफ़ : हाँ राजीव भाई, तुम सचमुच दरियादिल हो। मैं कभी-कभी सोचता था तुम मुझे भूल चुके होगे लेकिन नहीं, ऐसा सोचना मेरी नादानी थी। तुम शायद यकीन नहीं करोगे कि सुबह जब तुमने तांगे से उतर कर 'ओए तीफू' कह कर पुकारा तो मैं यकायक हड़बड़ा गया था। मुझे न अपनी आँखों पर यकीन हो रहा था न कानों पर। बहुत देर तक मेरी आँखों और जबान में कशमकश होती रही। जबान बहुत कुछ पूछने को तड़प रही थी और आँखें तब तक यह यकीन नहीं दिला पा रही थीं कि जो कुछ मैं देख रहा हूं, हकीकत है, या ख्वाब।

राजीव : हां अल्ताफ़ ऐसा ही होता है। (उसकी पीठ पर हाथ रखकर) चल उठ, नाश्ता करें। फिर तुम काम पर भी तो जावोगे तुम्हारी नौकरी भी कैसी है अल्ताफ़ कि तुम्हें एक दिन की छुट्टी भी नहीं मिल सकती और इतना सारा काम करने के बदले इनाम कुछ नहीं। वही महीने में एक सौ रुपल्ली। कितनी तकलीफ हुई मुझे तुम्हारे बारे में यह सुनकर। ऐसा कब तक चलेगा अल्ताफ़। तुम अपने लिए दूसरी नौकरी क्यों नहीं ढूंढते। काश, मैं तुम्हारे लिए कुछ कर सकता।

(दूसरी सुबह। अल्ताफ़ नौकरी पर चला जाता है। राजीव अपनी चारपाई पर लेटा कुछ सोच रहा है। पास से आ रही खुसर-पुसर की आवाज से वह चौंक जाता है। वह लेटे-लेटे देखता है, सीढ़ियों में आठ-दस बच्चे जमा हैं। उनमें वे तीनों बच्चे शामिल हैं)

रफ़ीक : आगे मत जाना अबे साले। वह सो रहा है।

सादिक : यार चाकू लाओ तो उसका काम ही तमाम कर दें।

रफ़ीक : नहीं बे। चाकू से उसका काम तमाम करना हमारे बस का नहीं है।

एक छोटा बच्चा : (तोतली आवाज में) अम तो दी दिथाओ हिन्दू तहाँ है।

आज़िम : अभी दिखाते हैं।

(राजीव दबे पाँव उठकर दरवाजे की ओट में खड़ा हो जाता है)

आज़िम ज्यों ही छोटे बच्चे को लेकर आगे बढ़ता है, राजीव उचक कर उसे पकड़ लेता है।

अबे भागो—पकड़ लिया—पकड़ लिया।

सब बच्चों का सम्मिलित स्वर। राजीव आजिम को उठाकर अंदर ले आता है।

राजीव : बेटे, तुमसे किसने कहा कि हम तुम्हें मारेंगे ?

आजिम : (आजिम बहुत घबराया हुआ है। उसकी आवाज नहीं निकलती)

राजीव : (उसके बालों में हाथ फेरता है) तुम्हारा नाम क्या है ?

आजिम : आज़िम।

राजीव : पढ़ते हो ?

आजिम : हाँ।

राजीव : कौन-सी क्लास में ?

आजिम : सातवीं में।

(राजीव उठकर मेज पर रखा बिस्कुट का पैकेट उठाकर उसके सामने रख देता है)

राजीव : लो बिस्कुट खाओ।

(आजिम राजीव के हाथ से बिस्कुट ले लेता है)

राजीव : खाओ ना। खाओ भी। (आजिम अपने दांतों से बिस्कुट को जरा-सा काट लेता है) मीठा है न।

आजिम : हाँ।

राजीव : तो खाओ। और भी लो। ये सब तुम्हारे लिए हैं।

(आज़िम की घबराहट खत्म-सी हो गई है। उसकी आवाज लौट आई है)

आजिम : अब आप मुझे मारेंगे ? काट कर खा जाएँगे ?

राजीव : क्या ? नहीं बेटे, हम तो तुम से प्यार करेंगे। तुमको बहुत सी चीजें लाकर देंगे। बहुत-सी कहानियाँ सुनाएँगे।

आजिम : सच——?

राजीव : और तो क्या झूठ।

आज़िम : तो फिर सादिक ऐसा क्यों कहता है ?

राजीव : उसे किसी ने बहका दिया होगा बेटा ।

आज़िम : तो क्या आप हिन्दू नहीं हैं ?

राजीव : तुम्हें क्या लगता हूँ ।

(सहसा बुर्के में बंद औरत दरवाजे में खड़ी है । बच्चे ने बुर्के को पहिचान लिया है]

आज़िम : आओ ना अम्मा ।

राजीव : आइए मोहतिरमा, तशरीफ़ लाइए ।

स्त्री : अलहम दो लिल्लाह । मुझे तो उन दर्दमारों ने डरा ही दिया था...
आप कब से यहां रह रहे हैं ?

राजीव : आप तशरीफ तो रखिए ना। मुझे यहाँ आए दो दिन हुए हैं ।

(राजीव ने स्त्री की ओर कुर्सी बढ़ा दी है । कुर्सी पर बैठकर उसने अपनी नकाब उलट दी है)

स्त्री : आप हिन्दुस्तान से आए हैं ?

राजीव : जी ।

स्त्री : वहाँ कहाँ रहते हैं आप ?

राजीव : लुधियाना में ।

स्त्री : क्या अब भी मुसलमान वहां रहते हैं ?

राजीव : जी मैं हिन्दू हूं ।

स्त्री : क्या...?

राजीव : जी ।

स्त्री : (विस्मय और आवेश में) तो क्या आप लुधियाना से ही आए हैं ?

राजीव : जी, सचमुच । घास मंडी में मेरा मकान है ।

स्त्री : हम लोग भी वहीं के रहने वाले हैं। घास मंडी से अगर सीधे निकल जायं तो आगे इस्लामिया स्कूल है ना। उसके बिल्कुल सामने हमारा मकान था। मकान के बाहर 'माशा अल्लाह' लिखा हुआ था। आपने देखा है वह मकान ?

राजीव : जी देखा है।

स्त्री : वहाँ अब कौन रहता है ?

राजीव : पाकिस्तान से गया हुआ एक हिन्दू।

स्त्री : उसने मकान का नक्शा ही बदल दिया होगा।

राजीव : नहीं, बहुत कुछ नहीं बदला है।

स्त्री : और वह चौड़ा बाजार, साबुन बाजार, मोधोपुरी, लक्कड़ बाजार, सब है ना ?

राजीव : वे कहाँ जाते ? गलियों-बाजारों में रहने वाले लोग हिजरत करते हैं, गलियाँ बाजार तो नहीं।

स्त्री : अल्लाह हो अकबर। मुझे क्या मालूम था कि आप यहाँ ठहरे हुए हैं। मुझे तो कसम अल्लाह की, उन नासमारों ने ऐसा डराया कि सब छोड़ छाड़ कर भाग आई।

राजीव : कहा होगा कि आज़िम को एक हिन्दू ने पकड़ लिया है और वह…

स्त्री : अल्लाह न करे। आप तो मेरे भाई निकले। हमारे घर आइए ना। आज़िम के अब्बा से भी मिलिए।

राजीव : जरूर आऊँगा।

(राजीव और अपनी अम्मां को बातों में मग्न देखकर आज़िम चारपाई से खिसक कर कमरे से बाहर निकल आता है। उसकी मां को बुलाकर लाए बच्चे अभी सीढ़ियों में हैं)

आज़िम : (ऊंची आवाज़ में) वह हिन्दू नहीं, मेरे मामा हैं।

रफ़ीक : कसम खाओ।

आज़िम : कसम कुरान की।

(स्त्री मुस्करा कर राजीव की ओर देखती है और दोनों हाथ जोड़ देती है)

(पट-परिवर्तन)

दिनेश थपलियाल

किसी से मत कहना

बीहड़ पथ। जंगल का रास्ता। राधाकृष्ण नामक एक ब्राह्मण जल्दी-जल्दी चलने के प्रयत्न में है।

राधाकृष्ण ; ओह ! कितना थक गया हूँ । पावों में कांटे चुभ गए हैं धोती तक फट गई है—कांटों से उलझ-उलझ कर। कुछ देर सुस्ता लूं। अब—आगे, एक दम भी चलने की हिम्मत नहीं रह गई ।

(सुस्ताने लगता है —बैठ जाता है। रात अंधेरी है। चन्द्रमा की चांदनी का हल्का-हल्का प्रकाश फैला है)

राधाकृष्ण : (स्वत: हां) जजमान ने ठीक कहा था (सिर पर हाथ मारते हुए) किस्मत ही खराब है। कहता था—रात होने वाली है । यहीं रुक जाओ। आगे रास्ता खराब है। मगर··· (बाघ के गुर्राने की आवाज़ सुनाई देती है)

राधाकृष्ण : अरे ! बाप रे ! इधर कहीं बाघ भी घूम रहा है। अब क्या होगा···सामने एक मकान है। मगर···वहाँ जाना क्या ठीक रहेगा ? नहीं-नहीं । बदलू ठठेरे के मकान में। ओह ! भूख भी तेज लग रही है। प्यास के मारे गला सूख रहा है। कोई सुनेगा तो—लोग कहेंगे कि एक हरिजन के मकान में पंडित राधाकृष्ण ठहरे।

(बाघ के गुर्राने की आवाज़ तेज हो जाती है)

(राधाकृष्ण एकदम भयभीत से खड़े हो जाते हैं)

राधाकृष्ण : (तेज भागते हुए) लगता है, एक नहीं कई बाघ हैं। जान

की रक्षा तो करनी ही होगी। बदलू ने भी गाँव से दूर, इस जंगल में मकान बनवाया, अच्छा ही किया।

(मकान के निकट पहुंचकर—कुछ शांत होता है।)

राधाकृष्ण ; बदलू। ओ—बदलू।

(कोई आवाज नहीं—सब शांत)

राधाकृष्ण : (व्यग्र स्वर में) बदलू। कहाँ मर गया है। सुनता क्यों नहीं। मैं हूँ राधाकृष्ण ! दरवाजा खोलो।

बदलू : (बाहर निकलते हुए) अरे पंडित जी—आप ! इस अंधेरी रात में। माफ करना। दरवाजा खोलने में देर हुई। दरअसल, इस जंगल के बीच, हम आसानी से दरवाजा नहीं खोलते, जब तक कि यकीन न हो जाए कि अपना ही आदमी है। चोर-डाकुओं का भय रहता है। मगर पंडित जी, आप यहाँ कैसे—इस अंधेरी रात में।

राधाकृष्ण : बदलू। क्या बताऊँ। मति मारी गई मेरी। लाहोटी गाँव में जजमान प्रतापसिंह के घर कथा थी। कथा बांच के अपने गांव जाना चाहता था। घरवाली की तबीयत खराब है। प्रतापसिंह रोक रहा था। कहता था—जंगल का रास्ता है। बाघ-शेर जंगली जानवरों का भय होगा। रुक जाओ।

बदलू : पंडित जी। रुक जाते। ठीक ही कहते थे प्रतापसिंह।

राधाकृष्ण : (उसांस भरकर) अरे बदलू ! क्या बताऊँ। घर में ब्राह्मणी बीमार है उसकी चिंता लगी हुई थी।

बदलू : पंडित जी आपने ठीक नहीं किया। रास्ते में कोई जंगली जानवर···अब—क्या फायदा हुआ। न आप गांव पहुंच सकते—अभी तीन मील दूर आपका गांव है और न आप प्रतापसिंह जी के घर ही रुके। आराम से रहते।

सुरती : (बदलू की पत्नी घर से बाहर) (जमीन में सिर नवाते हुए) पंडित जी पांवलागू। इतनी रात गए ?

राधाकृष्ण : आशीर्वाद सुरती। ठीक हो। भई बदलू—प्यास के मारे जान सूख रही है—पानी होगा। मुझे पानी पिलाओ।

आवाज़ तक नहीं निकल रही—प्यास के मारे।

बदलू और सुरती : (एक स्वर में) पानी !!

राधाकृष्ण : बदलू—पानी भी पिलाओ और मैं ठंड से बाहर अकड़ गया हूं। मुझे अन्दर आने दो। आग तापूंगा। कितनी कड़ाके की सर्दी पड़ रही है बाहर। पूस की यह रात।

बदलू और सुरती : मगर पंडित जी—हम ! (हकलाते हुए) हम—आप हमारे हाथ का पानी पीएंगे ! हम…हम तो अछूत हैं। आप हमें अछूत बताते हैं।

राधाकृष्ण : मैं प्यास के मारे मर रहा हूं और तुम…पहले पानी पिलाओ। फिर…। मुझे लगता है, ईश्वर ने इस जंगल में तुम्हें इसलिए बसाया कि कभी कोई ब्राह्मण प्यासा-भूखा भटकता आएगा और…सब ईश्वर की इच्छा है। आज मुझे ज्ञान प्राप्त हुआ है। पानी, अन्न, मनुष्य सब ईश्वर के बनाए हुए हैं—जल्दी करो। पानी दो…

बदलू : (झिझकते स्वर में) आइए पंडित जी। पहले पानी पियो। घर में इतना बिस्तरा नहीं है—पर आपका गुजारा हो जाएगा—अन्दर आइए।

[अन्दर पहुंचकर]

राधाकृष्ण : आह ! बदलू ! तुम न होते—सचमुच—आज मुझे बाघ खा जाता। लेकिन बदलू—मुझे भय लग रहा है। तुम्हारी कोठरी में मैं सुरक्षित जरूर हूं—मगर—कल लोग सुनेंगे तो क्या कहेंगे। खैर—कुछ भी कहें—मैं आज समझ गया हूं कि सभी मनुष्य एक हैं। भूख-प्यास सभी को लगती है। ये सारे भेद-भाव हम मनुष्यों के बनाए हुए हैं।

बदलू : महाराज—आज आप कैसी बातें कर रहे हैं। अभी आप आराम से सो जाएं।

राधाकृष्ण : बदलू—लेकिन कल तुम किसी से मत कहना कि मैं तुम्हारे घर ठहरा था। तुम्हारे हाथ का पानी पिया था रोटी खाई थी।

बदलू : बस महाराज—बस ! यह आप अचानक कैसे बदल गए अभी आप कैसी ज्ञान की बातें कर रहे थे। कुछ देर पहले आप सभी मनुष्यों को एक जैसा बता रहे थे। कहते थे कि पानी, अन्न, मनुष्य सब ईश्वर के बनाए हुए हैं। अब···

राधाकृष्ण : बदलू—तुम ठीक कहते हो। मैं अचानक ही बदल गया हूँ। मगर बदलू—तुम समझते नहीं। मैं अपनी अंतरात्मा से मानता हूं कि हम सब एक हैं। हमारी रगों में एक खून है। हमें एक जैसा ही शारीरिक कष्ट होता है। हमें भूख-प्यास एक जैसी लगती है। हमें भय और प्रसन्नता एक ही तरह से होती है। मगर देवी-देवताओं के बनाए हुए ये विधान, ये जातियां—यह सब क्यों हैं, कैसे हैं ? किसलिए बनाए गए हैं ? कुछ समझ नहीं आता। समाज की बात माननी पड़ती है।

(गनपत—बदलू का बड़ा बेटा—जो अभी तक रजाई में मुंह ढककर सो रहा था, और जो इसी वर्ष हाई-स्कूल में गया है—एकाएक उठ बैठता है।)

गनपत : पंडित जी। मेरे पिताजी इस बात का जवाब नहीं दे सकेंगे। वे पीढ़ी-दर-पीढ़ी ऊँची जाति के लोगों द्वारा कुचले और सताए गए हैं। उन्हें कुछ भी ज्ञान नहीं है। मगर हमारे अध्यापक सीताराम जी ने हमें बताया है कि ये जाति-पाति देवी-देवताओं ने नहीं बनाई है। बल्कि इसे बनाया है मनुष्यों ने, अपने स्वार्थ के लिए। हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई सभी एक हैं। हिन्दुओं की चार···

बदलू : बेटा ! तुम सो जाओ। पंडित जी को तंग मत करो।

गनपत : इसमें तंगी की क्या बात है। पंडित जी, हिन्दुओं में—ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र—ये चार जातियां इसलिए बनाई गईं थी कि समाज का काम ठीक तरह चलता रहे। ब्राम्हण, लोगों को पढ़ाते रहें और अध्ययन करें।

क्षत्रिय लड़ाई करें और देश की रक्षा करें। वैश्य व्यापार करें और समाज को उनकी जरूरत की वस्तुएँ देते रहें। शूद्र इन तीनों जातियों की सेवा करें तथा इनके लिए खेती के औजार, पहनने के कपड़े तथा अन्य आवश्यक चीजें तैयार करें। सभी का काम महत्वपूर्ण था। मगर समझ नहीं आता—शूद्र, याने हरिजन क्यों अछूत माना जाने लगा।

बदलू : मेरी समझ में गनपत की बातें नही आ रही हैं। पंडित जी आप समझ रहे हैं क्या ?

राधाकृष्ण : समझना क्या है ? गनपत ठीक कह रहा है। लेकिन फिर भी मैं डर रहा हूँ। कल क्या होगा ? बदलू—तुम किसी से मत कहना कि मैं तुम्हारे घर ठहरा था। पानी पिया था। खाना खाया था।

बदलू : पंडित जी। आप कैसी बातें करते हैं। मैं किसी से नहीं कहूँगा।

गनपत : (हंसता हुआ) पंडित जी, मैं भी किसी से नहीं कहूंगा। सिर्फ अपने मास्टर जी को बताऊंगा और अपने दोस्तों को। और उन्हें कह दूंगा कि किसी को मत बताना—कि पंडित जी हमारे घर ठहरे हुए थे। हमारे घर खाना खाया और पानी पिया।

बदलू : चुप रह बदमाश !

(तभी बाहर से आवाज आती है—बदलू ! ओ बदलू !)

बदलू : पंडित जी ! कोई आवाज दे रहा है। अब मुंह ढ़ांप कर लेट जाइए।

[पुनः वही आवाज—बदलू ! ओ बदलू !]

बदलू : कौन है ? कौन है भाई !

मानसिंह : भई, मैं हूँ मानसिंह !

बदलू : [स्वतः] आज यह कैसा संयोग है। पहले पंडित जी आए।

अब ठाकुर साहब आ गए हैं। कहीं·· मेरे पास न ठहरने की जगह, न···

मानसिंह : बदलू ! तुम बाहर क्यों नहीं आ रहे हो ? दरवाजा क्यों नहीं खोलते ।

बदलू : आ रहा हूँ—ठाकुर साहब ! आ रहा हूं···[बाहर आकर] कहिए ठाकुर साहब—इतनी रात में···

मानसिंह : भाई बदलू क्या बताऊँ। मैं अकेला नहीं हूँ। तीन आदमी और मेरे साथ हैं। आज जाने किस अशुभ घड़ी में शिकार खोजनें निकले—कि हाथ कुछ भी नहीं लगा और रात भी काफी हो गई। और···यह भयानक जंगल अंधेरी रात···

बदलू : ठाकुर साहब—आप भूखे होंगे। ठंड भी काफी पड़ रही है। आप···कहिए। मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ। गरीब आदमी हूं—उस पर अछूत ! हरिजन !

मानसिंह : हमें रहने—रात काटने के लिए तुम एक कमरा दे दो। सिर्फ रात काटनी है।

बदलू : ठाकुर साहब—सिर्फ दो कमरे हैं मेरे। एक में बीबी-बच्चे हैं और एक···

[कहते कहते बदलू रुक जाता है।]

मानसिंह : दूसरे में हम रह लेंगे। बाहर कड़ाके की सर्दी पड़ रही है।

बदलू : मगर···मगर··· [हकलाते हुए] मगर···

मानसिंह : क्यों—क्या बात है ?

बदलू : नहीं—कुछ भी बात नहीं है मगर···

मानसिंह : तुम चिंता मत करो बदलू। तुम अछूत कहे जाते हो न ! ये सब कहने की बातें हैं। तुम जानते हो—हमारी सरकार यह सब भेद-भाव मिटाना चाहती है। सभी लोग पवित्र हैं। भगवान के बेटे हैं। कोई भी जन्म से बड़ा और पवित्र नहीं हो जाता। कर्मों से मनुष्य पवित्र और महान बनता है।

बदलू : मगर ठाकुर साहब···

[एकाएक बदलू का लड़का गनपत बाहर आता है]

गनपत : ठाकुर साहब प्रणाम। मेरे पिताजी नहीं बताएँगे। दूसरे कमरे में पंडित राधाकृष्ण जी सोये हुए हैं। आप किसी से न कहना। उन्होंने हमारे घर रोटी भी खाई है और हमारे हाथ का पानी भी पिया है।

बदलू : [गुस्से से] ठहर हरामजादे ! बहुत बोलने लग गया है। इसीलिए तुझे पढ़ा-लिखा रहा हूं। जरा भी, इज्जत नहीं करता !

गनपत : पिताजी, पढ़ाई का ही तो यह प्रताप है, कि हमारी आंखें खुली हैं। आज तक हम अपने को हीन समझते रहे। हिन्दू मुसलमान को, मुसलमान हिन्दू को, सिक्ख इसाई को ईसाई सिक्ख को, अपने से अलग समझते रहे। यह अज्ञान है। हिन्दू भी अपने भाई हिन्दू को अलग नाम से पुकारता रहा। घृणा करता रहा—अब ऐसा नहीं होगा।

मानसिंह : बदलू –गनपत ठीक कहता है। आओ—पंडित जी को जगाएं।

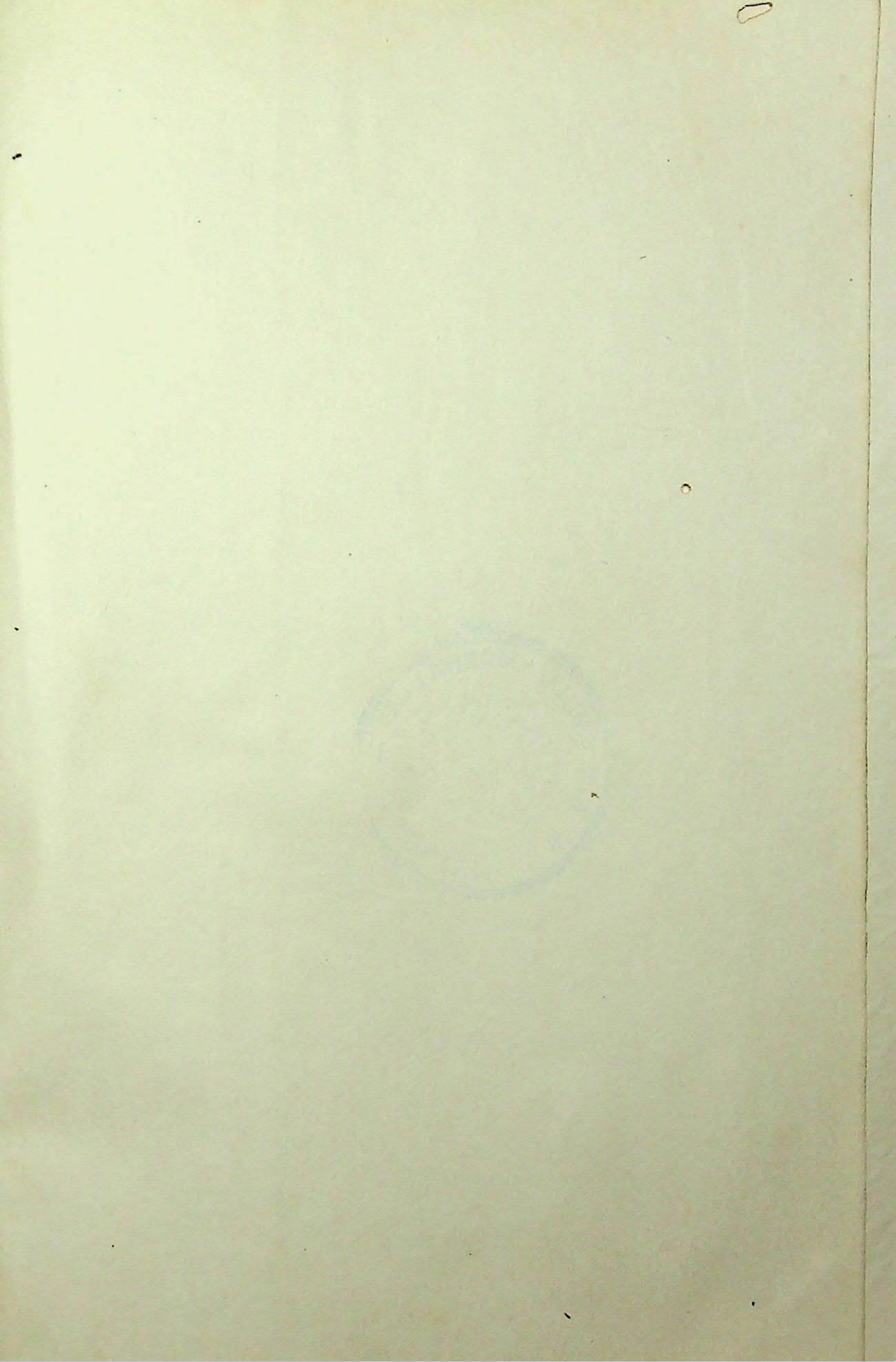
[अन्दर की तरफ जाते हुए]

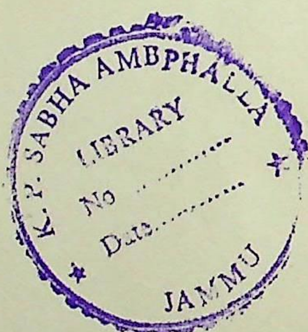
राधाकृष्ण : [जागने का बहाना करते हुए] आओ भाई—मानसिंह ठाकुर ! सुरजीत और कमल कांत—इतनी रात में कहाँ भटक रहे हो। मैं भी एक चक्कर में आ गया। रात यहीं काटनी पड़ी। मजबूरी थी। जान की रक्षा…

मानसिंह : पंडित जी ! हमने सब सुन लिया है। आपने क्या-क्या किया। [हंसते हुए] अबे बदलू ! इधर आ। उधर बच्चों के साथ क्यों दुबक गया है। हमारे लिए एक-एक कप गर्म चाय बना। और गनपत—कल सब से कहना—एक ठाकुर और ब्राम्हण हमारे घर ठहरे थे। कहेगा ?

[सबका सम्मिलित हँसी का स्वर]

—स्वरूप ढौंडियाल





भेद का भूत

देवी का प्रसाद

फिर लड़ेंगे

खिलौने

चौराहा

खून का रंग है एक समान

राजा का बाग

छात्रावास

स्वर्ग सम्मेलन

नया सूरज

वेटिंग रूम

बड़ी हवेली

रोशनी का समन्दर

सहारा

त्यौहार का दिन

रिश्ता

किसी से मत कहना



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसं
प्रशिक्षण परिष